
₹25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
क्रान्ति
अगस्त 2016

अक़ायद व इबादात पर हमारी अहम पुस्तकें

आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	50.00
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	70.00
एकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	35.00
एक ईश्वर की धारणा	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	40.00
परलोक की छाया में	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	90.00
पहेली जीवन की	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	12.00
रिसालत	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	45.00
लोगोः हिसाब का समय निकट आ चुका है	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
ख़ुदा की गुलामी इंसान की बुलन्दी	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
जीवन मृत्यु के पश्चात्	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
बनाव और बिगाड़	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
शान्ति-मार्ग	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
सोचने की बातें	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
प्यारी माँ के नाम इस्लामी संदेश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	07.00
मानव जीवन और परलोक	शोबा-ए-दावत	20.00
मुक्ति-मार्ग	इनामुर्रहमान ख़ाँ	08.00
मौत के बाद क्या?	डॉ० शाहिद अली	10.00
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल इस्लाम	60.00
सत्य की खोज	मौलाना वहीदुद्दीन खाँ	16.00
नबी करीम (सल्ल०) की दुआएँ (पाकेट साइज़)	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	60.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	खुर्रम मुराद	22.00
रोज़ा और उसका असली मक़्सद	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
इबादत	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम में पाकी और सफाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	20.00
नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
इमान की कसौटी	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
खुतबाते हरम	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	12.00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 26 अंक 2 अगस्त 2016

"जिस दिन वे उसकी ओर पलटेंगे, तो जो कुछ उन्होंने किया होगा वह उन्हें बता देगा। अल्लाह तो हर चीज़ को जानता है।

–क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : www.kanti.in

चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल



उम्र यूं ही गुज़र न जाए कहीं
रायगां[1] ये सफ़र न जाए कहीं

पेंक दीजे उतार कर ख़ुद ही
ताज के साथ सर न जाए कहीं

वार मुज़्दी[2] पे हो तो कारी[3] हो
चोट खाकर बिफर न जाए कहीं

पहले बेचारे पर सितम तोड़ा
अब ये डर है कि मर न जाए कहीं

किसने गुल कर दिये गुलों के चिराग़
शक तेरे हुस्न पर न जाए कहीं

दिल को हम मान लें सआदतमन्द[4]
बे-इजाज़त[5] अमर न जाए कहीं

एक चेहरे पे अनगिनत चेहरे
एतिबारे-नज़र[6] न जाए कहीं

मेरे दुश्मन के वार को रोको
मुझ पे एहसान कर न जाए कहीं

कारोबारी मुशाइरों में 'हफ़ीज़'
आबरूए-हुनर[7] न जाए कहीं

हफ़ीज़ मेरठी

1. बेकार 2. हानिकारक, कष्टदायक 3. भरपूर 4. आज्ञाकारी, सौभाग्यशाली 5. बिना इजाज़त के 6. नज़र का एतबार 7. हुनर की प्रतिष्ठा



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
आदर और सम्मान (हदीस मंजरी)		6
बढ़ती मंहगाई से त्रस्त जनजीवन (संपादकीय)		7
मीडिया का दायित्व (आपके पत्र)		8
अपनी आंखों से (कविता)	–ओमप्रकाश बजाज	10
मानव एकता का इस्लामी आधार (उद्‌बोधन)	–मौलाना जलालुद्‌दीन उमरी	11
शांति-धर्म : इस्लाम (आस्था)	–अबरार अहमद	15
सच्चे ज्ञान की प्राप्ति (आस्था)	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	17
ग़ज़लें		22
हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशेमी	23
51 रुपये, इन्सान, धर्मामीटर (लघुकथाएं)		25
सच्चा एकेश्वरवाद और इस्लाम (विशेष आयोजन)	–मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ 'इस्लाही'	26
कुछ विचारणीय बातें (उद्‌गार)	–मुहम्मद इक़बाल मुल्ला	33
डॉ॰ अम्बेडकर और मीडिया	–प्रो॰ वी॰ रत्नमाला	36
अहसास (कहानी)	–जय प्रकाश वाल्मीकि	37
ग्रामोदय से भारत उदय तक! (विचार)	–वेदव्यास	40
काम की महत्वपूर्ण बातें (कैरियर)		41
इस्लाम मानव-अधिकारों का रक्षक (पुस्तक समीक्षा)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	43
शराब-ख़राब (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	44
हाशिम अमला और इमरान ताहिर (खेल खिलाड़ी)	–ए॰एन॰शिब्ली	45
ख़त्म हो भ्रूण हत्या (महिला जगत)	–राखी बंसल	47
शताब्दियों पुराने हैं पद नाम (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	49
करप्शन (कविता)	–मुहम्मद जुनैद अहमद	50

कुरआन ज्योति

(3) वास्तविकता तो यह है कि तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया, फिर राजसिंहासन पर आसीन होकर सृष्टि की व्यवस्था चला रहा है ।[4] कोई शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वाला नहीं है अलावा इसके कि उसकी इजाज़त के बाद शफ़ाअत करे ।[5] यही अल्लाह तुम्हारा रब है, इसलिए तुम उसी की इबादत करो ।[6] फिर क्या तुम होश में न आओगे ?[7]

–क़ुरआन, 10 : 3

4. अर्थात पैदा करके वह निष्क्रिय नहीं हो गया, बल्कि अपनी पैदा की हुई सृष्टि के राजसिंहासन पर वह स्वयं आसीन हुआ और अब सारी दुनिया का प्रबंध व्यावहारिक रूप से उसी के हाथ में है ।

(देखिये सूरा-7 आराफ़, टिप्पणी 40-41)

5. अर्थात दुनिया के प्रबंध और व्यवस्था में किसी दूसरे का दख़ल देना तो दूर की बात, कोई इतना अधिकार भी नहीं रखता कि अल्लाह से सिफ़ारिश करके उसका कोई फ़ैसला बदलवा दे या किसी का भाग्य बनवा दे या बिगड़वा दे । अधिक से अधिक कोई जो कुछ कर सकता है वह बस इतना है कि अल्लाह से दुआ करे, मगर उसकी दुआ का क़बूल होना या न होना बिल्कुल अल्लाह की मर्ज़ी पर निर्भर है ।

6. अर्थात जब वास्तविकता यह है कि पूर्णतः पालनहार अल्लाह ही है, तो उसकी अनिवार्य अपेक्षा यह है कि तुम केवल उसी की इबादत (बन्दगी) करो । फिर जिस तरह रब होने का शब्द तीन अर्थ रखता है अर्थात पालनहार होना, मालिक व स्वामी होना और शासक होना इसी तरह इसके मुक़ाबले में 'इबादत' शब्द में भी तीन अर्थ शामिल हैं, अर्थात परस्तिश (उपासना), गुलामी (दासता) और इताअत (आज्ञापालन)।

अल्लाह के अकेले पालनहार होने से अनिवार्य होता है कि इन्सान उसी का कृतज्ञ हो, उसी से दुआएं मांगे और उसी के आगे प्रेम और श्रद्धा से सर झुकाए। यह इबादत का पहला अर्थ है ।

अल्लाह के अकेले मालिक और स्वामी होने से अनिवार्य हो जाता है कि इन्सान उसका बन्दा और दास बनकर रहे । यह इबादत का दूसरा अर्थ है ।

अल्लाह के अकेले शासक होने से अनिवार्य हो जाता है कि इन्सान उसके आदेशों का पालन और उसके क़ानून की पैरवी करे, न स्वयं अपना शासक बने और न उसके सिवा किसी दूसरे की सम्प्रभुता स्वीकार करे । यह इबादत का तीसरा अर्थ है ।

7. अर्थात क्या (वास्तविकता की इस व्याख्या के बाद) भी तुम्हारी आंखें न खुलेंगी और इन्हीं ग़लतफ़हमियों में पड़े रहोगे जिनके आधार पर तुम्हारे जीवन की पूरी रीति-नीति अब तक सच्चाई के विरुद्ध रही है ?



आदर और समान

● हज़रत अबू मसऊद उक़बह बिन अम्र अल-बदरी अल-अनसारी (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : लोगों की इमामत (अर्थात नमाज़ वह पढ़ाये) वह व्यक्ति करे, जो उनमें सबसे अधिक अल्लाह की किताब का पढ़ने वाला हो। और यदि पढ़ने में सब बराबर हों, तो फिर जो उनमें सुन्नत (हदीस) का सबसे अधिक जानने वाला हो। और यदि सुन्नत में भी सब बराबर हों, तो फिर जिसने पहले हिजरत की हो और यदि हिजरत में भी सब बराबर हों, तो फिर वह जो उनमें आयु में बड़ा हो। कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के अधिकार क्षेत्र में उसकी इमामत न करे और न कोई किसी के घर में उसके प्रतिष्ठित एवं विशिष्ट आसन पर बिना उसकी अनुमति के बैठे।" (मुस्लिम)

मुस्लिम ही की एक रिवायत में है : "जो उनमें पहले मुसलमान हुआ हो।" ये शब्द 'आयु में बड़ा होने' के स्थान पर आये हैं। एक और रिवायत में है : "लोगों की इमामत वह करे जो उनमें सबसे अधिक क़ुरआन का पढ़ने वाला हो और पढ़ने में उन सबसे बढ़कर हो। और अगर पढ़ने में सब बराबर हों, तो उनकी इमामत वह करे जिसने पहले 'हिजरत' की हो और अगर 'हिजरत' की दृष्टि से भी सब बराबर हों, तो उनकी इमामत वह करे जो उनमें आयु में सबसे बड़ा हो।"

● हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) उहुद की लड़ाई के अवसर पर दो-दो आदमियों को एक क़ब्र में रखने की व्यवस्था करते, फिर पूछते कि इन दोनों में क़ुरआन किसको अधिक याद था? फिर जब उनमें से एक व्यक्ति की ओर संकेत किया जाता तो उसी को पहले लहद में उतारते।

● हज़रत अबू मूसा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "बूढ़े मुसलमान का आदर करना और क़ुरआन के हाफ़िज़ का, जो न उसमें अतिशयोक्ति से काम ले और न उससे विमुख हो, और न्यायशील शासक का आदर करना वास्तव में अल्लाह तआला के प्रताप एवं महिमा के आदर करने का एक हिस्सा है।"

● हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने पिता से और वे अपने दादा (रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : वह हममें से नहीं जो हमारे छोटों पर दया न करे और हमारे बड़ों की प्रतिष्ठा को न पहचाने।

अबू दाऊद, तिरमिज़ी : यह हदीस 'सहीह' है। तिरमिज़ी ने कहा है कि यह हदीस 'हसन सहीह' है।

(रियाजुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamicvideos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

बढ़ती महंगाई से त्रस्त जनजीवन

केन्द्र सरकार के विकास के दावों के बीच बढ़ती महंगाई और बेरोज़गारी देश में 'अच्छे दिन' आने का कोई शुभ संकेत नहीं हैं । कहा तो यह भी जाता है कि अगर पेट्रोल, डीज़ल की कीमतें न घटतीं, देश में हाहाकार मच जाता ! फिर भी जो हालात हैं, अच्छे नहीं कहे जा सकते । आर्थिक मोर्चे पर समस्या को अब अधिक झटके लग रहे हैं और महंगाई का झटका दिनोंदिन और तगड़ा होता जा रहा है । पिछले दिनों आये सीपीआई महंगाई दर के आंकड़ों से भी यह साबित हो गया है कि बेतहाशा बढ़ती महंगाई को रोकने में सरकार पूरी तरह विफल हो गयी है । इस नाकामी के चलते अब नीतिगत दरों में कटौती की संभावना बेहद घट गयी है । यह रिटेल महंगाई दर में पहली वृद्धि नहीं है । मई में रिटेल महंगाई दर अनुमान से बहुत अधिक रही है । इस अवधि में रिटेल महंगाई दर सीपीआई आधार पर बढ़कर 5.76 फीसद हो गयी, जो 7 महीने का उच्चतम स्तर है । वहीं अप्रैल में रिटेल महंगाई दर 5.39 फीसद रही थी । अप्रैल की रिटेल महंगाई दर 5.39 फीसद से संशोधित होकर 5.47 फीसद हो गयी है । महीने दर महीने आधार पर मई में कोर महंगाई दर 4.94 फीसद से घटकर 4.7 फीसद रही है । इस वृद्धि के चलते रोज़मर्रा के खाने-पीने की चीज़ों की महंगाई में भी बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है । महीने दर महीने आधार पर मई में खाने-पीने की चीज़ों की महंगाई दर 6.52 फीसद से बढ़कर 7.55 फीसद हो गयी है । महीने दर महीने आधार पर मई में शहरी इलाकों की महंगाई दर 4.68 फीसद से बढ़कर 4.89 फीसद रही है और ग्रामीण इलाकों की महंगाई दर 6.09 फीसद से बढ़कर 6.45 फीसद रही है । मई में सब्जियों की महंगाई दर 4.82 फीसद से बढ़कर 10.77 फीसद रही है, जबकि दालों की महंगाई दर 34.13 फीसद से घटकर 31.57 फीसद रही है, लेकिन इस अवधि में अनाजों की कीमत घटी नहीं है, बल्कि महंगाई दर 2.43 फीसद से बढ़कर 2.59 फीसद हो गयी । दाल वर्षों से बहुत महंगी बिक रही हैं ।

अमलन इनके दाम घटे नहीं है । गेहूं के दाम भी बढ़ गये है, जिससे महंगाई के पंख लग गये है । दूसरी ओर केन्द्र सरकार आर्थिक विकास के आंकड़ों से फूले नहीं समा रही । शायद उसे इसकी परवाह नहीं कि यह आर्थिक विकास एकांगी है । पूंजीपति और संपन्न हो रहे हैं, जिसके चलते बेरोज़गारी समेत अन्य समस्याएं पैदा हो रही हैं । वास्तव में हमारे देश में बढ़ती बेरोज़गारी और आय का असमान वितरण अर्थशास्त्रियों और समाजशास्त्रियों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है । लेबर ब्यूरो के ताज़ा आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2015 के पहले नौ महीनों के दौरान महज 1 लाख 34 हज़ार लोगों को नौकरी मिली । सन् 2009 के बाद से किसी भी वित्त वर्ष की इतनी अवधि का यह सबसे कमज़ोर प्रदर्शन है । इससे भी बुरी बात यह है कि पिछले साल के प्रथम नौ माह में 'लेबर इंटेंसिव इंडस्ट्री' (ज़्यादा मज़दूरों की ज़रूरत वाले उद्योग) ने पिछले छह साल का सबसे कमज़ोर प्रदर्शन किया है । यह बात और है कि देश की अर्थव्यवस्था बीस खरब डॉलर का आंकड़ा पार कर चुकी है और जी०डी०पी० दर भी ऊंची है, मगर ज़मीनी हक़ीक़त संतोषजनक नहीं है । देश में सकारात्मक नीतियों के अभाव में पूंजीवाद का यह पोषण अर्थव्यवस्था को न केवल तबाही की ओर ले जाएगा, बल्कि देश के मान-सम्मान और अस्तित्व को भी चोट पहुंचाएगा। यह एकांगी विकास देश के संविधान के भी विरुद्ध है, अपितु सही अर्थों में देश का विकास है ही नहीं ।

मीडिया का दायित्व

लोकतंत्र के तीन मुख्य स्तंभ हैं विधायिका, कार्यपालिका, और न्यायपालिका । इसके चौथे स्तंभ के रूप में प्रेस या मीडिया को स्वीकार किया गया है । मौजूदा समय में अगर हम सारी व्यवस्था पर नज़र डालें तो पता चलता है कि प्रजातंत्र के इस चौथे स्तंभ ने बाक़ी तीनों स्तंभों पर हावी होने की कोशिश की है ।

मौजूदा समय में मीडिया अपना जो चेहरा पेश कर रहा है वह अब अपने ख़तरनाक रूप में सामने आ रहा है । मीडिया अपनी भूमिका को ज़्यादा आंक कर एक ऐसी तस्वीर पेश कर रहा है कि लोकतंत्र के बाक़ी तीनों स्तंभों की कार्यप्रणाली पर इसका प्रभाव पड़ने लगा है ।

सचमुच मीडिया का काम है कि वह जनता के सामने सच की तस्वीर लाए और सरकार की जो ख़ामी है उसको जनता के सामने प्रस्तुत करे चाहे वह अच्छा हो या बुरा और इसी तरह मीडिया की ज़िम्मेदारी है कि वह सरकार के सामने जनता के सही हालात प्रस्तुत करें ताकि तंत्र में बैठा हुक्मरान यह भूले नहीं कि उसकी कुर्सी लोक के ज़िम्मे ही है और वह उसी भीड़ का नुमाइन्दा है जो आज उसके सामने खड़ी है ।

वास्तव में मीडिया निष्पक्ष व निर्भीक तरीक़े से कार्य करें, न की निर्णायक तरीक़े से । आज के परिदृश्य में हो यह रहा है कि मीडिया अपनी निर्णायक भूमिका में नज़र आ रहा है । हर किसी भी प्रकरण में मीडिया तथ्यों को इस तरीक़े से पेश करता है कि जैसे मीडिया न होकर कोई अदालत हो । मीडिया निर्णायक भूमिका में रहे यह लोकतंत्र के लिए अच्छा संकेत नहीं है । मौजूदा समय में मीडिया की लापरवाही के कारण कई अपराध छूपे रह जाते हैं ।

मौजूदा समय में यह ज़रूरी है कि मीडिया दादागिरी न करे, सहयोगी रहे । मीडिया की दादागिरी के कारण मीडियाकर्मी भी अपने आपको पत्रकार न समझकर न्यायाधीश समझने की भूल कर रहे हैं । एक पत्रकार सुधारक की भूमिका में नज़र आए व अपनी कार्यप्रणाली को समाज के सुधारने की दिशा में ले जाए, तभी यह मुमकिन है कि मीडिया का वास्तविक फ़ायदा समाज व राष्ट को मिलेगा । लेकिन अफ़सोस की बात है कि आज मीडियाकर्मी भी अपने इस पेशे को भ्रष्टाचार में डुबाने का काम कर रहे हैं । हाल ही में यह बात साफ़ हो चुकी है कि मीडिया किसी एक वर्ग के लिए काम कर रही है । आज हमारे समाज में ऐसे कितने मुद्दे हैं जो कि दबे हुए हैं । जैसे महिला उत्पीड़न, बाल मज़दूरी, किसान की आत्महत्या, नस्लवाद, भ्रष्टाचार जैसे कई मामले हैं, मीडिया इन सब मामलों को नज़रअंदाज़ कर रही है ।

दरअस्ल खेती को उद्योग की राह पर ले जाने वाले लालची धनपतियों से खेती को बचाना होगा । ग्रामीण विकास का यह एक ऐसा मुद्दा है जिसके चलते लाखों किसान आत्महत्या का रास्ता अपना रहे हैं । दूसरी तरफ़ मीडिया लगभग चुपचाप खड़ा है, शायद इसलिए कि आज हमारे देश की मीडिया को फ़ुरसत नहीं है, इन सब बातों को दिखाने के लिए ।

इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि सभी मीडिया संगठनों को रणनीति के तहत एक मंच पर आकर किसान को मरने न देने के साथ-साथ उनके विकास के लिए आगे आना होगा । कुछ दशकों में जहां मीडिया की ताक़त बढ़ी है, वहीं मीडिया के अन्दर कुछ पत्रकारों ने इसके महत्व को कम करने का काम किया है, जो कि हमारे देश के लिए घातक है । और समाज का हित इस वर्ग को तभी तक दिखायी देता है जब तक उसके मुनाफ़े पर असर न पड़ता हो । अब सत्ता पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर अपना मुनाफ़ा बढ़ाने में इसे कोई संकोच नहीं है । कुछ वर्षों से मीडिया मोदी और भारतीय जनता पार्टी का प्रचार करता रहता है ।

लेकिन यही मीडिया 2002 के गुजरात दंगों के बाद अगर मीडिया ने किसी पर सबसे ज़्यादा सवाल उठाए और सबसे ज़्यादा किसी की आलोचना की तो वे नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार है । इसमें दो राय नहीं कि मीडिया पर उठे सवालों में कहीं न कहीं सच्चाई है । क्या मीडिया अपनी ताक़त का ग़लत इस्तेमाल कर रही है । पेड न्यूज़ की जो

बात उठायी जा रही है, उसमें कितनी सच्चाई है ? क्या मीडिया के अपने दायरे में भी भ्रष्टाचार है ? बहुत से ऐसे समाचार चैनल और अख़बार हैं जो अपनी ईमानदार रिपोर्टिंग और विश्लेषणों से मीडिया की छवि अच्छी बनाए रखने की कोशिश करते हुए समाज और देश के व्यापक हित के लिए काम करते हैं। आज प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के दोनों माध्यमों के सामने अपनी विश्वसनीयता बचाने की बहुत बड़ी चुनौती है। इंटरनेट के ज़माने में इनकी लोकप्रियता में कमी आयी है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका और उन पर निर्भरता लगातार कम होती जा रही है। आज भारत में दस प्रतिशत से ज़्यादा लोग इंटरनेट का इस्तेमाल करने लगे हैं और इसका दायरा धीरे-धीरे और बड़ा हो रहा है। इंटरनेट के ज़रिए लोगों के पास ख़बरें जल्दी पहुंच जाती हैं। इस मामले में सोशल मीडिया भी काफ़ी अहम भूमिका निभा रहा है।

और सबसे चिंताजनक बात यह है कि बी॰जे॰पी॰ और आर॰एस॰एस॰ भारतीय मीडिया के ज़रिये मुस्लिमों को आतंकवादी बताने पर तुला है। मुस्लिम युवकों को कोर्ट से बरी होने पर ख़बर को किसी भी चैनल पर न दिखाने और मुस्लिम युवकों की गिरफ़्तारी पर आतंकवादी बना के मीडिया ट्रायल करने पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को उलेमा ने मुस्लिम विरोधी बताया है।

जमीअत उलेमा हिन्द ने तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया निष्पक्षता पर सवाल उठाते हुए कहा की यह बेहद अफ़्सोस की बात है कि मीडिया ख़ासकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जहां दिल्ली में आतंकवाद के आरोप में गिरफ़्तार किये गये मुस्लिम युवकों की गिरफ़्तारी को महत्वपूर्ण और बड़ी ख़बर बना सुबह से ही इसका ढिंढ़ोरा पीटता रहा, वहीं सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्दोष करार देकर 23 साल बाद रिहा किय गये मुस्लिम युवकों के मामले को क़तई नज़र-अंदाज़ किया और किसी भी चैनल पर मुस्लिम युवकों के निर्दोष साबित होने और रिहा किये जाने की ख़बर नहीं है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मीडिया का एक बड़ा हिस्सा कैसे फ़ासीवादी ताक़तों की सोच और विचारधारा के प्रभाव में है और इसका उद्देश्य केवल मुसलमानों की छवी को ख़राब करना ही रह गया है।

शाहिद इलियास
दिल्ली

सेवा भी धर्म है

मासिक पत्रिका 'कान्ति' माह जून 2016 का मैंने व्यापक दृष्टिकोण से अध्ययन किया।

इस अंक के अंतर्गत ज्ञान-विज्ञान संबंधी आलेख 'शिक्षा का महत्व' रचयिता 'मुहम्मद निज़ामुद्दीन' मेरे द्वारा अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि इसमें भाव शैली व मौलिकता प्रदर्शित की गयी। मैं 'मुहम्मद निज़ामुद्दीन' के भावपूर्ण विचारों से पूर्णतया सहमत हूं। मैं इस संबंध में कुछ सुधारों के साथ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहा हूं, सो इस प्रकार है–

व्यक्ति के निर्माण और समाज के उत्थान में शिक्षा का अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्राचीनकाल की भारतीय गरिमा ऋषियों और मुस्लिम धर्मगुरुओं द्वारा संचालित शिक्षा पद्धति के कारण ही ऊंची उठ सकी थी। किसी देश का उत्थान या पतन इस बात पर निर्भर करता है कि इसके नागरिक किस स्तर के हैं और यह स्तर वहीं की शिक्षा पद्धति पर निर्भर रहता है। सरकार का काम है कि वह राष्ट्र की आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार शिक्षा-पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन करे पर इन दिनों में जो स्थिति है उसे देखते हुए निकट भविष्य में ऐसी आशा कम ही की जा सकती है। फिर क्या हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा जाए ? और जो कुछ चल रहा है उसे ही चलते रहने दिया जाए ? ऐसा उचित न होगा। हमें जनता के स्तर पर जनसहयोग से ऐसी शिक्षा-प्रणाली विकसित करना चाहिए, जो उपयुक्त प्रयोजन को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान कर सके। युग निर्माण योजना ने यही क़दम उठाया है।

कहा गया है–'कामये दुख तृप्तानां प्राणि-नामार्ति नाश नम' अर्थात दुखी एवं संतृप्त प्राणियों की पीड़ा का शमन करना ही वास्तविक सेवा है। प्रायः सभी धर्मों में दुखी, पीड़ित, रोगी, असहाय, विकलांग, निर्धन वृद्धजनों की सेवा करना परम कर्तव्य माना गया है। पर्वों और विशेष अवसरों पर निष्काम भावना से प्रेरित होकर सेवा करना अथवा सुख पहुंचाना आवश्यक माना जाता है। इसे ही परोपकार, परहित और परसेवा कहा गया है।

यह पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे।
यह मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

अर्थात जिस मनुष्य में दया, परोपकार भावना, ममता, उदारता और सेवा करने की इच्छा नहीं है वह पशु के समान

है । मनुष्य का यह परम कर्तव्य है कि वह केवल अपने स्वार्थ के लिए ही न सोचे अपितु परहित के लिए तन-मन, धन से कार्य करे और बदले में किसी प्रकार का यश-लाभ और बड़ाई प्राप्त करने की न सोचे । कवि श्रेष्ठ संत रहीम कहते हैं–

"जो रहीम दीनहि लखे, दीन बंधु सम होये ।

अर्थात जो मनुष्य निर्धन-दीन असहाय लोगों की सहायता करता है वही महान है । दीन-हीन अनाथ, रोगी, दुखी लोगों के लिए भी दिल खोलकर सहायता करनी चाहिए । ऐसे बड़े होने से क्या लाभ, जैसे कि खजूर का पेड़–

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर ।।

खजूर के पेड़ से राहगीर को न तो छाया ही मिलती है और न ही फल ।

रामस्वरूप झैवर
शास्त्रीनगर विस्तार,
भीलवाड़ा, राजस्थान

जटिल भ्रांतियों का निवारण

सादर पूर्वक सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि 'कान्ति' साप्ताहिक अखबार एवं मासिक पत्रिका पढ़ने को मिल रहे हैं । सभी मसीह परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं एवं आभार प्रकट करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि आपके प्रकाशन दिन-दूनी रात चौगुनी सफलता पाए । आपके साप्ताहिक समाचार पत्र एवं मासिक पत्रिका से स्वेच्छा पत्रकारिता कैसे हो, इसकी जानकारी मिली । साथ ही बहुत-सी रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं इस्लामी जानकारी मिली । धन्यवाद ! आपके समाचार से कई तरह के जटिल भ्रांतियों का निवारण भी हो गया ।

रेखा तिर्की, सुशीला उरांव, संजीत भुइयां, सलीम एक्का, सनातन टोपनो, संगीता एक्का, फूलमनी तिग्गा
रांची, झारखंड

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

कविता

अपनी आंखों से

यह सुनी सुनायी बात नहीं है
अपनी इन्हीं आंखों से देखा है
तब रुपये के सोलह आने
और चौसठ पैसे होते थे
एक पैसे में भुने चने और
मीठी खील से पूरी जेब भर जाती थी
आना-दुअन्नी में ही भरे पूरे घर की
साग-सब्ज़ी आराम से आ जाती थी
साइकिल होना परिवार के लिए
बड़ी शान की बात मानी जाती थी
एक आने से लेकर आठ आने तक
पहली से दसवीं की फ़ीस ली जाती थी
पढ़ने में होशियार विद्यार्थियों की
वह भी माफ़ हो जाती थी
सवा आने का एक सेर दूध
खुलेआम बाज़ार में मिलता था
दो से अढ़ाई रुपये में सेर भर
शुद्ध देसी घी घर पहुंचाया जाता था
अच्छे दिन वही थे शायद !
कौन बताए ?

ओमप्रकाश बजाज
(इंदौर, म०प्र०)

मानव-एकता का इस्लामी आधार

● मौलाना जलालुद्दीन उमरी

इस्लाम ने मानव-एकता की विस्तृत, सार्वभौमिक और स्पष्ट धारणा प्रस्तुत की है और इसके लिए बहुत ही ठोस और मज़बूत आधार स्थापित किये हैं। उसके निकट इसका पहला आधार यह है कि सारे मानव एक ईश्वर की सृष्टि और उसके बन्दे (दास) हैं। दूसरा आधार यह है कि उन सबका मूल एक है, इसलिए वह अपने समस्त बाह्य अन्तरों के बावजूद एक इकाई है। इस्लाम इन आधारों पर समस्त मानव-जाति के सभी वर्गों को जोड़ता और इस मार्ग में जो संकीर्णताएं (पक्षपात) बाधक हैं उनको एक-एक करके दूर करता है। इस्लाम द्वारा प्रदत्त इन आधारों को मान लिया जाए तो मतभेदों के अंधेरे से एकता के सूर्य का उदय हो सकता है और जो राष्ट्र एवं समूह परस्पर संघर्षरत हैं वे मिल-जुलकर जीवन-यापन कर सकते हैं।

सारे मनुष्य एक ईश्वर के बन्दे हैं

इस्लाम ने ईश्वर की अत्यन्त उचित एवं सटीक धारणा दी है। यही उसकी शिक्षाओं का मूलमंत्र है। वह इस तथ्य को सशक्त प्रमाणों के साथ प्रस्तुत करता है कि यह विशाल ब्रह्मांड, जिसके विस्तार का अनुमान नहीं लगाया जा सकता, एक ही ईश्वर की सृष्टि है। उसी का इस पर शासन है। मनुष्य भी उसकी असंख्य सृष्टियों की तरह एक सृष्टि है। वही उसका स्रष्टा, स्वामी, उपास्य और शासक है। उसी ने उसके लिए हवा, पानी, प्रकाश, अंधकार, गर्मी और ठंडक पैदा की, जल और थल पर उसे अधिकार दिये, वही उसका अन्नदाता और पालनहार है, उसी के हाथ में मृत्यु एवं जीवन, बीमारी एवं स्वास्थ्य और विपन्नता और सम्पन्नता है। वही उसकी विनती सुनता और मनोरथ पूरा करता है, वही संकट दूर करने वाला और आवश्यकताएं पूरी करने वाला है। वही उसका वास्तविक सहारा है। जब सारे सहारे टूट जाते हैं तो उसी का सहारा काम आता है, वही शरणदाता है, वह शरण न दे तो उसे कहीं शरण नहीं मिल सकती और वह सहायता न करे तो कोई उसकी सहायता नहीं कर सकता। उसके उपकार इतने अधिक हैं और मनुष्य उन उपकारों में इतना डूबा हुआ है कि वह न तो उनको गिन सकता है और न उनका सही अर्थ में कृतज्ञता ज्ञापित कर सकता है। क़ुरआन में है :

"अल्लाह वही है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और आकाश से पानी बरसाया, फिर उसके द्वारा तुम्हारी रोज़ी (आजीविका) के लिए तरह-तरह के फल पैदा किये। जिसने नौका को तुम्हारे लिए वशीभूत किया कि समुद्र में उसके आदेश से चले और दरियाओं को तुम्हारे लिए वशवर्ती किया। जिसने सूरज और चांद को तुम्हारे लिए वशवर्ती किया कि निरन्तर चले जा रहे हैं और रात-दिन को तुम्हारे लिए वशवर्ती किया। जिसने वह सब कुछ तुम्हें दिया जो तुमने मांगा (अर्थात जिन चीज़ों की तुम्हारे अस्तित्व एवं विकास के लिए आवश्यकता थी, वह सब दिया)। यदि तुम अल्लाह की नेमतों की गणना करना चाहो तो नहीं कर सकते। वास्तविकता यह है कि मानव बड़ा ही अन्यायी और अकृतज्ञ है।"

(क़ुरआन–14:32-34)

सबका जीवन लक्ष्य ईश्वर की उपासना है

मनुष्य अपने उसी मालिक व प्रभु की उपासना के लिए पैदा हुआ है। इस संसार में यही उसकी सही हैसियत भी है और यही उसके लिए उचित और शोभनीय भी है। इसी के द्वारा वह अल्लाह के उपकारों का शुक्र अदा कर सकता है और अपने बन्दा होने का प्रमाण दे सकता है। क़ुरआन में है–

"ऐ लोगो ! बन्दगी करो, अपने उस प्रभुवर (रब) की जो तुम्हारा और तुमसे पहले जो लोग हुए हैं उन सबका पैदा करने वाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसी प्रकार हो सकती है। वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती का बिछौना बिछाया, आकाश की छत बनायी, ऊपर से पानी बरसाया और उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार निकाल कर तुम्हारे लिए रोज़ी जुटाई। अतः जब यह तुम जानते हो तो दूसरों को अल्लाह का प्रतिद्वंद्वी न ठहराओ।"

(क़ुरआन–2:21-22)

यही पैग़म्बरों की शिक्षा है

यही शिक्षा उन समस्त पैग़म्बरों और महापुरुषों की थी जो अल्लाह तआला की ओर से मनुष्यों के मार्ग- दर्शन के लिए संसार के विभिन्न भागों में और विभिन्न युगों में आते रहे और जिसका सिलसिला आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तक जारी रहा । क़ुरआन कहता है–

"हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा है उसकी ओर यही प्रकाशना की है कि मेरे सिवा कोई ईष्ट पूज्य नहीं है । अतः तुम लोग मेरी ही बन्दगी करो ।"

(क़ुरआन–21:25)

इस उद्देश्य पर सब एकत्र हो सकते हैं

जीवन का यह उद्देश्य किसी एक व्यक्ति, वर्ग और क़ौम एवं देश का नहीं, बल्कि सारी मानव-जाति का उद्देश्य है–अमीर का भी, ग़रीब का भी, विकसित का भी, पिछड़े और विकासशील का भी, हिन्दुस्तानी का भी, चीनी का भी, एशिया वाले का भी, यूरोप वाले का भी, रूसी का भी, अमेरिकी का भी । अल्लाह तआला ने व्यक्तियों और समूहों के लिए अलग-अलग उद्देश्य नहीं बताये हैं, बल्कि सबका एक उद्देश्य निश्चित किया है और धरती पर बसने वाले प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक समूह के लिए अपनी इबादत अनिवार्य की है ।

यही संसार का एकमात्र उद्देश्य है जो पूरब-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण के सभी मनुष्यों का उद्देश्य हो सकता है और जिस पर रंग एवं नस्ल और राष्ट्र एवं देश की विविधता के बावजूद वे एकत्र हो सकते हैं । इस (उद्देश्य) के विषय में न तो अरब से बाहर वाले यह कह सकते हैं कि यह केवल अरबों के लिए है और अरब वासी इसे अरब से बाहर वालों का उद्देश्य निश्चित कर सकते हैं । न पूरब वाले इससे दूरी महसूस कर सकते हैं और न पश्चिम वाले क्योंकि यह हर मानव के दिल की पुकार है । इससे उसकी स्वाभाविक प्यास बुझती है और आत्म तुष्टि प्राप्त होती है । इसमें प्रत्येक वर्ण एवं जाति और प्रत्येक भू-भाग के मनुष्यों के लिए आकर्षण है । अपने स्रष्टा एवं स्वामी और उपकारी की ओर बढ़ना और उससे निकट होना मानव की प्रकृति एवं स्वभाव है । क्योंकि क़दम-क़दम पर वह उसकी ओर उन्मुख होने और उसकी छत्र-छाया में शरण लेने पर विवश है । संकटों में वह उसका सहारा ढूंढता है और आनन्द एवं उल्लास में उसके उपकारों पर कृतज्ञता प्रकट करना चाहता है, उसकी उपासना और बन्दगी में मानव का अपना निजी हित है और उससे विद्रोह और उसकी अवज्ञा में उसकी अपनी निजी होनि ।

इसके अतिरिक्त ईश्वर की कोई जाति नहीं, उसका कोई परिवार और वंश नहीं । उसका अस्तित्व किसी निश्चित भू-भाग में सीमित नहीं । वह सर्वव्यापी है और प्रत्येक को देखता और उसकी विनती सुनता और सहायता करता है । उससे प्रत्येक मनुष्य अपना संबंध जोड़ सकता है–गोरे भी, काले भी, मज़दूर भी, मालिक भी, किसान भी, व्यापारी भी, विद्यार्थी भी, अध्यापक भी, शासक भी, शासित भी । सब उसकी दृष्टि में समान हैं । सब उसकी ओर बढ़ सकते हैं और उससे निकटता एवं प्रेम की कामना कर सकते हैं । कोई व्यक्ति न तो अपनी कुलीनता से उसके पास ऊंचा स्थान प्राप्त कर सकता है और न पद एवं प्रतिष्ठा से । उस तक पहुंचने में न तो दरिद्रता बाधक बनती है और न सुख-वैभव सहायक होता है । वह प्रत्येक उस व्यक्ति को आगे बढ़कर लेने के लिए तैयार है जो उसकी ओर बढ़े, चाहे वह अफ़्रीक़ा का हो या अमेरिका का, अंग्रेज़ी बोलता हो या हिन्दी, जो व्यक्ति अपने आपको उसकी दासता में देना चाहे उसके लिए कोई रुकावट नहीं है । जिस कोने से जो भी उसे पुकारे उसकी पुकार का जवाब देने के लिए वह तैयार है । क़ुरआन कहता है–

"और ऐ नबी, मेरे बन्दे यदि तुमसे मुझे (मेरे विषय में) पूछें, तो उन्हें बता दो कि मैं उनसे निकट ही हूं । पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता और उत्तर देता हूं । अतः उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार पर कहें कि हम उपस्थित हैं और मुझको मानें । (यह बात तुम उन्हें सुना दो) कदाचित वे सीधा मार्ग पा लें ।" (क़ुरआन–2:186)

यह कल्पना कि इस ब्रह्मांड का एक ईश्वर है, सारे मनुष्य उसके बन्दे हैं और उसी की उपासना (इबादत) के लिए पैदा हुए हैं, मानव के बीच भेदभाव को समाप्त करके उनको एक इकाई में परिवर्तित कर देता है । इसको मानने के पश्चात मनुष्य के अन्दर सम्मान और अपमान के झूठे भेदभाव कभी उभर नहीं सकते । ईश्वर की बन्दगी का एहसास सेवक एवं स्वामी, शासक एवं शासित, मज़दूर एवं मालिक, गोरे और काले, अरबी और अजमी (ग़ैर-अरबी) सबको एक पंक्ति में खड़ा कर देता है और ऊंच-नीच के

अन्तर को भूलकर सब उसके सामने नतमस्तक हो जाते हैं।

मानव-जाति का मूल एक है

क़ुरआन मजीद ने बार-बार इस वास्तविकता पर प्रकाश डाला है कि मानव-जाति का आरंभ एक ही जीवन से हुआ है। उसी से उसका जोड़ा बनाया गया और फिर उन दोनों से उनकी नस्ल फैली। परिवार और गोत्र अस्तित्व में आये। राष्ट्रों और समूहों ने जन्म लिया और इन्सानी आबादी धरती के विभिन्न भागों और क्षेत्रों में फैलती चली गयी। अतएव एक स्थान पर उल्लेख हुआ–

"ऐ लोगो, अपने प्रभु से डरो जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्री संसार में फैला दिये। उस अल्लाह से डरो जिसको माध्यम बनाकर तुम एक-दूसरे से अपने हक़ मांगते हो, और नाते-रिश्तों के संबंधों को बिगाड़ने से बचो। निश्चय ही अल्लाह तुम्हें देख रहा है।"

(क़ुरआन–4:1)

मानव-जाति की एकता को भंग करना बिगाड़ है

यह इस बात की घोषणा है कि सारे मनुष्य वास्तव में एक ही मां-बाप की संतान हैं। वे एक-दूसरे के भाई हैं जो संसार के एक भाग से दूसरे भाग तक फैले हुए हैं। अल्लाह तआला ने उनके बीच बन्धुत्व और भाईचारा का जो संबंध स्थापित कर दिया है उसे जोड़ने की इस्लाम हरगिज़ अनुमति नहीं देता और इस दिशा में जो भी क़दम उठाया जाए उसका विरोध करता है। उसके निकट इस परिवार को उजाड़ने और क्षति पहुंचाने की प्रत्येक कोशिश बिगाड़ और उपद्रव के समान है। क़ुरआन ने हज़रत मूसा (अलैहि०) और फ़िरऔन के वृत्तांत का बहुत विस्तार से वर्णन किया है। फ़िरऔन ने अल्लाह से विद्रोह और अवज्ञा का तरीक़ा अपनाया और पूरी क़ौम (राष्ट्र) को वर्गों में विभाजित कर दिया। एक वर्ग शासक था और दूसरा शासित। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलैहि०) के द्वारा इस विद्रोह को समाप्त किया, पीड़ितों एवं दलितों की सहायता की और अत्याचारियों को भूतल से मिटा दिया। उल्लेख है :

"वास्तविकता यह है कि फ़िरऔन ने धरती में सिर उठाया और उसके निवासियों को गिरोहों में विभक्त कर दिया। उनमें से एक गिरोह को वह अपमानित और कमज़ोर बनाकर रखता था, उसके बेटों की हत्या करता और उसकी बेटियों को जीता रहने देता था। वास्तव में वह बिगाड़ पैदा करने वाले लोगों में से था। और हम यह इरादा रखते थे कि दया करें उन लोगों पर जो धरती में अपमानित और कमज़ोर बनाकर रखे गये थे और उन्हें नायक बना दें और उन ही को वारिस बनाएं और धरती में उनको प्रभुत्व प्रदान करें और उनसे फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को वही कुछ दिखलाएं जिनका उन्हें डर था।"

(क़ुरआन–28:4-6)

वर्ण, वंश और भाषा आदि की भिन्नता प्रकृति की निशानियां हैं

मनुष्यों के बीच रंग-रूप, वंश एवं गोत्र, भाषा, रहन-सहन, उद्योग-धंधा और राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीयता के अन्तर को इस्लाम ईश्वर की असंख्य निशानियों में से एक निशानी बताता है। मनुष्यों का यह अन्तर बताता है कि इस विश्व पर उसके स्रष्टा एवं प्रभु को पूरा-पूरा अधिपत्य एवं अधिकार प्राप्त है। वह जिसे चाहता है सुन्दर पैदा करता है और जिसे चाहता है कुरूप बनाता है, जिसे चाहता है धन-दौलत देता है और जिसे चाहता है इससे वंचित कर देता है। जिसको जिस भू-भाग में चाहे पैदा करता है और जो बोली चाहे सिखाता है। अगर कोई व्यक्ति इनमें से किसी चीज़ को अपनी श्रेष्ठता या हीनता का प्रमाण समझता है तो वह प्रकृति की एक बहुत बड़ी निशानी से शिक्षा नहीं प्राप्त कर रहा है। वह उस दृष्टि से वंचित है जिसमें ईश्वर के प्रमाणों का अवलोकन एवं अध्ययन करने की क्षमता होती है।

"उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया। फिर सहसा तुम मानव हो कि (धरती में) फैलते चले जा रहे हो। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति से जोड़े बनाये ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी। निस्सन्देह इसमें बहुत-सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

और उसकी निशानियों में से आकाश और धरती की सृष्टि और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की भिन्नता है। निश्चय ही इसमें बहुत- सी निशानियां हैं बुद्धिमान लोगों के लिए।

(क़ुरआन–30:20-22)

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

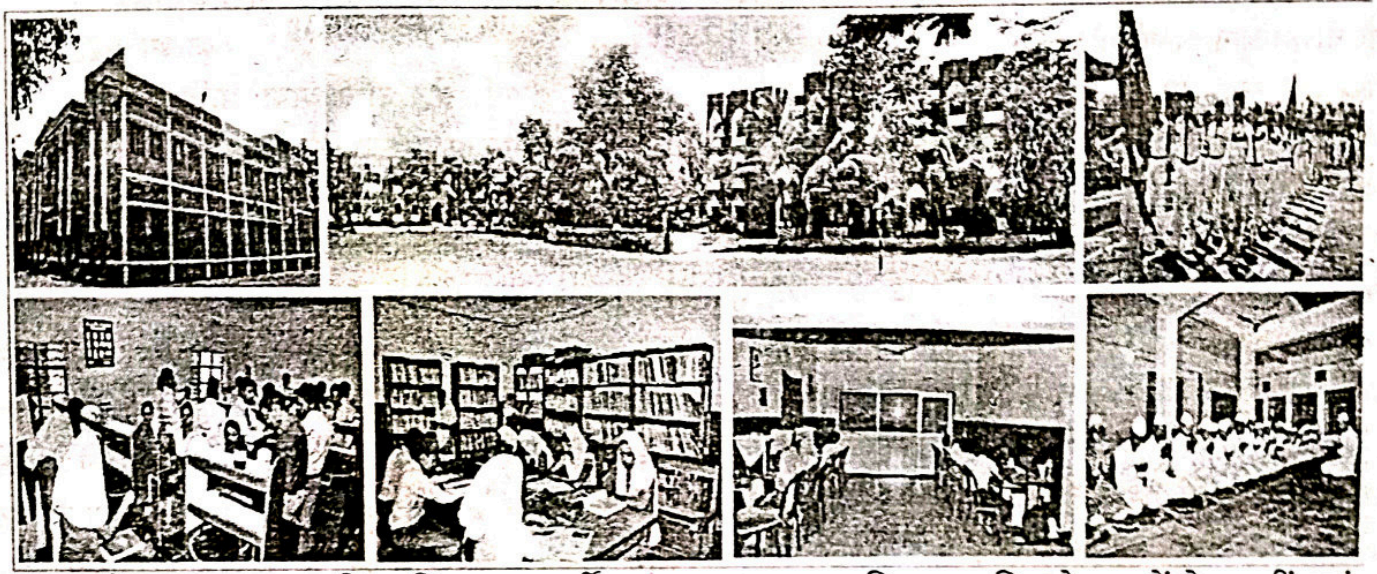

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम.ए., बी.एड-ए (अलीग.)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम.एस.सी., बी.एड.
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई.मेल : hmpt.mission@gmail.com

शांति-धर्म : इस्लाम

■ अबरार अहमद
(लाखेरीवाले)

हर समाज यह चाहता है कि उसके यहां शांति बनी रहे । यही कारण है कि पुराने ज़माने में 'शांति', शिक्षा का एक अभिन्न अंग थी । लेकिन बीसवीं सदी की शुरुआत में शिक्षा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किये जाने पर बल दिया जाने लगा जिससे पाठ्यक्रमों में से शांति तथा नैतिक शिक्षा को निकाल फेंका गया जिसके फलस्वरूप हमें उस कालखंड में दो विश्वयुद्धों की विभीषिका झेलनी पड़ी ।

दरअस्ल जो लोग युद्ध के समर्थक होते हैं, वे अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए बच्चों तक को हथियार पकड़ा देते हैं, अर्थात युद्ध के लिए बच्चों का इस्तेमाल करने से भी नहीं चूकते हैं ।

इसके विपरीत जो लोग शांति के समर्थक होते हैं, वे बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं । ये लोग बच्चों को प्रारंभ से ही 'शांति' की शिक्षा देने के बजाय, उन्हें ऐसी शिक्षा देते हैं, जिससे वे बड़े होकर रोज़ी-रोटी कमाने के लायक़ हो सकें । जबकि होना यह चाहिए कि बच्चों में प्रारंभ से ही शांति के बीज बो देने चाहिए । बचपन कोरे काग़ज़ की तरह होता है, अत: यह बड़ों पर निर्भर करता है कि इस कोरे काग़ज़ पर क्या लिखना है ? शांति के समर्थकों के द्वारा बच्चों की उपेक्षा करने के कारण ही आज पूरा विश्व युद्धों के जाल में फंसा हुआ है ।

ऐसे में इस्लाम धर्म में शांति की अवधारणा का अध्ययन अत्यंत उपयोगी एवं लाभकर है । यहां इस्लाम धर्म का उल्लेख इसलिए किया जा रहा है, क्योंकि इस वक़्त विश्व में जो युद्ध छिड़े हुए हैं, उनके लिए इस्लाम धर्म को दोषी ठहरा दिया गया है ।

आज एक सुनियोजित षड्यंत्र के द्वारा इस्लाम को आतंकवादी धर्म के रूप में प्रचारित किया जा रहा है । यह सब इस्लाम के दुश्मनों की चाल है, क्योंकि वे नहीं चाहते कि आम लोग इस्लाम को समझें और इस्लाम को अपनाकर शांति के साथ जीवन व्यतीत करें ।

दरअस्ल आज विश्व में एक शब्द बहुत मशहूर है–इस्लामी आतंकवाद ।

कैसे मूर्ख लोग हैं वे जिन्होंने इस शब्दावली की खोज की है । क्योंकि यह एक नहीं दो शब्द हैं और इत्तिफ़ाक़ से दोनों एक-दूसरे के विलोम शब्द हैं । क्योंकि इस्लाम का शाब्दिक अर्थ है–शांति, जबकि आतंकवाद का अर्थ है–हिंसा व अशांति ।

यहां हम इस्लाम के पूरे अर्थ को समझने का प्रयास करेंगे । इस्लाम का एक अर्थ है–विनम्रता, विनीत, आज्ञापालन, स्वेच्छापूर्वक अधीनता स्वीकार करना आदि ।

इस्लाम का दूसरा प्रसिद्ध अर्थ है–सुलह, शांति, कुशलता, संरक्षण, शरण आदि ।

दोनों अर्थों के हिसाब से इस्लाम का मूल अर्थ है–शांति के साथ ईश्वर की आज्ञा का पालन करना ।

अत: हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा है, "इस्लाम ग्रहण करो, (तबाही से) बच जाओगे ।"

आप (सल्ल०) ने यह भी कहा कि, "जो व्यक्ति भी इस्लाम में आया, सुरक्षित रहा ।" इसलिए क़ुरआन में है–

"और जब कोई आदर के साथ तुम्हें सलाम करे तो उसको उससे ज़्यादा अच्छे ढंग से जवाब दो या कम से कम उसी तरह ।" (क़ुरआन, 4:86)

इस्लाम जीवन के हर क्षेत्र में शांति चाहता है । व्यक्तिगत जीवन में भी मनुष्य को शांति की प्राप्ति हो तथा सामाजिक स्तर पर भी उसे शांति मिले ।

इसी कारण इस्लामी शिक्षा पद्धति में शांति की शिक्षा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है ।

परन्तु कभी-कभी शांति की स्थापना के लिए युद्ध भी करना पड़ता है । दरअस्ल कुछ शरारती तत्व धरती में उपद्रव फैलाने की कोशिश करते हैं । मसलन–शराब, जुआ, वेश्यावृत्ति, समलैंगिकता, अश्लीलता, चोरी-डकैती आदि ।

उनके ऐसा करने से पूरी की पूरी सभ्यता और संस्कृति

के नष्ट हो जाने की संभावना होती है । अत: ऐसी परिस्थितियों में सभ्यता व संस्कृति की रक्षा के लिए ऐसे लोगों के ख़िलाफ़ युद्ध अनिवार्य हो जाता है ।

यहां एक और तथ्य का उल्लेख करना आवश्यक है । दरअस्ल जिन लोगों का जीवन-यापन हथियार बेचने पर टिका होता है, वे धरती में कभी भी शांति की स्थापना नहीं होने देना चाहते, क्योंकि शांति स्थापित होते ही उनका कारोबार ठप्प हो जाएगा ।

अत: ये लोग धरती में उपद्रव फैलाते हैं तथा इस्लाम की दृष्टि में उपद्रव, रक्तपात से भी गंभीर अपराध है और इसी कारण इस्लाम उपद्रव के विरुद्ध युद्ध की अनुमति देता है ।

आज हम देखते हैं कि युद्धों में सर्वाधिक मौतें निर्दोष नागरिकों की होती हैं, क्योंकि इन युद्धों की कोई आचार संहिता नहीं होती है, जबकि इसके विपरीत इस्लाम युद्ध की आचार संहिता निर्धारित करता है । उदाहरण के लिए–

"किसी जान को न मारो जिसे अल्लाह ने हराम किया है सिवाय इसके कि हक़ और इन्साफ़ को यही अपेक्षित हो ।" (क़ुरआन, 17:33)

उपरोक्त आयत हमें बताती है कि कैसा भी युद्ध हो किसी भी निर्दोष इन्सान का वध नहीं किया जा सकता ।

इसके अलावा जो लोग इस्लाम की तरफ़ से युद्ध करने वालों के ख़िलाफ़ युद्ध नहीं करते हैं, अल्लाह उनसे संबंध रखने से नहीं रोकता है ।

साथ ही ऐसा व्यक्ति जो इस्लाम तो क़बूल नहीं करता है परन्तु इस्लाम के लिए युद्ध करने वालों के विरुद्ध युद्ध में शामिल नहीं होता है, तो उसे सूरक्षित स्थान तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी भी इस्लाम वालों की है ।

"और अगर बहुदेववादियों में से कोई व्यक्ति शरण मांगकर तुम्हारे पास आना चाहे (ताकि अल्लाह की वाणी सुने) तो उसे शरण दे दो यहां तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले । फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुंचा दो ।" (क़ुरआन, 9:6)

अत: इस्लाम एक शांति-प्रिय धर्म है । वह अपने विरोधियों को शांति के साथ हक़ की दावत देने का आह्वान करता हैं ।

अब पुन: आतंकवाद पर लौटते हैं । आतंकवाद इस समय विश्व की सबसे ज्वलंत समस्या है । इसके कारण शांति, सुरक्षा और संस्कृति के लिए गंभीर ख़तरा उत्पन्न हो गया है ।

दरअस्ल आतंकवाद किसी देश में निर्वाचित शासन व्यवस्था का विरोध करता है तथा वह समाज में हिंसात्मक उपाय का सहारा लेकर ख़ून-ख़राबा तथा लूट-पाट आदि करके अपनी बात मनवाने की कोशिश करता है, यह ज़ोर-ज़बरदस्ती का हिमायती है, जबकि इसके विपरीत इस्लाम आतंकवाद का ज़बरदस्त विरोधी है ।

इस्लाम और शांति दो पर्यायवाची शब्द हैं जबकि इस्लाम और आतंकवाद एक-दूसरे के विलोम शब्द हैं ।

जिसने हत्या या धरती में उपद्रव फैलाने के अतिरिक्त किसी और कारण से किसी का वध कर दिया, उसने मानो सारी मानवता का वध कर दिया–यह है इस्लाम की शिक्षा ।

जो देश हथियार बनाने और बेचने का धंधा करते हैं, उन्होंने इस्लाम के ख़िलाफ़ यह दुष्प्रचार कर रखा है कि इस्लाम हिंसा की शिक्षा देता है ।

दरअस्ल इन देशों की पॉलिसी यह है कि पहले स्वयं अपने ऊपर कोई हमला करो, फिर उसे इस्लाम से जोड़ दो तथा इसे इस्लामी आतंकवाद का नाम दे दो । फिर इस तथाकथित इस्लामी आतंकवाद को मिटाने के नाम पर किसी मुस्लिम देश के ख़िलाफ़ युद्ध छेड़ दो ।

एक बार जब युद्ध छिड़ जाता है, तो इनके हथियारों की बिक्री भी बढ़ जाती है ।

इस प्रकार ये एक तीर से कई शिकार करते हैं । पहले खुद के देश पर हमला करके अपने ही निर्दोष नागरिकों को मरवा देते हैं और मरने वालों में मुसलमानों की भी अच्छी-खासी तादाद होती है ।

इसके फ़ौरन बाद ये इस हमले के लिए किसी मनगढ़ंत मुस्लिम संगठन को ज़िम्मेदार ठहरा देते हैं, फिर इस (फ़र्ज़ी) संगठन से संबंध रखने के आरोप में कई बेक़सूर नवजवानों को जेल में डाल देते हैं । इसके फ़ौरन बाद ये किसी न किसी देश को उस आतंकी संगठन को प्रश्रय देने का आरोप लगाकर उस देश पर हमला कर देते हैं ।

यानी हर तरफ़ से मरता मुसलमान ही है और साथ ही इस्लाम धर्म भी बदनाम होता है ।

अत: हमें विरोधियों की साज़िशों को समझना होगा । इस्लाम का आतंकवाद से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि इस्लाम के विरोधी ही अस्ली आतंकवादी हैं ।

इस्लाम तो एक शांति-धर्म है, जिसका निष्पक्ष होकर अध्ययन किया जाना आवश्यक है ।

सच्चे ज्ञान की प्राप्ति

● डॉ॰ सैयद शाहिद अली

दुनिया की सारी नॉलेज़ (ज्ञान) सिर्फ़ यह बता सकती है कि इन्सान क्या है मगर इन्सान क्यों है ? यह कोई नहीं बता सकता । इन्सान के कुछ बुनियादी सवाल (Ultimate Questions) हैं, जिनका जवाब जानना उसके लिए बहुत ज़रूरी हैं । जैसे क्या इन्सान का कोई स्रष्टा है ? अगर है, तो वह इन्सान से क्या चाहता है ? इन्सान कहां से आया और क्यों आया ? मरने के बाद क्या होगा ? ज़िन्दगी की परिभाषा क्या है ? इन्सान आज़ाद है या मजबूर, इत्यादि । इन सवालों के जवाब इन्सान खुद क्यों नहीं तलाश कर सकता ?

इन्सान को सही ज़िन्दगी गुज़ारने और नुक़सान से बचने के लिए इन सवालों के भी जवाब जानना ज़रूरी है : इन्सान का खुद से रिश्ता कैसा हो ? इन्सान और इन्सान के बीच रिश्ता कैसा हो ? मर्द और औरत के बीच रिश्ता कैसा हो ? इन्सान और ब्रह्माण्ड के बीच रिश्ता कैसा हो ? इन्सान का मुसीबत व खुशहाली, दुख व सुख से रिश्ता कैसा हो ? इन्सान का खाने से कैसा रिश्ता हो ? इन्सान का दौलत व ग़रीबी के साथ रिश्ता कैसा हो ? इन्सान के लिए क्या सही है व क्या ग़लत और क्या लाभदायक है व क्या हानिकारक ?

ऊपर के सभी सवालों का जवाब एक इन्सान या सभी इन्सान मिलकर खुद से नहीं तलाश कर सकते, क्योंकि इन्सान के औज़ार (Tools) सीमित हैं । इन्सान के पास यह पांच टूल्स होते हैं–

1. बुद्धि (Intellect)
2. इन्द्रियां (Senses)
3. कल्पना शक्ति (Imagination)
4. ज्ञान (Knowledge)
5. अनुभव (Experience)

इन्सान के यह पांचों औज़ार अधूरे (Limited) हैं । किसी भी एक इन्सान या सभी इन्सानों को Total Past, Total Present और Total Future (भूत, भविष्य, वर्तमान) की न तो ज्ञान होता है और न अनुभव ।

अपनी इंद्रियों के द्वारा, जिस चीज़ को इन्सान महसूस करता है, वह उस पर यक़ीन कर लेता है । इन्सान, देखकर जानता है कि फूल खुबसूरत है । सुनकर, जानता है कि आवाज़ सुरीली है । चखकर, जानता है कि फल मीठा है । सूंघ कर, जानता है कि खाना अच्छा है । छूकर, जानता है कि बर्तन गर्म है ।

इन्सान की इंद्रियों की शक्ति सीमित (Limited) होती है । इन्सान की सभी इंद्रियां, एक ख़ास काम ही कर पाती हैं । देखने की इन्द्रिय से, सिर्फ़ रंगों की दुनिया में देखा जा सकता है । सुनने की इन्द्री से, सिर्फ़ आवाज़ों की दुनिया को महसूस किया जा सकता है । चख़ने, सूंघने और छूने की इंद्रियों से, एक विशेष क्षेत्र में ही काम लिया जा सकता है ।

इन्सान अपनी इंद्रियों से, दुनिया की सभी चीज़ों को महसूस नहीं कर सकता । इन्सान पूरा समुंद्र न देखकर, उसका उतना ही हिस्सा देख पाता है, जो आंखों के सामने होता है । इन्सान एक चींटी की आवाज़ नहीं सुन पाता । इन्सानी कान, आवाज़ की पांच हज़ार से बीस हज़ार के बीच की तरंग, ध्वनि ही सुन सकते हैं । इन्सान के कान, पांच हज़ार से कम आवाज़ की लहरों को नहीं सुन सकते और बीस हज़ार से ज़्यादा की आवाज़ की लहरें, कान के परदे फाड़ देती है । इन्सान चीनी की ख़ुशबू नहीं सूंघ सकता, जबकि चींटी और मक्खी, उसे दूर ही से सूंघ सकती हैं ।

कमरे में मौजूद टी॰वी॰ के सिग्नल्स को हम महसूस नहीं कर सकते, जब तक कि टी॰वी॰ न खोलें। Supersonic लहरों को हम नहीं सुन सकते, मगर रडार सुन सकते हैं । हाथी आवाज़ की लहरों के द्वारा आपस में बात करते हैं, मगर हम उन्हें नहीं सुन सकते । इन्सान की इंद्रियां मौजूदा चीज़ों में से सभी चीज़ों को महसूस नहीं कर सकतीं । बहुत सारी चीज़ें ऐसी हैं, जो इन्सान की इंद्रियों की पहुंच से बाहर हैं ।

इन्सान के पास "कल्पना शक्ति" (Power of Imagination) होती है । जिसकी मदद से वह बहुत-सी चीज़ों को जान लेता है, और उन पर विश्वास करता है । घर से दूर रहकर घर की कल्पना करना और उसे देख लेना । मगर इन्सान की कल्पना शक्ति भी सीमित है । इन्सान किसी ऐसी चीज़ की कल्पना कर ही नहीं सकता, जिसको उसने पहले अपनी इंद्रियों के द्वारा न महसूस किया हो ।

दुनिया में जो भी नयी चीज़ बनायी जाती है, वह हक़ीक़त में नयी नहीं होती, बल्कि मौजूदा चीज़ों का संकलन होती है । जैसे जहाज़, कंप्यूटर और सैल फ़ोन । पानी में बिजली, ज़मीन में लोहा, हवा में लहरें, पहले से मौजूद थीं, मगर आज इन चीज़ों को मिलाकर नया रूप दे दिया गया । दुनिया में जितने आर्ट के नमूने (Masterpiece) हैं, वे भी मौजूदा चीज़ों का नया संकलन हैं । जैसे परों, इन्सानी चेहरे वाले बैल का मुजस्मा (मूर्ति) । इन्सान का चेहरा, पंख, बैल यह सब मौजूद था, सिर्फ़ इन्हें मिला दिया गया । इसी तरह गुरुत्वाकर्षण (Gravity of earth) का नज़रिया, ज़मीन में आकर्षण पहले से था, मगर खोज बाद में हुई । इसी तरह सभी दवाइयों का बनना ।

इन्सान के पास सबसे अच्छी चीज़ 'अक़्ल' (Intelligence) है । मगर, इन्सान की बुद्धि पूरी नहीं होती । अक़्ल समय और जगह के बाहर काम नहीं कर सकती ।

इसी तरह इन्सानी अक़्ल, न तो भूतकाल की सभी बातों को, न वर्तमान की और न भविष्य की सारी बातों को समझ सकती है । यहां तक कि इन्सान की अक़्ल इतनी सीमित और मजबूर है कि ख़ुद इन्सान की हक़ीक़त 'रूह' (Spirit) को भी नहीं समझती ।

संदेष्टा और संदेश

इन्सान का जब बचपन गुज़रता है और वह बड़ा होने लगता है और उसमें समझ आ जाती है, तब उसकी अक़्ल ज़िन्दगी के बुनियादी सवालों पर ग़ौर करती है । इन्सान, ब्रह्माण्ड और ख़ुद को देखता है, उस पर चिंतन-मनन करता है । तब उसके सामने दो विकल्प (Option) होते हैं—या तो यह माने की इन्सान का कोई स्रष्टा (Creator) है, या यह माने कि इन्सान का कोई स्रष्टा नहीं है ।

यहां मानव बुद्धि तुलना करती है और सोचती है कि जब मामूली से मामूली चीज़ों जैसे पेन, कॉपी, मेज़, कुर्सी का बनाने वाला होता है, तो इन्सान जैसी ज़बरदस्त रचना का भी बनाने वाला होना चाहिए । लाखों सालों से इन्सान के बच्चे इन्सान ही पैदा हो रहे हैं, बंदर, कुत्ते या बिल्ली नहीं । यह भी प्रमाणित करता है कि इन्सान की पैदाइश संयोग नहीं, बल्कि योजनाबद्ध है । बुद्धि इस पहले नतीजे पर पहुंचती है कि इन्सान का स्रष्टा है ।

इन्सानी अक़्ल और ज़्यादा ग़ौर करती है । जब उसके सामने दो विकल्प होते हैं—या तो यह माने कि इन्सान का बनाने वाला स्रष्टा एक है, या यह माने कि इन्सान को बनाने वाले, एक से ज़्यादा हैं । यहां इन्सान की बुद्धि तुलना करती है, अगर एक देश के दो प्रधानमंत्री, एक क्लास के तीन टीचर और एक कार के चार ड्राइवर हों, तो व्यवस्था बिगड़ जाती है । इसके मुक़ाबले एक देश का एक प्रधानमंत्री, एक क्लास का एक टीचर और एक कार का एक ड्राइवर हो तो संकट पैदा नहीं होता । इसी तरह, अगर इन्सान के एक से अधिक स्रष्टा हों तो इन्सान (और ब्रह्माण्ड) की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी, नष्ट हो जाएगा । अक़्ल इस दूसरे निष्कर्ष पर पहुंचती है कि इन्सान का स्रष्टा एक है ।

इन्सान की बुद्धि और अधिक सोच-विचार करती है । तब उसके सामने दो विकल्प होते हैं—एक, इन्सान अपने स्रष्टा से संपर्क करे और मालूम करे कि उसे क्यों पैदा किया गया है ? दो, इन्सान का स्रष्टा ख़ुद इन्सान से संपर्क करे और उसे बताए कि उसे क्यों पैदा किया गया ? यहां बुद्धि इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि पहली बात असंभव है, क्योंकि इन्सान के पास अपने स्रष्टा से संपर्क करने का कोई भी साधन नहीं है ।

दूसरी बात संभव है, इन्सान और उसके स्रष्टा, दोनों में से ज़्यादा ताक़तवर इन्सान का स्रष्टा है । न्याय भी यही कहता है कि उसे ख़ुद ही इन्सान से संपर्क करना चाहिए और बताना चाहिए कि उसने इन्सान को क्यों पैदा किया ? इस तरह बुद्धि इस तीसरे निष्कर्ष पर पहुंचती है कि इन्सान का स्रष्टा ख़ुद इन्सान से संपर्क करे ।

इन्सान की बुद्धि अधिक चिंतन-मनन करती है । तब फिर, उसके सामने दो विकल्प होते हैं । एक, स्रष्टा प्रत्येक इन्सान से ख़ुद संपर्क करे और बताए कि वह इन्सान का स्रष्टा है और उसने इन्सान को क्यों पैदा किया है ? दूसरे, स्रष्टा कुछ इन्सानों से संपर्क करे और बताए; अपने बारे में और इन्सान की ज़िन्दगी के उद्देश्य के बारे में । फिर वह उन इन्सानों की ड्यूटी लगाए कि वे सभी इन्सानों तक

उसका यह संदेश (Message) पहुंचाए । यहां, इन्सानी अक्ल इस नतीजे पर पहुंचती है कि अगर खुदा ने इन्सान के लिए दुनिया की ज़िन्दगी को "इम्तिहान" के लिए बनाया है, तो उसे पहला विकल्प नहीं अपनाना चाहिए । क्योंकि इस तरह हर इन्सान को स्रष्टा के मौजूद होने का यक़ीन हो जाता, राज़ खुल जाता और इन्सान की खुदा को मानने या न मानने की आज़ादी भी ख़त्म हो जाती (जैसे इम्तिहान के किसी पेपर का आउट हो जाना)। इसके विपरीत अगर, स्रष्टा दूसरा विकल्प अपनाता, तब दुनिया इन्सानों के लिए इम्तिहान भी बन जाती, ईश्वर इन्सानों से संपर्क भी कर लेता । लोगों को ईश्वर का संदेश भी मिल जाता । इन्सानों को अपनी ज़िन्दगी का उद्देश्य भी मालूम हो जाता । ईश्वर है, इस बात पर यक़ीन करने या न करने की इन्सान को आज़ादी भी मिल जाती और बिना देखे ईश्वर का आज्ञापालन करने या न करने का मानव अधिकार भी बाक़ी रहता ।

इस तरह, बुद्धि इस चौथे निष्कर्ष पर पहुंची है कि स्रष्टा ने कुछ इन्सानों से संपर्क किया, उन पर अपना संदेश भेजा जिसमें इन्सान के मौलिक सवालों का जवाब दिया गया और उनको ज़िम्मेदारी दी कि वे सभी इन्सानों तक यह संदेश पहुंचाए । इस तरह, इन्सानों के लिए दुनिया इम्तिहान भी बनी और उन्हें ईश्वर को मानने और इन्कार करने की आज़ादी भी मिली ।

इसके बाद इन्सान की बुद्धि इस पांचवें निष्कर्ष पर पहुंचती है कि इन्सानों में से उन इन्सानों को तलाश करे (Search for Messengers) जिनसे स्रष्टा ने संपर्क किया । यहां पहुंचकर इन्सानी अक्ल अपनी अनुसंधान (Investigation) की शुरुआत उन लोगों से करती है, जिन्होंने इस बात का दावा किया है कि उन पर स्रष्टा का संदेश (Message) उतरा है और वे संदेष्टा (Messenger) हैं । बुद्धि उन दावा करने वालों और उनके उस संदेश जिसको वे ईश्वर का बता रहे हैं, को आलोचना की सख़्त कसौटी पर परखती है ।

इस संबंध में बुद्धि पहली बात यह देखती है कि उन संदेष्टाओं और ईशदूतों का इतिहास और उनका संदेश, उन्हीं की भाषा में विश्वसनीय तरीक़े से आज मौजूद है, या अधूरा है, या बदल दिया गया है । अर्थात इन्सानी अक्ल पैग़म्बरों और पैग़ाम (Message) की ऐतिहासिक विश्वसनीयता (Historical Authenticity) चेक करती है । इसके बाद अक्ल का दूसरा काम यह होता है कि वह उस पैग़ाम (जिसे स्रष्टा का कहा जा रहा है) को इन्सान की बनावट (Human Nature) से मिलाकर चेक करती है कि वह पैग़ाम (संदेश) इन्सान की बनावट से मेल खाता है या नहीं ? क्योंकि इन्सान का बनाने वाला और पैग़ाम (Religion) का देने वाला खुद स्रष्टा है, इसलिए असंभव है कि दोनों में टकराव हो ।

पैग़म्बर (ईशदूत) और पैग़ाम की पहचान के बाद इन्सान की अक्ल इस छठे निष्कर्ष पर पहुंचती है कि उसे अब स्रष्टा के पैग़ाम को मानना और उसका संपूर्ण आज्ञापालन करना चाहिए, न कि उस पर आपत्ति ।

पैग़म्बर (नबी/रसूल/संदेष्टता) ईश्वर का चुना हुआ वह व्यक्ति होता है, जिस पर ईश्वर ने अपना संदेश भेजा और उसे दूसरे व्यक्तियों तक पहुंचाने का दायित्व सौंपा । पैग़म्बर स्वयं मनुष्य होते हैं और मनुष्यों के लिए नमूना बनाकर भेजे जाते हैं । कोई व्यक्ति अपने परिश्रम व कुशलता से पैग़म्बर नहीं बन सकता, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है पैग़म्बर, ईशदूत मनोनीत करता है ।

ईश्वर ने मानव इतिहास के आरंभ से ही दुनिया के सभी भागों में अपने ईशदूतों को भेजा । पहले मनुष्य व ईशदूत हज़रत आदम (अलैहि०) थे और अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं ।

इस्लाम में ईशदूतों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि सभी ईशदूतों को माना जाए, चाहे उनके नाम हमें मालूम हों या न हों । क्योंकि सभी ईशदूत ईश्वर की तरफ़ से भेजे गये थे और उसी एक ईश्वर का कहना मानने की शिक्षा देते थे ।

कुरआन से कुछ ईशदूतों के नाम का पता चलता है जैसे हज़रत नूह (अलैहि०), हज़रत मूसा (अलैहि०), हज़रत ईसा (अलैहि०), हज़रत दाऊद (अलैहि०), हज़रत सुलेमान (अलैहि०) इत्यादि ।

पहले इन्सान व ईशदूत हज़रत आदम (अलैहि०) से लेकर अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तक अनेक ईशदूत आये, जो कि हर क़ौम (समुदाय) में भेजे गये । सभी ईशदूतों ने लोगों को उन्हीं की भाषा में ईश्वर का संदेश दिया ।

प्रश्न यह है कि बार-बार अनेक ईशदूत क्यों भेजे गये ? वास्तव में प्राचीनकाल में परिवहन एवं संचार के साधनों की कमी के कारण, एक जगह की ख़बर दूसरी जगह पहुंचना मुश्किल थी । दूसरे यह कि लोग ईश्वर के

संदेश को बदल देते थे, तब ज़रूरत होती थी कि दोबारा ईश्वर का संदेश आये ।

सभी ईशदूतों ने एक ही संदेश दिया कि ईश्वर एक है, दुनिया परीक्षा स्थल है और मरने के बाद ज़िन्दगी है । पहले के सभी ईशदूतों का मिशन लोकल था, मगर अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का मिशन यूनीवर्सल है । अंतिम ईशदूत पर ईश्वर का जो अंतिम सन्देश (क़ुरआन) उतरा उसकी सुरक्षा और संरक्षा की ज़िम्मेदारी स्वयं ईश्वर ने ली है । चौदह सौ से अधिक वर्ष हो चुके हैं, मगर आज तक उसे बदला नहीं जा सका । ईश्वर का संदेश अपनी अस्ल शक्ल (मूल रूप) में मौजूद है, इसलिए कि अब ज़रूरत नहीं है कि कोई नया ईशदूत आये ।

क़ुरआन का केन्द्रीय विषय इन्सान है । क़ुरआन इन्सान के बारे में ईश्वर की स्कीम को बताता है । क़ुरआन बताता है कि इन्सान को सदैव के लिए पैदा किया गया है और उसे शाश्वत जीवन दिया गया है । ईश्वर ने इन्सान के जीवन को दो भागों में बांटा है–मौत से पहले का समय (Pre-death period), जो अस्थायी है, इन्सान के इम्तिहान (परीक्षा) के लिए है । मौत के बाद का समय (Post-death period), जो स्वर्ग या नरक के रूप में दुनिया में किये गये अच्छे या बुरे कर्मों का बदला मिलने के लिए है । यह कभी न ख़त्म होने वाला स्थायी दौर है । इन दोनों के बीच में मौत एक तबादले के रूप में है ।

प्रकाशना (वह्य)

ईशदूत पर ईश्वर का संदेश नाज़िल (उतरना) होता है जिसे 'वह्य' कहते हैं । वह्य का शाब्दिक अर्थ है संदेश देना, सूचना देना, हृदय में बात डालना और छिपाकर बोलना इत्यादि । इस्लाम में जब 'वह्य' का शब्द बोला जाता है, तो इसका अर्थ होता है–

"ईश्वर का वह संदेश जो मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए ईशदूत पर उतारा गया ।"

क़ुरआन वह अंतिम 'वह्य' है जो अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर भेजी गयी । अल्लाह की ओर से 'वह्य' केवल ईशदूतों पर ही भेजी जाती थी । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर निम्नलिखित विभिन्न तरीक़ों से वह्य नाज़िल होती थी ।

सच्चे स्वप्न

1. हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं कि आप (सल्ल०) पर 'वह्य' का आरंभ इस प्रकार हुआ कि आप (सल्ल०) जो कुछ रात को सपने में देखते, दिन में बिल्कुल वैसा ही हो जाता ।

2. फ़रिश्ता (देवदूत) नज़र न आते हुए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के हृदय पर अल्लाह के संदेश को डाल देता ।

3. बड़े घंटे की आवाज़ की भांति । (हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि कभी-कभी मेरे ऊपर 'वह्य' बड़े घंटे की आवाज़ की भांति आती, जो मुझ पर बहुत कठिन होती)

4. फ़रिश्ते का मानवी रूप में 'वह्य' लेकर आना ।

5. फ़रिश्ते का अपने वास्तविक रूप में वह्य लेकर आना । (हज़रत आइशा के अनुसार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने हज़रत जिबरील (अलैहि०) को दो अवसर पर उनके वास्तविक रूप में देखा ।)

6. अल्लाह (ईश्वर) का बिना किसी माध्यम के, सीधे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के हृदय पर 'वह्य' नाज़िल करना ।

7. अल्लाह का बिना किसी माध्यम के सीधे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से बात करना ।

केवल एक

कुछ लोग मानते हैं : सभी धर्म सही हैं । सभी धर्म एक हैं । इस बात को मानने के दो परिणाम निकलते हैं । पहला, ईश्वर बेकार (Useless) काम करता है । ईश्वर ने इन्सान को एक धर्म दिया, फिर दूसरा, फिर तीसरा, फिर चौथा...। दूसरा, ईश्वर इन्सानों को आपस में लड़वाना चाहता है ।

वास्तविकता यह है कि सारे धर्म एक नहीं हैं, बल्कि अलग-अलग हैं । हां ! सभी (आसमानी) धर्मों का स्रोत (Source) एक ईश्वर (God) है । इसीलिए सभी धर्मों में मिलती-जुलती बातें नज़र आती हैं । सभी कहते हैं : झूठ मत बोलो, बड़ों की इज़्ज़त करो, छोटों से मुहब्बत करो, ईमानदार रहो, इंसाफ़ करो, अमन और शांति से रहो ।

आज मौजूद सभी धर्म अलग-अलग हैं । अगर सभी धर्म एक होते, तो सब पर एक साथ अमल किया जा सकता । किसी इन्सान के लिए, सभी धर्मों की शिक्षाओं पर एक साथ अमल करना असंभव है ।

सच्चाई यह है कि आज सभी धर्मों को दो क़िस्मों में बांटा जा सकता है । सुरक्षित धर्म (Preserved Religion) और असुरक्षित धर्म (Non-Preserved Religion)।

सुरक्षित धर्म वह है, जिसमें ख़ुदा का पैग़ाम, आज भी

हू-ब-हू उसी शक्ल में मौजूद हो, जिस शक्ल में उतरा। असुरक्षित धर्म वह है, जिसमें खुदा के संदेश को बदल दिया गया या भुला दिया गया। आज दुनिया में केवल इस्लाम ही पूर्णतया सुरक्षित धर्म है, जिसमें खुदा का पैग़ाम उसी भाषा में और उसी तरह मौजूद है, जिस तरह आज से चौदह सौ साल पहले उतरा था।

रुकावटें

इन्सान सत्य (Truth) को पसंद करता है और उसे पाना चाहता है, मगर सत्य के रास्ते में इन सात बड़ी रुकावटों की वजह से ज़्यादातर इन्सान पैग़म्बर (ईशदूत) की शिक्षा को अपनाने से रुक जाते हैं।

1. घमंड : "जो लोग धरती में नाहक़ बड़े बनते हैं, मैं (खुदा) अपनी निशानियों की ओर से उन्हें फेर दूंगा। यदि वे प्रत्येक निशानी देख लें, तब भी वे उस पर ईमान नहीं लाएंगे। यदि वे सीधा मार्ग देख लें, तो भी वे उसे अपना मार्ग नहीं बनाएंगे। लेकिन यदि वे पथभ्रष्टता का मार्ग देख लें, तो उसे अपना मार्ग ठहरा लेंगे। यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे ग़ाफ़िल रहे।" (कुरआन, 7:146)

2. दौलत : "हमने जिस बस्ती में भी कोई सचेतकर्ता भेजा तो वहां के संपन्न लोगों ने यही कहा कि "जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है, हम तो उसको नहीं मानते। (उन्होंने यह भी कहा कि) हम तो धन और संतान में तुमसे बढ़कर हैं और हम यातनाग्रस्त होने वाले नहीं।"

(कहो) : "निस्सन्देह मेरा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसे चाहता है नपी-तुली देता है। किन्तु अधिकांश लोग जानते नहीं। वह चीज़ न तुम्हारे धन हैं और न तुम्हारी संतान, जो तुम्हें हमसे निकट कर दे। अलबत्ता, जो कोई ईमान लाया और उसने अच्छा कर्म किया, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए उसका कई गुना बदला है, जो उन्होंने किया।" (कुरआन, 34:36-37)

3. सांसारिक ख़ुशहाली की वजह से स्वयं को नेक समझना : "क्या वे यह समझते हैं कि हम जो उनकी धन और संतान से सहायता किये जा रहे हैं, तो यह उनके लिए भलाइयों में कोई जल्दी कर रहे हैं ? नहीं बल्कि उन्हें इसका एहसास नहीं है।" (कुरआन, 23:55,56)

4. अटकल पर विश्वास करना : "धरती में अधिकतर लोग ऐसे हैं कि यदि तुम उनके कहने पर चले तो वे अल्लाह (ईश्वर) के मार्ग से तुम्हें भटका देंगे। वे तो केवल अटकल के पीछे चलते हैं और वे निरे अटकल ही दौड़ाते हैं।" (कुरआन, 6:116)

"उनमें से अधिकतर तो बस अटकल पर चलते हैं। निश्चय ही अटकल सत्य को कुछ भी दूर नहीं कर सकती।" (कुरआन, 10:36)

5. बुज़ुर्गों का अंधानुकरण : "हम (खुदा) ने जिस किसी बस्ती में तुम से पहले कोई सावधान करने वाला भेजा तो वहां के संपन्न लोगों ने बस यही कहा कि हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उन्हीं के पद-चिह्नों पर हैं, उनका अनुसरण कर रहे हैं।" (कुरआन, 43:23)

6. ग़लत विश्वास : "जान रखो कि विशुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिए है। रहे वे लोग जिन्होंने उससे हटकर दूसरे समर्थक और संरक्षक बना रखे हैं (कहते हैं :) 'हम तो उनकी बन्दगी इसीलिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करा दें।' निश्चय ही अल्लाह उनके बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा-जिसमें वे विभेद कर रहे हैं। अल्लाह उसे मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा और बड़ा अकृतज्ञ हो।" (कुरआन, 39:3)

"वे लोग अल्लाह से हटकर उनको पूजते हैं, जो न उनका कुछ बिगाड़ सकें और न उनका कुछ भला कर सकें। और वे कहते हैं : 'ये अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं।' कह दो : 'क्या तुम अल्लाह को उसकी ख़बर देने वाले हो, जिसका अस्तित्व न उसे आकाशों में ज्ञात है न धरती में ?' महिमावान है वह और उसकी उच्चता के प्रतिकूल है वह शिर्क, जो वे कर रहे हैं।"

(कुरआन, 10:18)

7. पथभ्रष्ट नेता : "निश्चय ही अल्लाह ने इन्कार करने वालों पर लानत (धिक्कार-फटकार) की है और उनके लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है, जिसमें वे सदैव रहेंगे। न वे कोई निकटवर्ती समर्थक पाएंगे और न (दूर का) सहायक। जिस दिन उनके चेहरे आग में उलटे-पलटे जाएंगे, वे कहेंगे : 'क्या ही अच्छा होता कि हमने अल्लाह का आज्ञापालन किया होता और रसूल का आज्ञापालन किया होता।'

वे कहेंगे : ऐ हमारे रब ! वास्तव में हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों की आज्ञा का पालन किया और उन्होंने हमें मार्ग से भटका दिया। ऐ हमारे रब ! उन्हें दोहरी यातना दे और उन पर बड़ी लानत कर।" (कुरआन, 33:67-68)

ग़ज़लें

1

धड़कनों में बस हवस की चाह है
आजकल का नौजवां गुमराह है

क़ैद किसने कर ली लोगों की ज़बान
इस ज़मीं पर कौन तानाशाह है

दर्द सबके हैं सुने जाते जहां
वो फ़क़त मालिक की इक दरगाह है

किसको फ़ुर्सत है किसी से वो मिले
बस, हर इक को वक़्त की परवाह है

चैन से गुज़रा नहीं कोई भी दिन
'अहद' हरदम ही लबों पर आह है

अमित अहद
गांव/डाक-मुज़फ़्फ़राबाद,
ज़िला-सहारनपुर-247129

3

ख़त्म अब सिलसिला कर चले
अपना वादा वफ़ा कर चले

तेरा गुलशन रहे सब्ज़तर
बस, यही हम दुआ कर चले

मुस्कराने को आये थे हम
अपने दिल को रुलाकर चले

रोने वाले तो रोते रहे
और हम मुंह छिपाकर चले

आदमी तो वही है 'फ़ज़ा'
सबसे दिल को मिलाकर चले ।

एम० इक़बाल फ़ज़ा जतारवी
मोमिन मदरसा (उर्दू) वार्ड-9,
नरैया मुहल्ला, टीकमगढ़-472001

2

कितना अजब मिज़ाज है लोगों का इन दिनों
रखते नहीं लिहाज़ भी रिश्तों का इन दिनों

अपने जिगर के ख़ून से लिखते नहीं अगर
होता न कुछ मक़ाम भी शेरों का इन दिनों

तुमने ज़मीर बेच के इन्आम पा लिये
ये वक़्त भी है मुर्दाज़मीरों का इन दिनों

पेड़ों की मुश्किलों को तो समझे हैं पेड़ ही
वर्ना किसे मलाल है शाखों का इन दिनों

मेरा ही घर जलाएंगी 'आशीष' ये कभी
बुझना बहुत है लाज़िमी लपटों का इन दिनों

आशीष दशोत्तर
39, नागर वास, रतलाम-457001

4

जो छोटी से भी छोटी गांठ सुलझाने नहीं देती
वो ख़सलत मुल्क में अम्नो-अमां आने नहीं देती

हमेशा बांटती है भूख ये दाने नहीं देती
सियासत ज़ख़्म देती है दवाख़ाने नहीं देती

उसूलों पर ज़रूरत पड़ रही भारी कई दिन से
मगर ख़ुद्दारी हरगिज़ हाथ फैलाने नहीं देती

पड़ोसी से मधुर रिश्ते बनाना जानते हैं वो
मदद करने पे रूह उनकी जिन्हें ताने नहीं देती

मुहब्बत, भाईचारा ही न मिट जाए कहीं 'विश्वास'
यही इक बात हमको गांव से जाने नहीं देती ।

कृपाशंकर श्रीवास्तव 'विश्वास'
एम-156, आशियाना कालोनी, लखनऊ-226012

हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०)

■ तालिब हाशिमी

सन् 8 हिजरी में रमज़ान के महीने में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) दस हज़ार सैनिकों के साथ बड़ी ही निराली शान से मक्का मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए। कुरैश पराजित हुए और मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई।

उनका यह प्रवेश दुनिया के अन्य विजयी शासकों के समान नहीं था। न लूट-मार, न क़त्ल व ग़ारतगिरी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) तो आम माफ़ी का ऐलान कर रहे थे। गिनती के कुछ दुष्ट लोगों को छोड़कर सभों के लिए यह घोषणा की जा रही थी कि आज किसी से कोई पूछ-गछ नहीं होगी। लेकिन मक्के में कुछ ऐसे आदमी भी थे जिनको यह विश्वास ही नहीं आ रहा था कि आप (सल्ल०) उन पर क़ाबू पा लेने के बाद उन्हें ज़िन्दा छोड़ देंगे। उन्होंने मक्का से भाग जाना ही मुनासिब समझा।

उन्हीं दिनों की एक घटना है। एक दिन एक महिला आप (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुईं और इस्लाम क़ुबूल करने की घोषणा की। फिर कहा :

"या अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! मेरा पति अपनी जान के भय से यमन चला गया है। यदि आप उसे अमान दे दें तो मैं उसको वापस ले आऊं।"

आप ने बिना किसी झिझक के कहा : "जाओ, मैंने उसको अमान दी।" आप (सल्ल०) की अमान पाकर उस महिला की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। क्योंकि उनके पति की मुस्लिम दुश्मनी मशहूर थी। उसने मुसलमानों को सताने में कभी कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं दिया था। इसीलिए वह महिला उसी समय अपने एक गुलाम के साथ पति की तलाश में निकल पड़ीं।

वह महिला जिसके पति को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अमान दे दी थी, वह कोई और नहीं इक्रिमा बिन अबू जेहल की पत्नी हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) थीं। हज़रत उम्मे हकीम एक मशहूर सहाबिया हैं। इनके पिता का नाम हारिस बिन हिशाम था और मां का नाम फ़ातिमा बिन्त वलीद था। उनकी मां हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की सगी बहन थीं। उनके पिता हारिस बिन हिशाम अबू जेहल के सगे भाई थे। ये दोनों भाई इस्लाम के कट्टर शत्रु थे, यही हाल उनकी मां और मामू ख़ालिद बिन वलीद का था। फिर शादी भी हुई तो अपने चचा के बेटे इक्रिमा बिन अबू जेहल से हुई जो इस्लाम दुश्मनी में अपने पिता से किसी तरह कम न था।

सन् 2 हिजरी में जंगे बद्र में अबू जेहल मारा गया तो इक्रिमा ने अपने पिता के छोड़े हुए काम को पूरा करने का बीड़ा उठाया और मक्का विजय तक हर मैदान में मुसलमानों को सताने में आगे रहा।

जंगे उहद में वह अपनी पत्नी उम्मे हकीम को भी अपने साथ ले गया और ख़ालिद बिन वलीद के साथ मिलकर मुसलमानों को बहुत नुक़सान पहुंचाया। अहज़ाब की जंग में बनू कनाना के साथ मिलकर मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई की।

सन् 8 हिजरी में बनू ख़ज़ाआ के क़त्लो- ग़ारतगिरी में हिस्सा लिया और हुदैबिया की संधि को व्यावहारिक रूप में तोड़ डाला। यहां तक कि मक्का विजय के दिन उसने कुछ मुश्रिकों के साथ मिलकर उस सैनिक दस्ते को रोकने की कोशिश की जो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में मक्का में प्रवेश करना चाह रही थी। ज्ञात हो कि ये वही ख़ालिद बिन वलीद थे जो कभी इक्रिमा के साथ मिलकर मुसलमानों पर हमला किया करते थे।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) ने तो इस्लाम क़ुबूल कर लिया लेकिन इक्रिमा की गतिविधियां वैसे ही जारी रहीं। यही कारण था कि इक्रिमा आप (सल्ल०) के पास नहीं आया और यमन की तरफ़ भाग निकला। इधर उसकी पत्नी हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०), उनके पिता हारिस बिन हिशाम (रज़ि०) और उनकी मां फ़ातिमा तीनों अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए और सच्चे दिल से इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) को अपने पति से बहुत मुहब्बत थी। इसीलिए उन्होंने अपने पति की अमान मांगी

जिसे आप (सल्ल०) ने क़ुबूल कर लिया, फिर वे इक्रिमा की खोज में चल पड़ीं ।

हज़रत इक्रिमा मक्का से भागकर बहीरा-ए-कुलजुम के तट पर पहुंचे । तट पर यमन जाने वाली नाव तैयार खड़ी थी । वे उस नाव में बैठ गया । नाव जब कुछ दूर चली और गहरे पानी में पहुंची तो तूफ़ान में घिर गयी । हज़रत इक्रिमा ने अपने माबूद लात और उज़्ज़ा को पुकारना शुरू कर दिया ।

मल्लाहों ने कहा : "यह अल्लाह को पुकारने का समय है । लात और उज़्ज़ा नाव को भंवर से बाहर नहीं निकाल सकते ।"

यह बात इक्रिमा के दिल को प्रभावित कर गयी । हाफ़िज़ बिन हिज्र (रह०) ने "इसाबा" में लिखा है कि इस अवसर पर इक्रिमा ने यह दुआ की ।

"ऐ अल्लाह, मैं प्रण करता हूं कि यदि इस तूफ़ान ने मुझे ज़िन्दा छोड़ दिया तो मैं स्वयं को मुहम्मद (सल्ल०) के सामने पेश कर दूंगा । वे बड़े रहीम व करीम हैं । (आशा है वे) मुझसे पूछ-गछ नहीं करेंगे ।"

अल्लाह का करना नाव उसी जगह किनारे आ लगी जहां से चली थी । हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) भी अपने पति को खोजती हुई तट पर आ पहुंचीं थीं । उन्होंने हज़रत इक्रिमा को बताया कि मैं एक ऐसे इन्सान के पास से आ रही हूं जो सबसे ज़्यादा नेक, सबसे ज़्यादा रहीम और सगे-संबंधियों का ख़्याल करने वाला है । मैंने उनसे तुम्हारे लिए अमान हासिल कर ली है । अब मेरे साथ उनकी सेवा में चलो ।

हज़रत इक्रिमा (रज़ि०) तुरंत मान गये और हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) के साथ आपकी सेवा में हाज़िर हुए । आप उन्हें देखकर बहुत खुश हुए और कहा : "स्वागत हो तुम्हारा ऐ परदेसी सवार ।"

हज़रत इक्रिमा (रज़ि०) ने अपनी पत्नी की ओर इशारा करते हुए कहा : "इसने मुझे बताया है कि आपने मेरी जान बख़्श दी है ।"

आप (सल्ल०) ने कहा : हां, उसने सच कहा है, तुम सुरक्षित और अमान में हो ।"

इस घटना से हज़रत इक्रिमा (रज़ि०) इतने प्रभावित हुए कि उसी समय सच्चे दिल से ईमान ले आये । और अहद लिया कि भविष्य में मेरा धन और मेरे प्राण सब अल्लाह के लिए जिहाद में लगेंगे । उसके बाद उनके ज़िन्दगी में इंक़िलाब आ गया । वे जितने कट्टर विरोधी थे उतने ही जोश से इस्लाम की सेवा करने लगे ।

सन 11 हिजरी में आप (सल्ल०) की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के दौरे ख़िलाफ़त में इरतिदाद के फ़ित्ना ने सिर उभारा । तो उन्होंने उसे रोकने के लिए सिर-धड़ की बाज़ी लगा दी । जब यह फ़ित्ना ख़त्म हुआ और मुसलमानों ने सीरिया पर चढ़ाई की तो हज़रत इक्रिमा (रज़ि०) अपनी पत्नी हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) के साथ सीरिया की मुहिम में शामिल हो गये । वहां उन्होंने अनेक अवसरों पर अपनी जवांमर्दी के जौहर दिखाये और अंत में अजनादीन की लड़ाई में लड़ते-लड़ते शहीद हो गये । इस तरह हज़रत उम्मे हकीम विधवा हो गयीं ।

हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) के इद्दत के दिन जब पूरे हो गये तो उन्हें अनेक जगहों से निकाह के पैग़ाम आये । वे सभों को मना करती रहीं । लेकिन जब हज़रत ख़ालिद बिन सईद (रज़ि०) का संदेशा आया तो वे तैयार हो गयीं । हज़रत ख़ालिद बिन सईद (रज़ि०) बड़े जलीलुल क़द्र सहाबी थे और आरंभिक सहाबियों में शुमार किये जाते थे । 400 दीनार मेह्र पर उनका निकाह हो गया ।

निकाह के बाद हज़रत ख़ालिद बिन सईद (रह०) ने रस्मे उरूसी (सुहाग रात) मनाने की इच्छा व्यक्त की । हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) ने कहा : "दुश्मन सिर पर खड़ा है । हर समय लड़ाई की आशंका है । इसलिए कुछ दिन रुक जाते और इत्मीनान के साथ यह रस्म होती तो अच्छा था ।

हज़रत ख़ालिद बिन सईद (रज़ि०) ने कहा, "मुझे इस युद्ध में अपने शहीद हो जाने का यक़ीन है ।" हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) ख़ामोश हो गयीं । एक पुल के नीचे यह रस्म अदा की गयी । सुबह को वलीमे की दावत थी । अभी लोग खाना खा ही रहे थे कि दुश्मनों ने हमला कर दिया । एक रोमी योद्धा मुसलमानों को ललकार रहा था । हज़रत ख़ालिद बिन सईद (रज़ि०) आगे बढ़े और लड़ते-लड़ते शहीद हो गये ।

हज़रत उम्मे हकीम (रज़ि०) अपने पति को शहीद होते देख रही थीं, जोश से भर उठीं । अपने कपड़ों को बांधा और टेंट की बल्ली उखाड़ कर लड़ाई में शरीक हो गयीं ।

लघुकथा

51 रुपये

चौक में चौराहे के नुक्कड़ पर मोहन स्वीट हाउस के नाम से मिठाइयों की एक बड़ी सी शोकेस सज्जित दुकान थी । शो केस के पारदर्शी शीशे में से अलग-अलग ट्रे में रखे गये मोतीचूर और बेसन के लड्डू, इमरती, रसगुल्ला, बर्कदार बरफ़ी, पेड़ा, गुलाबजामुन आदि स्वादिष्ट मिठाइयां आते जाते राहगीरों और देखने वालों का मन ललचा रही थी ।

सुबह का वक़्त । त्योहार होने की वजह से चौराहे पर रोज़ाना की अपेक्षा कुछ ज़्यादा ही चहल-पहल और भीड़भाड़ थी । एक कुशकाय वृद्ध भिक्षुक स्वीट हाउस के सामने आकर रुका और वह दीन स्वर में हाथ फैलाकर याचना करने लगा, 'बाबूजी! एक पैसा ।'

'पता नहीं कहां से सुबह-सुबह चले आते हैं । न बोहनी न बट्टा, खोपड़ी पर आकर सवार हो गये ।' सेठजी बड़बड़ाने लगे, 'चलो । फूटो यहां से ।'

थोड़ी देर बाद दस-बारह धार्मिक कार्यकर्ताओं-सदस्यों का जत्था छत्ते की मधुमक्खियों की तरह आ टपका । वे हाथ में रसीद पुस्तिका और क्लिपदार डाट पेन लिए हुए थे । सेठजी ने जान छुड़ाने की कोशिश की, बहानाबाज़ी की मगर समिति वाले टस से मस न हुए और उन्होंने 51 रुपये की रसीद काट दी । वे बोले, 'हम ऐसे नहीं मानने वाले । आपको इतना देना ही पड़ेगा । सेठ जी । पिछले साल आप कन्नी काट गये थे । मुहल्ले का मामला है ।''

सेठजी ने खिसियाये हुए कैश बाक्स खोला और 51 रुपये निकालकर समिति वालों को पकड़ा दिया ।

● विद्या प्रकाश

इन्सान

चौपाल में बैठे लोग अलाव तापते हुए हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे । हुक्के का कश खींचते-खींचते उनके बीच बातों का अलाव भी गर्म हो चला । बात खेत-खलिहान से होती हुई आज की राजनीति और नेताओं पर आ गयी । किसी ने राजनीति को वेश्या बताया तो किसी ने नेताओं को दलाल की संज्ञा दे डाली । उनमें इसी प्रकार की बहस शुरू थी । तभी काका हरचंद ने उनसे नेता और इन्सान के बीच के अंतर के बारे में पूछा तो मामला और भी ज़्यादा गर्म हो गया । कोई कुछ बोल रहा था तो कोई कुछ । जब वे बात-बात में आपस में उलझने लगे तो बोहरा जी ने उन्हें चुप कराते हुए कहा–

''अरे मूर्खों, इतनी छोटी-सी बात पर तुम लोगों ने महाभारत मचा दिया । इन्सान बना आदमी नेता बन सकता है । परन्तु नेता बना आदमी इन्सान नहीं बन सकता । नेता और इन्सान में बस इतना-सा अन्तर है ।''

बोहरा जी की बात सुनकर वे निरुतर हो गये ।

● रोहित यादव

थर्मामीटर

■ ओम प्रकाश बजाज

(इन्दौर, म०प्र०)

जीवन में हर प्रकार के अनुभव होते हैं कुछ मीठे कुछ कड़वे । कुछ ऐसे भी जो इन दोनों श्रेणियों में नहीं रखे जा सकते किन्तु होते ऐसे हैं जो अक्सर याद आ जाते हैं । और जब भी याद आते हैं चेहरे पर एक क्षीण-सी मुस्कान ले ही आते हैं !

कुछ साल पहले हरियाणा के भिवानी जाने का संयोग हुआ । वहां हमारी बेटी को बुख़ार हो गया । डॉक्टर साहब ने बताया कि टायफायड के लक्षण हैं । टेम्प्रेचर रिकार्ड करना होगा । थर्मामीटर लिया । दुकानदार स्वभाव से ही चिड़चिड़ा और गुस्सैल प्रतीत हुआ । बिना कारण झगड़ा करने पर उतारू । थर्मामीटर देते-देते बोला, ''अच्छी तरह देख लीजिए । बाद में वापस नहीं होगा । बेटी का बुख़ार नापा तो 102.4 तीन घंटे बाद फिर नापा तो 102.4 । तीसरी बार नापा तो वही । मन में शंका हुई । अपना टेम्प्रेचर लिया तो 102.4 । पत्नी का लिया तो 102.4 यक़ीन हो गया कि थर्मामीटर ठीक नहीं है । अब क्या करें । निश्चय ही दुकानदार न बदलेगा न वापस करेगा । फिर भी कुछ तो करना था । थर्मामीटर भी दूसरा लेना ही था । गये, कुछ ग्राहक खड़े थे । न जाने क्या सूझी कि मैंने जाते ही दुकानदार से पूछा–''तुम्हें बुख़ार है ? कितना है ?''

वह अचकचा गया । बोला, ''मुझे बुख़ार क्यों होगा ?''

सच्चा एकेश्वरवाद और इस्लाम

● मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ 'इस्लाही'

आप किसी भी परिवार और जाति से संबंध रखते हों, किसी भी रंग और नस्ल के हों, किसी भी वर्ग और पार्टी से संबंध रखते हों, कोई भी व्यवसाय करते हों और धरती के किसी भी हिस्से के रहने वाले हों, कोई भी भाषा बोलते हों और किसी भी सभ्यता को पसन्द करते हों, किसी भी धर्म-व्यवस्था और वाद (Ism) का अनुसरण करते हों या सिरे से धर्म, ईश्वर और किसी नैतिक सिद्धांत को स्वीकार ही न करते हों, आप कुछ भी हों, इस्लाम आपको यक़ीन की पूरी कुव्वत और पूरे ज़ोर के साथ दावत देता है कि आप उसके संदेश पर विचार करें । इस्लाम का दावा यह है कि दुनिया में एक पवित्र, सफल एवं उद्देश्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने और मृत्यु के पश्चात् मुक्ति एवं सफलता प्राप्त करने का एक मात्र रास्ता इस्लाम है ।

इस्लाम ईश्वर का भेजा हुआ एक सच्चा, स्वीकृत और पसन्दीदा दीन और एक संपूर्ण जीवन व्यवस्था है जिसकी बुनियाद तीन महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी धारणाओं पर है । वे धारणाएं हैं–एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व और परलोकवाद, और ये धारणाएं किसी वर्ग, समाज, राष्ट्र और क़ौम की मीरास नहीं हैं, बल्कि ये वे धारणाएं हैं जिनको अपना कर हर व्यक्ति, हर समाज और हर देश सफल हो सकता है और एक अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है ।

इस्लाम का यह बेमिसाल दावा हर समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति को झिंझोड़ता है कि वह यूं ही लापरवाही से सिर झटककर आगे न बढ़ जाए, अगर वह अच्छे और बुरे में भेद करने की कुछ भी योग्यता रखता है तो वह रुककर गंभीरता से विचार करे और सोच-समझकर बुद्धि और ज्ञान के प्रकाश में इस्लाम के संबंध में कोई फ़ैसला करे और सोची-समझी राह अपनाए । सिद्धांत और धारणाएं किसी क़ौम की मीरास नहीं होते, वे केवल उसकी जीवन-पूंजी होते हैं जो उनको अपनाए और उनके अनुसार जीवन व्यतीत करने का दृढ़ निश्चय करे ।

इस्लाम की बुनियादी धारणा है, जो आदमी को सिर्फ़ और सिर्फ़ एक अल्लाह या ईश्वर की बन्दगी और दासता की शिक्षा देती है ।

एक अल्लाह के आगे सजदा करने या झुकने वाला आदमी बाक़ी सारे बनावटी और नक़ली ख़ुदाओं के सजदे और दासता से छुटकारा पा जाता है और अल्लाह की नज़र में सारे इन्सान एक समान हो जाते हैं । अल्लाह की नज़र में किसी के बड़ा या छोटा होने का मानदंड उसका कर्म है । जिसका कर्म जितना अच्छा होगा, वह उतना ही बड़ा और ऊंचा होगा और जिसका कर्म जितना बुरा होगा वह उतना ही छोटा या अधम और नीच होगा । आदमी का कर्म ही उसे लोक-परलोक में सफल या असफल बनाएगा और स्वर्ग या नरक में ले जाएगा ।

इस विशाल और सुव्यवस्थित कायनात की रचना एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, तत्वदर्शी और दूरदर्शी ईश्वर ने अपनी अनुपम और असीम शक्ति से की है, वह इसको शून्य से अस्तित्व में लाया है । उसी अल्लाह के ज्ञान एवं तत्वदर्शिता के तहत यह सब कुछ एक अत्यंत सुव्यवस्थित एवं अनुशासित तरीक़े से संचालित हो रहा है । दुनिया में इससे ज़्यादा ग़लत बात कभी नहीं कही गयी है कि यह कायनात किसी रचयिता के बिना अपने आप बन गयी है; क्योंकि इस संसार का एक ही स्रष्टा और स्वामी है और वही संपूर्ण मानवजाति का वास्तविक पूज्य-प्रभु है, उसके सिवा कोई दूसरा इष्ट-पूज्य नहीं है–"अल्लाह ही उपास्य है, उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं ।". (क़ुरआन, 4:87)

इसलिए पवित्र क़ुरआन में सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ही ईश्वर के आगे झुकने को कहा गया है–

"न सूरज को सजदा करो, न चांद को, अल्लाह को सजदा करो जिसने उन सबको पैदा किया है ।"

(क़ुरआन, 41:37)

किसी भी मामले में कोई भी ईश्वर का साझीदार या समकक्ष नहीं । वह सर्वशक्तिमान है और हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है । कोई चीज़ उसकी शक्ति और सत्ता से बाहर नहीं, लाभ-हानि, स्वास्थ्य, बीमारी, सम्मान, अपमान,

अल्लाह ही एकमात्र उपास्य

धन-दौलत, सत्ता, आजीविका के साधन, संतान, जीवन, मृत्यु और भाग्य सब कुछ उसी के हाथ में हैं और सब कुछ उसी की ओर से है, हर चीज़ के ख़ज़ाने उसी के पास हैं।

बहुदेववाद वास्तव में सृष्टि-पूजा का नाम है अर्थात सृष्टि की विभिन्न वस्तुओं और जीव-जंतुओं को ईश्वर अथवा उसका समकक्ष समझकर उनकी पूजा-अर्चना का नाम बहुदेववाद है। दूसरे शब्दो में, किसी सृष्ट जीव-जंतु या पदार्थ को ईश्वर का सहभागी और समकक्ष ठहराना, उसके गुणों में किसी को साझीदार मानना और उसके अधिकारों एवं प्रभुत्व में किसी को साझीदार और समकक्ष ठहराना ही बहुदेववाद है, जो अल्लाह की निगाह में सबसे बड़ा अन्याय, अत्याचार और महापाप है।

अल्लाह ही सारे सर्वोच्च गुणों का मालिक है, ये गुण न किसी दूसरी हस्ती में हो सकते हैं और न कोई दूसरी हस्ती इन सर्वोच्च गुणों में खुदा की साझीदार है और न खुदा के अधिकार, सत्ता और इस विशाल कायनात के संचालन में किसी दूसरे का कण भर भी किसी तरह का दख़ल है। विशुद्ध एकेश्वरवाद की यह अवधारणा एक ऐसी स्पष्ट वास्तविकता है, जो कायनात के कण-कण से प्रकट हो रही है। इन्सान अगर साफ़ दिल के साथ खुली आंखों से कायनात का निरीक्षण, अध्ययन और अवलोकन करे तो वह अवश्य ही इस सच्चाई को पा लेगा।

क़ुरआन का आह्वान

क़ुरआन इसी रोशन सच्चाई की ओर पूरी मानवजाति को बुलाता है और इस सच्चाई को समझाने और दिल में बिठाने के लिए यही सादा और स्वाभाविक अंदाज़ अपनाता है। वह तर्क-वितर्क और शास्त्रार्थ का शुद्ध तर्कपूर्ण अंदाज़ नहीं अपनाता, वह इन्सान की प्रकृति से अपील करता है, बुद्धि-विवेक की सोई हुई शक्तियों को जगाता है और इन्सान को विभिन्न प्रकार से झिंझोड़ता है कि संसार की निशानियों से गफ़लत और लापरवाही के साथ न गुज़रो, खुली आंखों से कायनात का अवलोकन और निरीक्षण करो, कायनात की रचना और इसकी आश्चर्यजनक व्यवस्था पर विचार करो।

ज़मीन-आसमान और खुद इन्सान के अस्तित्व में फैली हुई शिक्षाप्रद निशानियों पर सोच-विचार करो। तुम्हारी सद्बुद्धि और नेक फ़ितरत अवश्य ही इस परिणाम पर पहुंचेगी कि इस संसार का एक ही स्रष्टा और स्वामी है और वही इन्सानों का वास्तविक माबूद (पूज्य-प्रभु) है, उसके सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं।

अब रहे ये प्रश्न कि वास्तविक पूज्य-प्रभु के साथ आदमी का सही संबंध क्या है? उसकी हस्ती और गुणों का सही ज्ञान क्या है? उसकी बन्दगी और उपासना का सही तरीक़ा क्या है? और उसकी प्रसन्नता किस प्रकार हासिल की जा सकती है? तो इन मूल प्रश्नों के सही उत्तरों को प्राप्त करना बुद्धि-विवेक की पहुंच से बाहर है। यही वह स्थान है जहां से धर्म की आवश्यकता की शुरुआत होती है और इन्सान ईश्वर के मार्गदर्शन का इच्छुक और अभिलाषी होता है।

क़ुरआन का दावा यह है कि ईश्वर ने हर दौर में इन्सान की इस आवश्यकता को पूरा किया है और हमेशा अपने दूतों के द्वारा मार्गदर्शक ग्रंथ भेजकर मनुष्य का मार्गदर्शन किया है। क़ुरआन भी इसी तरह का एक अनुपम मार्गदर्शक ग्रंथ है, जो पूरी मानवजाति के मार्गदर्शन के लिए अवतरित हुआ है और यह उन सारे मार्गदर्शक ग्रंथों का अंतिम और सर्वांगपूर्ण संस्करण है जो इससे पूर्व अवतरित हो चुके हैं। खुदा की हस्ती और गुण का सही और प्रमाणिक ज्ञान, उसके एक और केवल एक होने की सही और प्रामाणिक अवधारणा (एकेश्वरवाद), उसकी बन्दगी और उपासना का सही, सर्वाधिक प्रचलित और लोकप्रिय तरीक़ा केवल वही है, जो क़ुरआन प्रस्तुत करता है; मगर क़ुरआन की शिक्षा को समझने और उसके मार्गदर्शन से लाभांवित होने के लिए बुनियादी शर्त यह है कि आदमी अज्ञानता, पूर्वाग्रह, पक्षपात, हठधर्मी और पूर्वजों का अंधा अनुसरण जैसी भावनाओं से दिल को साफ़ करके एक सत्य को जानने वाले की हैसियत

से उसका अध्ययन करे, और उसके बुलावे पर विशुद्ध बुद्धि की रोशनी में विचार करे । कुरआन बिना किसी भेद-भाव के संपूर्ण मानव-जाति का आह्वान करता है–

"ऐ लोगो ! बन्दगी करो अपने उस रब (पालनहार प्रभु) की जो तुम्हारा और तुमसे पहले जो लोग हुए हैं उन सबका पैदा करने वाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसी प्रकार हो सकती है । वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती का बिछौना बिछाया, आकाश की छत बनायी, ऊपर से पानी बरसाया और उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार निकालकर तुम्हारे लिए रोज़ी जुटाई । अतः जब तुम यह जानते हो तो दूसरों को अल्लाह का समकक्ष न ठहराओ ।

और अगर तुम्हें इस बात में संदेह है कि यह किताब जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, यह हमारी है या नहीं, तो इस जैसी एक ही सूरा बना लाओ और अपने मत के सारे ही लोगों को बुला लो, एक अल्लाह को छोड़कर बाक़ी जिस-जिसकी चाहो सहायता ले लो, अगर तुम सच्चे हो तो यह काम करके दिखाओ । लेकिन अगर तुमने ऐसा न किया, और निश्चय ही कभी नहीं कर सकते, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे मनुष्य और पत्थर, जो जुटाई गयी है सत्य को न मानने वालों के लिए ।"

(कुरआन, 2:21-24)

चार महत्वपूर्ण वास्तविकताएं

कुरआन की ये चार आयतें चार महत्वपूर्ण वास्तविकताओं की ओर मार्गदर्शन करती हैं और हर ऐसे व्यक्ति को सोच-विचार करने की दावत देती हैं जो सत्य प्रेमी हो और जिसका दिल-दिमाग़ सत्य के स्वागत के लिए हर समय खुला हुआ हो–

1. शिर्क (बहुदेववाद) के लिए संसार में कोई तर्क और आधार नहीं, इसलिए बुद्धि-विवेक और ज्ञानवान व्यक्ति के लिए कदापि उचित नहीं कि वह बहुदेववाद में लिप्त हो ।

2. एकेश्वरवाद एक स्पष्ट वास्तविकता है । एक ही ईश्वर ने मनुष्य को पैदा किया है और वही उसका पालन-पोषण कर रहा है । इसलिए बुद्धि एवं विवेक की मांग यह है कि इन्सान एक ही वास्तविक ईश्वर की उपासना करे ।

3. एकेश्वरवाद पूरी मानवजाति के लिए एक सर्वमान्य, सामान्य कृपादान और दयालुता है । यह किसी जाति विशेष का जातीय विश्वास नहीं है । इसलिए हर इन्सान के लिए सही रवैया यही है कि वह एकेश्वरवाद की वास्तविकता को समझे और स्वीकार करे ।

4. एकेश्वरवाद और पालनहार प्रभु की बन्दगी और उपासना की केवल वही अवधारणा सही, लोकप्रिय और सर्वमान्य है जो कुरआन ने प्रस्तुत की है । इसके विरुद्ध जो कुछ है वह पूर्णतः असत्य और खंडन करने योग्य है।

अब हम संक्षेप में इन चारों वास्तविकताओं का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं–

ईश्वर की हस्ती में साझीदार ठहराने का अर्थ

ईश्वर की हस्ती में किसी दूसरे को साझीदार मानने का अर्थ यह है कि सृष्ट जीव में से किसी को उसका बेटा, बेटी, मां-बाप ठहराया जाए और सृष्ट जीव को उसकी हस्ती का अंश माना जाए, जैसा कि यहूदी हज़रत उज़ैर (अलैहि०) को ख़ुदा का बेटा क़रार देते हैं और ईसाई हज़रत ईसा (अलैहि०) को ख़ुदा का बेटा क़रार देते हैं या जैसा कि भारत में बहुदेववाद को मानने वाले देवी-देवताओं के बारे में यह धारणा रखते हैं और कुछ गरोह तो सृष्टि की प्रत्येक वस्तु को ईश्वर या ईश्वर का अंश ठहरा देते हैं और किसी चीज़ को भी ईश्वर की हस्ती से अलग नहीं समझते अर्थात वे प्रत्येक जीव-जंतु या वस्तु को ईश्वर का रूप मानते हैं और उसकी पूंजा-अर्चना करते हैं ।

कुरआन इस धारणा का घोर खंडन करता है–

"कह दीजिए, अल्लाह एक है । अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं । न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान, और न कोई उसका समकक्ष है ।"

(कुरआन, 112:1-4)

"और उन लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझीदार ठहरा दिया, हालांकि इनको उसने पैदा किया है और किसी ज्ञान और प्रमाण के बिना उसके लिए बेटे और बेटियां गढ़ लीं, हालांकि वह पवित्र और उच्च है उन संबंधों से जो ये लोग बयान करते हैं ।" (कुरआन, 6:100)

ईश्वर के गुणों में साझीदार ठहराने का अर्थ

ईश्वर के गुणों में किसी सृष्ट जीव को साझीदार बनाने का अर्थ यह है कि जो सर्वोच्च गुण, ज्ञान और तत्वदर्शिता, अधिकार और सामर्थ्य, रचना-कार्य और दूरदर्शिता आदि ईश्वर के लिए ही ख़ास हैं और उसकी हस्ती में खुद मौजूद हैं; किसी प्राणी को उनमें ईश्वर का साझीदार माना जाए और यह समझा जाए कि इस प्राणी में भी ये गुण पाये जाते हैं। मिसाल के तौर पर, पैदा करना ईश्वर का विशेष गुण है और केवल ईश्वर ही संसार का एकमात्र स्रष्टा (पैदा करने वाला) है। यह मानना कि ईश्वर के सिवा किसी सृष्ट जीव ने भी संसार या इसके किसी अंश को पैदा किया है चाहे वह बुद्धिमत्ता हो या आकाश हो या कोई और चीज़।

जैसा कि यूनानी दार्शनिकों का विचार था कि ईश्वर ने विवेक प्रथम को पैदा किया। विवेक प्रथम ने विवेक द्वितीय और आकाश प्रथम को पैदा किया और फिर इसी क्रम से संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई। हिन्दू धर्म के मानने वालों में जो बात ज़्यादा लोकप्रिय है वह यह है कि "ईश्वर ने पहले पानी पैदा किया, जिस पर एक सुनहरा अंडा तैर रहा था। फिर वह उस अंडे में दाख़िल हुआ और ब्रह्मा बनकर प्रकट हुआ। यही सबसे पहला सृष्ट जीव है। फिर ब्रह्मा ने देवता, आकाश चन्द्रमा, सूर्य, संसार और इन्सान पैदा किये।"

(इस्लाम का हिन्दुस्तानी तहज़ीब पर असर, उर्दू, पृष्ठ-25)

ईरान के मजूसी (अग्निपूजक) दो स्रष्टा मानते थे, एक अच्छाई का जन्मदाता जिसको वे 'यज़दान' कहते थे और दूसरा बुराई का जन्मदाता जिसको वे 'अहुरमन' कहते थे। कुरआन इस बहुदेववाद का खंडन करता है और कहता है कि धरती और आकाश, मानव और पूरी सृष्टि मात्र एक ईश्वर की रचना है और इस कार्य में कोई दूसरा उसका साझीदार नहीं और न किसी सृष्ट जीव में यह गुण मौजूद है–

"ऐ लोगो! एक मिसाल दी जाती है, ध्यान से सुनो। जिन पूज्यों को तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो, वे सब मिलकर अगर एक मक्खी भी पैदा करना चाहें, तो नहीं कर सकते। और (उनका हाल तो यह है कि) अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले जाए तो वे उसे छुड़ा भी नहीं सकते। सहायता चाहने वाले भी निर्बल और जिनसे सहायता चाही जाती है वे भी निर्बल।" (कुरआन, 22:73)

"मैंने आकाश और धरती पैदा करते समय उनको नहीं बुलाया था और न स्वयं उनको बनाने में उन्हें सम्मिलित किया था। मेरा यह काम नहीं है कि गुमराह करने वालों को अपना सहायक बनाया करूं।" (कुरआन, 18:51)

इसी तरह पूरी कायनात का अत्यंत सुव्यवस्थित ढंग से प्रबंध और संचालन भी वह अकेले कर रहा है, कोई दूसरी हस्ती ऐसी नहीं, जो इस प्रबंध-व्यवस्था, सामर्थ्य और अधिकार में खुदा के साथ सम्मिलित हो–

"और कहो : प्रशंसा है उस अल्लाह के लिए, जिसने न किसी को बेटा बनाया, न कोई शासन ही में उसका साझीदार है, और न बेबस है कि कोई उसका हिमायती हो और उसकी बड़ाई बयान करो, उच्च कोटि की बड़ाई।" (कुरआन, 17:111)

इसी तरह ज्ञान और तत्वदर्शिता भी ईश्वर का विशेष गुण है। सिर्फ़ वही है जो कायनात की अगली-पिछली वास्तविकताओं और समस्त खुली-छिपी बातों से पूरी तरह अवगत है, और इस कार्य में कोई भी उसका साझीदार नहीं है–

"और सारे उच्चतर गुण खुदा ही के लिए हैं। वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।" (कुरआन, 16:60)

ईश्वर के अधिकारों में साझीदार ठहराने का अर्थ

ईश्वर के अधिकारों में साझीदार ठहराने का अर्थ यह है कि उसकी उपासना और पूजा, आज्ञापालन और दासता में किसी और को सम्मिलित किया जाए। जब खुदा ही स्रष्टा, स्वामी, पालनहार और शासक है और समस्त सर्वोच्च गुण उसी के लिए हैं तो उपासना और आज्ञापालन का पात्र भी केवल वही है। केवल वही इसका हक़दार है कि उसकी ओर पलटा जाए और उसके आगे सजदा किया जाए, केवल उसी की पनाह ढूंढ़ी जाए, केवल उसी से दुआ की जाए और केवल उसी की चाहत और प्रसन्नता को जीवन का उद्देश्य बनाया जाए, केवल उसी से मुहब्बत की जाए, केवल उसी से डरा जाए और केवल उसी के नाम पर कुरबानियां की जाएं। इन समस्त अधिकारों में कोई दूसरा

उसका साझीदार नहीं–

"तुम अल्लाह को छोड़कर जिन्हें पूज रहे हो, वे तो केवल बुत हैं और तुम एक झूठ गढ़ रहे हो । वास्तव में अल्लाह के सिवा जिनकी तुम पूजा करते हो वे तुम्हें कोई रोज़ी भी देने का अधिकार नहीं रखते । अल्लाह से रोज़ी मांगो और उसी की बन्दगी करो और उसके आगे कृतज्ञता दिखाओ । उसी की ओर तुम पलटाए जाने वाले हो ।"

(कुरआन, 29:17)

उपासना और आज्ञापालन का एक स्पष्ट प्रदर्शन सजदा है, और केवल अल्लाह ही का यह हक़ है कि इन्सान उसके आगे सजदा करे–

"अल्लाह की निशानियों में से हैं ये रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा । तुम लोग न तो सूरज को सजदा करो, न चांद को, बल्कि उस अल्लाह ही को सजदा करो, जिसने उन सारी चीज़ों को पैदा किया है, अगर वास्तव में तुम उसी की बन्दगी (उपासना) करने वाले हो ।"

(कुरआन, 41:37)

मार्गदर्शन और हिदायत केवल अल्लाह का काम है और उसी का हक़ है कि उसका आज्ञापालन किया जाए–

"उनसे कहो : तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में से कोई भी ऐसा है जो सच्चाई की राह दिखाता हो ? आप कहिए कि अल्लाह ही सत्य का मार्ग दिखाता है । फिर बताओ जो सत्य का मार्ग दिखाता है वह ज़्यादा हक़दार है कि उसका अनुसरण किया जाए या वह जो खुद ही मार्ग न पाता हो, जब तक कि उसे मार्ग न दिखाया जाए ? आख़िर तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे-कैसे फ़ैसले करते हो ?"

(कुरआन, 10:35)

कायनात की हर चीज़ ईश्वर के आज्ञापालन में लगी हुई है । वही इस लायक़ है कि इन्सान उसका डर रखे और उसके सिवा किसी दूसरी हस्ती का डर न रखे–

"अल्लाह का आदेश है कि 'दो-दो पूज्य-प्रभु न बना लो । पूज्य-प्रभु तो बस एक ही है । अतः तुम मुझी से डरो ।' जो कुछ आकाशों और धरती में है सब उसी का है । और विशुद्ध धर्म उसी का (पूरी कायनात में) चल रहा है । फिर क्या अल्लाह को छोड़कर तुम किसी और का डर रखोगे ?"

(कुरआन, 16:51,52)

इसी तरह अपने मन की इच्छाओं की पूजा और अपने जैसे इन्सानों की उपासना और आज्ञापालन भी खुदा के अधिकारों में शिर्क है–

"फिर क्या तुमने कभी उस व्यक्ति की दशा पर भी विचार किया, जिसने अपने मन की इच्छा ही को अपना उपास्य बना रखा है ?" (कुरआन, 45:23)

"उन्होंने अल्लाह से हटकर अपने धर्मज्ञाताओं और संसार-त्यागी संतों और मरयम के बेटे ईसा को अपना रब बना लिया–हालांकि उन्हें इसके सिवा और कोई आदेश नहीं दिया गया था कि अकेले ईष्ट-पूज्य की वे बन्दगी करें, जिसके सिवा कोई और ईष्ट-पूज्य नहीं । उसकी महिमा के प्रतिकूल है वह शिर्क जो ये लोग करते हैं ।"

(कुरआन, 9:31)

कुरआन बहुदेववाद के सारे रूपों का खंडन करता है और उन तमाम तौर-तरीक़ों का भी खंडन करता है, जिनसे किसी तरह भी शिर्क का प्रदर्शन होता है । वह शिर्क को सरासर झूठ क़रार देता है, वह कहता है, शिर्क के लिए कोई बौद्धिक और ठोस बुनियाद, कोई तर्क और कोई प्रमाण नहीं है । यह मात्र भ्रम और गुमान, अज्ञान और अंधा अनुसरण और बहुत ही आधारहीन विचारधारा है ।

यह सरासर अन्याय और अत्याचार है जिसका नतीजा इस दुनिया में भी अपमान और तबाही है और मरणोत्तर जीवन में भी बहुत बड़ा घाटा, शिक्षाप्रद अपमान और सदैव के लिए दुखदायी यातना है । यह एक ऐसी ज्ञानहीन विचारधारा है जिससे कायनात की प्रकृति कदापि मेल नहीं खाती और संपूर्ण संसार की व्यवस्था पूर्ण रूप से इसका खंडन करती है–

"और जो कोई अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को पुकारता है उसके पास इसका कोई प्रमाण नहीं है ।"

कुरआन, 23:117)

"लोगों ने अल्लाह के कुछ साझीदार ठहरा रखे हैं । (ऐ नबी !) इनसे कहो (अगर वास्तव में वे अल्लाह के अपने बनाए हुए साझीदार हैं तो) तनिक उनके नाम लो कि वे कौन हैं ? क्या तुम अल्लाह को एक नयी बात की सूचना दे रहे हो, जिसे वह अपनी धरती में नहीं जानता ? या तुम लोग बस यूं ही जो मुंह में आता है, कह डालते हो ?"

(क़ुरआन, 13:33)

ख़ुदा के सिवा दूसरे सारे गढ़े हुए माबूद (उपास्य) अटकल और भ्रम की पैदावार हैं और यह सबसे बड़ा अपराध है कि मनुष्य किसी ज्ञान और प्रमाण के बिना दूसरों को ख़ुदा की ख़ुदाई में साझीदार बनाने लगे–

"जान लो ! आकाशों के बसने वाले हों या धरती के, सबका स्वामी अल्लाह है और जो लोग अल्लाह के सिवा कुछ (अपने मनगढ़ंत) साझीदारों को पुकार रहे हैं, वे निरे भ्रम और अटकल के पीछे चल रहे हैं और वे निरी अटकल दौड़ाते हैं ।" (क़ुरआन, 10:66)

"और जिसने अल्लाह के साथ किसी और को साझीदार ठहराया, उसने तो बहुत ही बड़ा झूठ रचा और घोर पाप की बात की ।" (क़ुरआन, 4:48)

किसी को ईश्वर का साझीदार ठहराना बहुत बड़ा ज़ुल्म और अत्याचार है, इससे बड़ा कोई ज़ुल्म और अत्याचार नहीं–

"याद करो जब लुक़मान अपने बेटे को सदुपदेश दे रहा था, तो उसने कहा : मेरे बेटे ! अल्लाह के साथ किसी को साझी न ठहराना । निश्चय ही शिर्क (बहुदेववाद) बहुत बड़ा ज़ुल्म है ।" (क़ुरआन, 31:13)

शिर्क मानव-प्रकृति का सबसे बड़ा अपमान और भयंकर तबाही है–

"और जो कोई अल्लाह के साथ साझी ठहराए तो मानो वह आकाश से गिर गया । अब या तो उसे पक्षी उचक ले जाएं या वायु उसको बहुत ही दूरस्थ स्थान पर ले ज़ाकर पटक फेंके ।" (क़ुरआन, 22:31)

आसमान से गिरने का अर्थ यह है कि शिर्क की गन्दगी में गिरने वाला वास्तव में प्रकृति की अत्यंत ऊंचाई और बुलन्दी से अपमान के गहरे गड्ढे में गिर गया, क्यों मानव-प्रकृति केवल उसी हस्ती को अपना माबूद (उपास्य) क़रार दे सकती है जो बुलन्दी और महानता का मात्र अकेला स्रोत है और सबसे निम्नकोटि के प्राणियों के समक्ष उपासना और दासता करना प्रकृति की घोर गिरावट और बहुत बड़ा अपमान है । मानव-प्रकृति की वास्तविक ज़िन्दगी और जागृति यही है कि वह एकेश्वरवाद पर क़ायम रहे, एकेश्वरवाद को छोड़कर शिर्क को स्वीकार करना वास्तव में मानव-प्रकृति की मौत है । एकेश्वरवाद की बुलन्दी से शिर्क के गड्ढे में गिरने वाला इन्सान वास्तव में एक मुर्दा लाश है, जिसको मुरदार खाने वाले जानवर नोच-नोचकर खाएं, या हवा के तेज़ झोंके बेइज़्ज़ती और अपमान के साथ ले जाकर दूर किसी गहरे गड्ढे में पटक दें । बहुदेववाद लोक-परलोक (दुनिया और आख़िरत) की तबाही और अपमान है, असत्य गंभीर अपराध और बदतरीन बग़ावत है और ऐसी घोर नमक हरामी और कृतघ्नता है कि इसका परिणाम सदैव के लिए दुखदायी यातना और ईश्वरीय प्रकोप और विपदा है–

"बेशक जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया, वे अवश्य अपने पालनहार प्रभु के प्रकोप में ग्रस्त होकर रहेंगे और सांसारिक जीवन में अपमानित होंगे । झूठ गढ़ने वालों को हम ऐसा ही दंड (बदला) देते हैं ।"

(क़ुरआन, 7:152)

"निश्चय ही तुम और तुम्हारे वे आराध्य, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो, सब नरक का ईंधन है । और तुम सबको उसी घाट उतरना है ।" (क़ुरआन, 21:98)

बहुदेववाद की धारणा पर आप जितना अधिक सोच-विचार करेंगे, यह वास्तविकता स्पष्ट होती जाएगी कि बहुदेववाद के उद्भव और विकास में बुद्धि-विवेक और चिंतन-मनन का कोई दख़ल नहीं है । इसकी शुरुआत भ्रम, कल्पना, अनुमान और अज्ञान के कारण हुई है और इसको अपनाने वाले वही लोग होते हैं जो सोच-विचार, बुद्धि-विवेक और चेतना तथा अनुभूति की शक्तियों से खुद को वंचित कर लेते हैं, और जानवरों की तरह नासमझी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं–

"उनके पास दिल है, किन्तु वे उनसे सोचते नहीं । उनके पास आंखें हैं, किन्तु वे उनसे देखते नहीं । उनके पास कान हैं, किन्तु वे उनसे सुनते नहीं । वे पशुओं के समान हैं, बल्कि उनसे भी अधिक गये-गुज़रे । ये वे लोग हैं जो अचेत अवस्था में खोये गये हैं ।" (क़ुरआन, 7:179)

बहुदेववाद की वास्तविकता और कमज़ोरियां स्पष्ट होने से अपने आप यह वास्तविकता उजागर हो जाती है कि एकेश्वरवाद ही एक स्पष्ट और अटल सच्चाई है और उसी पर ईमान लाना बुद्धि एवं विवेक का प्रमाण है ।

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

Contact Us : 9022665544, 9869641648

कुछ विचारणीय बातें

■ मुहम्मद इक़बाल मुल्ला

मानव जाति को एक ऐसे मार्गदर्शन और सिद्धांतों की आवश्यकता है, जिससे कि वह अपने व्यक्तिगत व सामूहिक जीवन का निर्माण कर सके और अपना जीवन सुखमय एवं शांतिपूर्वक व्यतीत करे और साथ ही साथ उसका इस प्रकार सर्वांगीण विकास हो कि उसके भौतिक एवं आर्थिक जीवन और आध्यात्मिक एवं नैतिक पहलुओं के बीच आपसी टकराव न हो और न ही संतुलन बिगड़े ।

विचार करने से पता चलता है कि मानव जीवन से संबंधित मूल प्रश्न ये हो सकते हैं कि उसे पैदा करने वाला और इस पूरे ब्रह्माण्ड का निर्माता कौन है ? मानव और 'उसके' बीच का संबंध किस प्रकार का है ? जीवनदाता के निकट मनुष्य के जीवन का उद्‌देश्य क्या है ? संसार के रचयिता एवं निर्माता की इच्छा क्या है ? इस जीवन का अंत मृत्यु है, या मृत्यु के बाद भी कोई जीवन है, अगर है तो 'दूसरा' जीवन कैसे सफल हो सकता है ?

ये ऐसे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर मानव इतिहास के बुद्धिजीवी और शुभचिंतक समय-समय पर देने का प्रयास करते रहे हैं । उन्होंने खुदा और Ultimate Reality (यथार्थ) का भी पता लगाने का प्रयास किया, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली । क्योंकि, प्रथमत: उनके ये विचार अपनी-अपनी कल्पनाओं पर आधारित थे, जिससे उनके विचारों में समन्वय नहीं था, दूसरी बात यह कि मानव का ज्ञान एवं विचार संकुचित और सीमित होता है । फिर भी, अगर उनके इन काल्पनिक विचारों से विकास संभव भी हुआ तो, इस विकास का लाभ एक विशेष वर्ग को जाएगा, जिसमें नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का सतत अभाव होगा और विकसित वर्गों का वर्चस्व रहेगा । ऐसे समाज में मानव को सुख-चैन कहां से मिल पाएगा ?

प्रसिद्ध इतिहासकार टाइन बी॰ के शब्दों में–

Most of the world civilizations were destroyed on the rock of material progress. (by Toyn Be)

जब से मानव जाति का इतिहास रहा है इन प्रश्नों का उत्तर समय-समय पर ईश्वर अपने संदेष्टाओं और 'आदेशों' द्वारा देता रहा है । अंतत: 'उसने' अपना अंतिम आदेश अपने अंतिम संदेष्टा द्वारा भेजकर इस प्रकार की सभी संभावना को समाप्त कर दिया और वह आदेश 'धर्म' है । जो व्यक्ति ईश्वर के इस निर्दिष्ट धर्म का अनुपालन करेगा, वही दोनों लोकों में सफल होगा ।

यह बात समझ में नहीं आती कि अपनी सृष्टियों में से उसने पक्षियों को उड़ना और मछलियों को तैरना सिखाया है, लेकिन इन्सान के मार्गदर्शन के लिए कुछ नहीं किया । क्या मानव के साथ खुदा की दुश्मनी है कि उसे मार्गदर्शन की खोज में भटकता छोड़ दे ?

ईश्वर मानव को अपनी अनुपम सृष्टि कहता है । वह हमसे अत्यधिक प्रेम करता है । वह इतना महान, सर्वज्ञ और न्यायप्रिय है कि मानव के प्रत्यक्ष और परोक्ष की सारी आवश्यकताओं को जानता है और उसकी पूर्ति भी करता है । उसने हमारे लिए सारी चीज़ों को पैदा किया । उसकी नेमतों में केवल वे ही चीज़ें शामिल नहीं हैं, जो हमें आखों से नज़र आती हैं, बल्कि अनगिनत ऐसी चीज़ें हैं जो दिन-रात हमारी सेवा में लगी रहती हैं, परन्तु वे हमें नज़र नहीं आतीं ।

एक इंजीनियर या किसी चीज़ का बनाने वाला अपने उत्पादक का Manual भी पेश करता है। उत्पादन में अगर कोई ख़राबी होगी तो उसे उसी Manual के ज़रीए से पता करके दूर किया जा सकता है । इसी तरह ईश्वर ने अपनी सारी सृष्टि के लिए क़ानून और जीने का तरीक़ा प्रदान किया है ।

ईश्वर ने इन्सान की सभी आवश्यकताओं को बहुत अच्छे रूप से पूरा किया है । अर्थात उसने इन्सानों में से सबसे विशिष्ट व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि नियुक्त करके

संदेष्टा या संदेशवाहक बनाया । उन पर वह्य के द्वारा अपना संदेश और मार्गदर्शन भेजता रहा है । संदेशवाहक या संदेष्टा (Prophets, Messengers) बहुत ही नेक, सच्चे, नि:स्वार्थ और बेहतरीन इन्सान होते थे । वे केवल रहनुमाई और मार्गदर्शन पेश करने वाले नहीं होते थे, बल्कि सबसे पहले उन पर अमल करने वाले होते थे । ज़मीन पर खुदा का प्रतिनिधित्व करते थे और ईश्वर की इच्छा के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते थे । वे स्पष्ट रूप से बताते थे कि उनको वह्य (Divine Revealation) के द्वारा यह सब ज्ञान अल्लाह की ओर से प्राप्त हो रहा है । वे अपनी इच्छा से कुछ नहीं कहते, बल्कि अल्लाह की ओर से कहते थे । उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होता था । वह अल्लाह का संदेश, मार्गदर्शन, आदेश और निर्देश किसी वर्ग और जाति के लिए नहीं लाते थे, बल्कि उनके सामने समस्त मानवजाति होती थी । संदेशवाहकों ने कभी मानव को जन्म, भाषा, वंश और प्रांत के आधार पर बांटा नहीं । उनके मार्गदर्शन को स्वीकार करते हुए और उनके बताए गये मार्ग पर चलते हुए जीवन व्यतीत करना, वास्तव में ईश्वर को मानना और उसके आदेश व निर्देश का पालन करना है और संदेशवाहक को नकारना तथा उसके मार्गदर्शन को अस्वीकार करना केवल संदेशवाहक का इन्कार नहीं, बल्कि अल्लाह का इन्कार है । इतिहास में एक लाख से अधिक संदेशवाहक संसार के अन्य भागों में अलग-अलग समय और काल में आते रहे, केवल कुछ के नाम कुरआन और बाइबल में आये हैं । आदम (अलैहि०), नूह (अलैहि०), इबराहीम (अलैहि०), इस्माईल (अलैहि०), इसहाक़ (अलैहि०), याकूब (अलैहि०), यूसुफ़ (अलैहि०), मूसा (अलैहि०), ईसा (अलैहि०) और अंतिम समय में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) आये ।

जीवन के जिन मूल प्रश्नों की चर्चा ऊपर की गयी है, उसके उत्तर में संदेशवाहकों ने केवल एक ही बात कही । उनके उत्तरों में कोई विरोधाभास नहीं है । क्योंकि संदेशवाहकों ने कोई बात अपनी तरफ़ से नहीं कही, बल्कि उन्होंने जो बातें कहीं वे ईश्वर की ओर से कहीं । अंत में मुहम्मद (सल्ल०) ने भी बताया कि वे उन प्रश्नों के उत्तर के रूप में जो ज्ञान दे रहे हैं, वह कोई नयी बात नहीं है, कोई नया संदेश नहीं है, बल्कि पिछले संदेशवाहकों ने जो कुछ बताया था हम वही बात पेश कर रहे हैं ।

1. इस सृष्टि, मानव और ब्रह्माण्ड सबको पैदा करने वाला ईश्वर है । वही सबका मालिक है । ईश्वर का इन्कार नहीं किया जा सकता है ।

2. इन्सान अनुपम सृष्टि है । उसका जीवन एक परीक्षा है । मानव ईश्वर के आगे उत्तरदायी है । उसके जीवन की सफलता, विकास और मुक्ति के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता है । ईश्वर ने उनका मार्गदर्शन अपने संदेष्टाओं के द्वारा पहले ही दिन से करना प्रारंभ कर दिया है ।

3. संदेष्टाओं के संदेश और उनकी शिक्षाओं को मानकर जिन्होंने पारलौकिक जीवन में पेश आने वाले कर्म की पूछताछ पर विश्वास करके अपना जीवन व्यतीत किया, वे ही लोग इस लोक और परलोक दोनों में सफल होंगे और स्वर्ग का आनंद भोगेंगे और जिन्होंने ऐसा नहीं किया, वे लोग असफल होकर नरक की यातना भोगेंगे । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अंतिम संदेष्टा हैं और कुरआन अंतिम ईश-ग्रंथ । यह दोनों अर्थात हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र जीवनी, आपकी कही हुई बातें (हदीस) और कुरआन सुरक्षित हैं । इसी तरह इस्लाम सुरक्षित और प्रमाणिक धर्म है । यह विशेषता केवल इस्लाम को ही प्राप्त है ।

ईश्वर के अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और अंतिम ईश-ग्रंथ कुरआन होने का अर्थ यह है कि हम सारे संदेष्टाओं को (उनका नाम ज्ञात हो या न हो) मानें और

UNITED ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand



उनका आदर करें । सारे ईश्वरीय ग्रंथों को मानें । आइए, अब ईशदूत मुहम्मद (सल्ल॰) के संदेश और उनकी शिक्षाओं पर ग़ौर करें, क्योंकि जिस काल व जिस समय के लिए पिछले संदेष्टाओं और ग्रंथों को भेजा गया था, अब वे परिस्थितियां नहीं रहीं । पिछले संदेष्टाओं का जीवन और उन पर अवतरित ईश-ग्रंथ सुरक्षित नहीं रहे । वे एक विशेष काल और समुदाय के लिए थे । दूसरी बात यह है कि पिछले संदेष्टाओं और ईश-ग्रंथों की शिक्षाओं को कुरआन ने अपने अन्दर समाहित कर लिया है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अंतिम संदेष्टा और कुरआन को अंतिम ईश-ग्रंथ मानने का अर्थ यह है कि हम सारे संदेष्टाओं को मानते हैं । अगर अस्वीकार करते हैं, तो इसका अर्थ यह होगा कि हम किसी भी ईश-ग्रंथ और संदेष्टा को नहीं मानते, यहां तक कि हम ईश्वर को भी नहीं मानते ।

प्रश्न यह उठता है कि संदेष्टाओं और अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अल्लाह की ओर से संदेश और शिक्षाओं के पहुंचने का माध्यम क्या था ? यह माध्यम वह्य (Divine Revealation) कहलाती है ।

वह्य क्या है ?

कहा जा सकता है कि वह्य God's own way of communication है । अर्थात ईश्वर अपने बन्दे को संदेश भेजता है, संदेश लाने वाले फ़रिश्ते जिबरील (अलैहि॰) थे । उपर्युक्त सच्चाइयों के बारे में हमें जानकारी ईश्वर से ही मिल सकती है । क्योंकि ईश्वर ने मानव और उसके मस्तिष्क को बनाया है और वह उसके मनोविज्ञान को अच्छी तरह जानता है । मानव जीवन के लिए सही या ग़लत, वैध या अवैध और लाभदायक और हानिकारक क्या है ? इस प्रकार की सभी सच्चाइयों को ईश्वर ही बता सकता है ।

हमारे पास बुद्धि है, परन्तु उसकी कुछ सीमाएं हैं, इससे ज़्यादा वह बढ़ नहीं सकती । उदाहरण के रूप में देखें, ब्याज, जुआ और लॉटरी । बुद्धि तो कहती है कि इसमें कोई ख़राबी नहीं है, इससे लाभ उठाना चाहिए । परन्तु यह ईश्वर की वह्य है कि जो बताती है कि यह हानिकारक है, इनसे बचना चाहिए । यह केवल एक उदाहरण है, इसके अलावा कुछ और भी ऐसे उदाहरण हैं, जिन पर चिंतन-मनन करने पर विश्वास हो जाता है कि जीवन की कुछ ऐसी ही सच्चाइयां हैं, जिनके बारे में ज्ञान प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है । और यह ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा ही नहीं बल्कि इसके लिए बुद्धि और ज्ञान से बढ़कर वह्य से मार्गदर्शन लेना अनिवार्य है । वह्य और बुद्धि में कोई टकराव नहीं है । दोनों एक-दूसरे के बैरी नहीं हैं । वह्य बुद्धि की सहायता करती है । जहां बुद्धि काम नहीं करती, वहां वह्य काम आती है । वह्य बुद्धि को आगे बढ़ाती है ।

हमने किसी संदेष्टा पर वह्य आते देखी नहीं है । हम किस तरह मान लें कि वह्य और संदेष्टा सत्य हैं ? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें संदेष्टाओं के जीवन, उनके संदेश और उनकी दी गयी शिक्षाओं का अध्ययन करना होगा, उनकी बातों में जो सत्य है, जो मार्गदर्शन और रहनुमाई है उसको परखना होगा । अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) हमारे बीच मौजूद नहीं हैं, परन्तु उनकी शिक्षाएं और मार्गदर्शन और उनका विशुद्ध जीवन सब मौजूद है । उन्होंने मानव-समाज को जिस तरह बदला, और वे जो सामाजिक परिवर्तन लाए, यह नमूना भी विश्व के सामने है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) इतिहास के पूरे प्रकाश में आये, इसलिए इनकी पूरी शिक्षा सुरक्षित है ।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

डॉ॰ अंबेडकर और मीडिया

■ प्रो॰ वी॰ रत्नमाला

अंबेडकर ने अपने अध्ययन दौरान पाया कि अख़बारों में दलितों के मुद्दों पर बहुत कम बात होती है । उन्होंने इस बात का खुलासा किया कि मीडिया उनके लोगों की आवाज़ और विचारों को दबा रही है ।

"यह बहुत निराशाजनक बात है कि हमारे पास संसाधनों की कमी है । धन भी नहीं है । अख़बार भी नहीं है, आज पूरे भारतवर्ष में हमारे लोग सत्ता के अधीन पीड़ित हैं, उनके साथ भेदभाव हो रहा है और कोई उनकी ओर ध्यान भी नहीं देता, यह तमाम बातें अख़बारों में नहीं छपती । यह एक सोची-समझी साज़िश है जिसमें मीडिया पूरी तरह शामिल है वह सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं पर उठने वाली हमारी आवाज़ को दबा देना चाहता है ।

(अंबेडकर, 1993)

दलितों के बारे में अख़बार में कोई भी ख़बर नहीं छपी । उन्होंने पूरी दुनिया के सामने यह बात स्पष्ट कर दी कि भारतीय मीडिया किसी भी सूरत में जातीय संघर्ष पर बात करने को तैयार नहीं है । इस संघर्ष के पीछे की मुख्य वजह छूआछुत से पनपा दलित उत्पीड़न है । डॉ॰ अंबेडकर ने अपने 17वें अध्याय में कहा है कि प्रतिदिन यहां हर गांव में हिन्दू और दलितों के बीच झड़पे होती हैं । मगर कोई इस बारे में नहीं जानना चाहता और मीडिया भी इस विषय पर बात करने को तैयार नहीं है ।

आगे अंबेडकर ने मीडिया में दलितों के कम प्रतिनिधित्व और भेदभाव के कारणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अछूतों की अपनी कोई प्रेस नहीं है । कांग्रेस की प्रेस के दरवाज़े उनके लिए बंद हैं और वह निश्चय कर चुके हैं दलितों को प्रचार का एक छोटा-सा अवसर भी प्रदान नहीं करेंगे । यह तो स्पष्ट हो चुका है कि वह अपनी कोई प्रेस भी नहीं खोल सकते, चूंकि कोई भी अख़बार बिना विज्ञापन के जीवित नहीं रह सकता । (अंबेडकर, 1993)

अंबेडकर के अनुसार दलितों की ख़बरें अख़बार में नहीं छपने के पीछे का एक मुख्य कारण मीडिया में उनकी कम संख्या होना भी है । वह स्वामित्व के बारे में भी भली-भांति जानते थे जो ख़बरों के चयन में अहम भूमिका निभाता है । अंबेडकर इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि मीडिया का स्वामित्व और उसकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है । अख़बारों का उद्देश्य राजनीति, सिद्धांत और आदर्श सभी वही तय करता है ।

अंबेडकर इस बात को भली-भांति समझते थे कि दलितों के साथ भेदभाव का एक कारण मीडिया में उच्च जाति का वर्चस्व भी है । उनका कहना था कि एसोसिएटेड प्रेस ऑफ़ इंडिया जो भारत की मुख्य समाचार एजेंसी है उसमें पूरी तरह मद्रास के ब्राह्मणों का वर्चस्व है । एजेंसी उनके हाथों में है और वह किसके लिए है यह पूरी तरह से कांग्रेस समर्थक है और कांग्रेस के ख़िलाफ़ कोई भी ख़बर नहीं छापेगी । अछूतों के सामने यह कुछ ऐसी स्थितियां भी जिन पर नियंत्रण करना मुश्किल था । (अंबेडकर, 1993)

उन दिनों अख़बार दलितों की ख़बरें प्रकाशित करने के लिए तैयार नहीं थे और न ही उनके अधिकारों के लिए लड़ने वाले किसी नेता के बारे में बात करना चाहते थे । समाज में दलित जाति से बाहर, अलग-अलग थे, शोषित थे और वहीं दूसरी ओर उनके साथ मीडिया का रवैया भी भेदभावपूर्ण रहा । अंबेडकर जिन्होंने छुआछूत को मिटाने का प्रयास किया । उन्हें भारतीय समाज के ख़िलाफ़ भस्मासुर के रूप में चित्रित किया गया । ख़बरों में उन्हें जो जगह मिली, उनके ख़िलाफ़ जिस तरह की भाषा और तीखे तेवरों का प्रयोग किया गया इससे तो साफ़ ज़ाहिर होता है कि उन्हें हमेशा कम महत्व, कम शोहरत और नकारात्मक प्रतिनिधित्व मिला ।

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय ज़्यादातर अख़बारों पर कांग्रेस या हिन्दुओं का मालिकाना हक़ था । इसलिए यह बात तो ज़ाहिर है कि हिन्दुत्ववाद और कांग्रेस के विरोधी विचारधारा के वह ख़िलाफ़ थे । वहीं अख़बार जिन्होंने गांधी जी की डांडी यात्रा को सत्याग्रह माना था, उन्होंने अंबेडकर के नेतृत्व में हुए महाड़ आन्दोलन को सत्याग्रह मानने से इन्कार कर दिया । यहां तक कि इस संघर्ष को उन्होंने धोखा क़रार दिया । चूंकि कांग्रेस समर्थक अख़बारों में दलितों की ख़बरों और उनके संघर्ष को जगह मिलना नामुमकिन थी इसलिए अंबेडकर ने अपना अख़बार निकालने का निश्चय किया । भारतीय समाचारपत्र भी हिन्दू जाति के विचारों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं । वह पूरी तरह जातीय संरचना पर आधारित है ।

अहसास

■ जय प्रकाश वाल्मीकि

इसे संयोग की कहा जाएगा कि प्रकाश बाबू पढ़-लिखकर एक बड़े आदमी बन गये । चूंकि उनके पिता किशनराम तो अनपढ़ थे, शिक्षा के महत्व से अनजान । वह शहर की मलिन बस्ती में स्वयं की जाति समूह में रहता था । बस्तियों में झाड़ू लगाना, मुहल्ले के हमउम्र लोगों के साथ रहना, यही किशनराम की जवानी के दिन थे । पिता की मृत्यु के बाद किशनराम को रेलवे में उनकी जगह अनुकम्पा के आधार पर नौकरी मिल गयी और वह इस गांव सूरतपुरा में आ गया ।

उस समय प्रकाश चार-पांच वर्ष का था । कई बार प्रकाश अपने पिता किशनराम के साथ रेलवे स्टेशन पर आ जाता । किशनराम प्लेटफार्म पर झाड़ू लगाता रहता और प्रकाश उसके पीछे-पीछे चलता रहता । स्टाफ़ के साथी किशनराम से कहते–'अरे, किशनराम ! बच्चे को यहां साथ-साथ घुमाने के बजाय किसी स्कूल में क्यों नहीं बैठा देता है ।'' किशनराम हां, हूं करता रहता । पर उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लेता ।

एक बार किशनराम झाड़ू लगा रहा था और प्रकाश नन्हे-नन्हे हाथों से कचरे की ढेरियों को टोकरी में भर रहा था । उसी समय स्टेशन मास्टर सतीश जी घूमते हुए वहां आ गये । वे भी एक दलित जाति से ही थे । प्रकाश को कचरा उठाते देखकर उन्हें बड़ा दुख हुआ । वे किशनराम के क़रीब आकर बोले–''अरे किशनराम ! यह क्या ?, इस बच्चे को भी खुद की तरह झाड़ू देने वाला बनाएगा क्या ? आज के बाद मैं यहां इसे इस तरह नहीं देखना चाहता ।'' किशनराम ने तब से प्रकाश को अपने साथ लाना बन्द कर दिया ।

गर्मी की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुले, तो सतीश जी ने किशनराम को बुलाकर कुछ रुपये देते हुए कहा–''किशनराम ! तुम कल ही अपने बेटे को स्कूल में भर्ती करा दो, कोई दिक्क़त आये तो हमें बताना ।'' औरों की बात किशनराम मानता या नहीं, किन्तु सतीश जी उसके अधिकारी थे । उनके आगे वह ना-नू कैसे करता । इस तरह प्रकाश स्कूल जाने लगा ।

जब प्रकाश सेकेंड्री में प्रथम श्रेणी से पास हुआ, तो किशनराम सतीश जी का आशीर्वाद दिलाने उसे उनके घर ले गया । सतीश जी घर पर ही थे और अगले 15 दिनों में रिटायर होकर अपने शहर इलाहाबाद जाने वाले थे । उन्होंने किशनराम और प्रकाश बाप-बेटे को आया देखकर पूछा–''किशनराम जी, आज कैसे आना हुआ ? किशनराम हाथ जोड़कर बोला–''साब ! प्रकाश ने दसवीं पास कर ली । आप इसे आशीर्वाद दे दीजिए ।''

सतीश जी ने प्रकाश को शाबशी दी और कहने लगे–

सतीश जी का चेहरा फूल-सा प्रफुल्लित हो रहा था । उन्होंने बैठक वाले कमरे में बाप-बेटे को बुलाया, तो वे दोनों सकुचाने लगे । सकुचाना उनके संस्कारों में पता नहीं कितनी पीढ़ियों से बना हुआ है । कहने के बाद भी वे दोनों बैठक में नहीं आये, तो सतीश जी ने कहा–''झिझको मत ! अन्दर आओ !'' वे दोनों झिझकते हुए धीरे-धीरे बैठक में आ गये और सतीश जी के इशारे पर कुर्सियों पर बैठ गये ।

उधर सतीश जी ने पत्नी को चाय लाने को आवाज़ दी, तो वे और भी स्तब्ध रह गये । किशनराम जैसे लोगों को दूसरी जाति के लोगों से जब ऐसी मान-मनुहार मिल जाती है, तो वे उनके प्रति कृतज्ञ-कृतज्ञ हो जाते हैं । चूंकि दूसरे लोगों के द्वारा सम्मान पाने की कल्पना वे स्वप्न में भी नहीं कर सकते । गांधी जी के द्वारा ''हरि का जन'' कह देने मात्र से वे उनके आजीवन ऋणी हो गये । सतीश जी के प्रति किशनराम का भी ऐसा भी भाव मन ही मन पैदा हो रहा था ।

सतीश जी की पत्नी चाय लेकर आ गयी थी । सतीश जी ने ट्रे से चाय लेकर उन्हें देते हुए कहा–''किशनराम जी ! अब वो ज़माना नहीं है कि हम पढ़-लिखकर कुछ बन नहीं सकते, हां लोग हमें हतोत्साहित करने की नीति ज़रूर अपनाते हैं, पर हमें निराश नहीं होना चाहिए ।'' फिर वे रुककर बोले–''मुझे ही देखो, मैं भी आप ही की बिरादरी

का हूं। शिक्षा के बल पर ही आज स्टेशन मास्टर के पद से रिटायर होने जा रहा हूं।''

यह बात सुनकर बाप-बेटे दोनों अचंभित से विस्फारित नेत्रों से सतीश जी को देखने लगे। और साहस करके पूछ ही लिया–''साब जी ! आपने पहले तो कभी यह बात हमें नहीं बतायी।

''हां, नहीं बतायी। किशनराम ! तुम तो जानते हो यह गांव खेड़ा है, पता लगने पर कि मैं भी तुम्हारी जाति-बिरादरी का हूं, तब लोग अब जैसा मान देते क्या ? तुम्हें भी यह बात इसलिए नहीं बतायी कि पता नहीं, तुम्हारे मन में भी यह बात रह पाती कि नहीं। ख़ैर, मैं तो 15 दिन बाद यहां से जा रहा हूं, पर जाते-जाते एक बात तुमको समझा जाता हूं। सिर्फ़ दसवीं पास करने से कुछ नहीं होगा, प्रकाश को पढ़ाते रहना।''

किशनराम ने तब सतीश जी की बात को मन के पल्लू से बांध लिया। वो प्रकाश को भी सतीश जी की तरह सूट-बूट में साहब बना कुर्सी पर बैठा देखना चाहता था। प्रकाश मेधावी छात्र तो था ही, और वो दिन भी आ गया जब प्रकाश ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर एक बैंक में मैनेजर बन गया। काफ़ी खोजबीन के बाद सामाजिक कार्यकर्ता की दसवीं पास लड़की कान्ता से उसका विवाह हो गया। किशनराम ने प्रकाश को लेकर खुली आंखों से जिस सपने को संजोया था, वह पूरा हो गया और एक दिन खुशी-खुशी किशनराम संसार से चल बसे।

जब किशनराम जीवित था, तो वह प्रकाश के हाव-भाव देखकर कहता था–''बेटा, यह घर तेरे दादा का है। नौकरी के कारण मैं बाहर रहा, लेकिन मेरी आत्मा इसी में बसी रही, तू इसे सही ढंग से बना ले और मज़े से रह, कहीं और जाने की बात मत किया कर।''

प्रकाश ने पिता की भावना की क़द्र करते हुए पचास गज़ के उस मकान को तुड़वाकर ठीक से बनवा लिया। मुहल्ले में प्रकाश, प्रकाश बाबू बन गये। कोई सरकारी बातचीत होती, जाति के लोग उनसे सलाह लेने के लिए भी आते। लेकिन प्रकाश बाबू कहीं नहीं जाते। उनका मन यहां से अंयत्र रहने को करता। एक-दो बार वे किशनराम से भी कह चुके थे–''बाबू जी ! यहां लोग ठीक नहीं, मुहल्ले में हर बार लोग शराब पीकर धमाल करते ही रहते हैं, इससे बच्चों पर बुरे संस्कार पड़ते हैं।''

किशनराम के देहांत हो जाने पर प्रकाश बाबू ने घर तो नहीं बेचा, पर ऐसी जगह नया मकान ले लिया, जहां सभी जाति के लोग रहते थे। वहां जैसे-जैसे लोगों को उनकी जाति का पता लगा, वैसे-वैसे लोग उनसे दूरी रखने लगे। कान्ता, प्रकाश बाबू से कहती कि वे पुराने मकान में ही सही थे। अड़ोस-पड़ोस वालों से दुआ-सलाम तो होती थी, किन्तु प्रकाश बाबू पत्नी को यह समझाकर चुप करा देते कि यहां उनके बच्चे ठीक से लिख-पढ़ रहे हैं। समाज के बच्चों की संगति से बचे हुए हैं और वहां लोग जब मुझसे मिलने आते, तो पड़ोसियों के सूअर कीचड़ में सने हमारे घर के दरवाज़े पर किलोल करते मिलते। मुझे कितना नीचा-नीचा देखना पड़ता था।

समय निकलता रहा। प्रकाश बाबू की लड़की बी॰एड॰ कर चुकी थी और उनका लड़का भी आर॰एस॰ की परीक्षा दे चुका था। प्रकाश बाबू ने उनके ब्याह-शादी के लिए रिश्ते तलाशना शुरू किये। लेकिन दोनों बच्चों के लिए योग्य रिश्ता नहीं मिला। प्रकाश बाबू उसी चिंता में रहते।

एक दिन प्रकाश बाबू अपने ससुराल गये। वहां उनके ससुर दीनानाथ जी अपनी सामाजिक संस्था की मीटिंग में बैठे थे। प्रकाश बाबू को आया देख उनके साले रमेश जी ने उन्हें बराबर वाले कमरे में बिठाया और चाय-नाश्ते के बाद वे आपसी बातें करने लगे। रमेश जी कुछ देर के लिए वहां से दूसरे कमरे में चले गये। उस समय प्रकाश बाबू अकेले थे। उनका ध्यान पास वाले कमरे में चल रही मीटिंग की वार्तालाप की ओर चला गया।

एक वक्ता की आवाज़ आ रही थी–''साथियों ! हमारे समाज के पिछड़ेपन के अन्य कारणों के साथ एक कारण यह भी है कि हमारे समाज में शिक्षा की कमी है और जो थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा तबक़ा है, वह समाज से कटा हुआ रहता है। हमें उनके पास जाना चाहिए और समझाना चाहिए कि उनकी स्वयं की प्रगति तब तक कोई मायने नहीं रखती, जब तब उनका समाज भी उनके समकक्ष नहीं बन जाता। चूंकि जन्म, मृत्यु, विवाह आदि के संस्कार समाज से ही पूर्ण होते हैं, इसलिए जितना वे स्वयं की उन्नति के लिए लालायित होते हैं, उतना ही उन्हें समाज की प्रगति के लिए भी प्रयासरत रहना चाहिए। तब ही उनकी प्रगति के मायने सामने आएंगे। अगर हम हमारे समाज के पढ़े-लिखे लोगों को उनके सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करने की भावना को

जागृत करने में सफल होते हैं, तो हमारी एक बड़ी उपलब्धि होगी ।''

रमेश जी अब प्रकाश बाबू के पास आकर बैठ गये । तब प्रकाश बाबू उनसे विदा लेकर घर के लिए रवाना हो गये । जिन सामाजिक मीटिंग और संस्थाओं को वे बेकार मानते थे, उसी सामाजिक मीटिंग ने उन्हें उद्वेलित कर दिया । शैक्षणिक और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने के बाद भी जीवन का अधिकांश समय उन्होंने स्वयं का और अपने बच्चों का भविष्य संवारने में ही बिता दिया । समाज के लिए कुछ नहीं किया । यहां तक कि उनके दुख-दर्द में भी जाकर खड़े नहीं हुए । उसी समाज से पढ़ी-लिखी बहू और दामाद चाहते हैं ।

प्रकाश बाबू सोचने लगे–उनसे तो इतना भी नहीं हो पाया कि वे सतीश जी की तरह किसी को सही मार्ग दिखाते । मुहल्ले के वातावरण से जो पूर्वाग्रह बन गये, वे कभी उससे बाहर नहीं आ पाये । मीटिंग में बोल रहे वक्ता का भाषण उनके कानों में गूंजने लगा–''उनकी स्वयं की प्रगति तब तक कोई मायने नहीं रखती जब तक उनका समाज भी उनके समकक्ष नहीं बन जाता । चूंकि जन्म, मृत्यु और विवाह आदि के संस्कार समाज से ही पूर्ण होते हैं, इसलिए जितना वे स्वयं की उन्नति के लिए लालायित होते हैं, उतना ही उन्हें समाज की प्रगति के लिए भी प्रयासरत रहना चाहिए । तब ही उनकी प्रगति के मायने सामने आएंगे ।'' इन्हीं विचारों में खोये प्रकाश बाबू जब अपने घर आये तो तन से तो वे पहले वाले ही थे, किन्तु अब मन से बदल गये । रास्ते भर में उन्होंने निश्चित कर लिया था कि वे अपने सामाजिक दायित्व को पूरा करने के लिए समाज उत्थान के कार्यों में लगेंगे ।

अगले रविवार को प्रकाश बाबू फिर ससुराल गये । दीनानाथ जी घर पर ही थे । उन्होंने प्रकाश बाबू को बिठाया और कुशलक्षेम जानकर कहा–''प्रकाश बेटे ! अब बताइए, कैसे आना हुआ ?''

''बात यह है बाबू जी ! मैं आपके समाज उत्थान के कार्यों में सहयोग करना चाहता हूं । समाज के लोगों को शिक्षा और रोज़गार के लिए मैंने सोचा है कि हमारे समाज के कई लोग ऐसे विभागों में कार्य करते हैं, जहां से सरकार की जन-कल्याणकारी योजनाओं की क्रियान्विति होती है । ऐसे विभागों में कार्य कर रहे लोगों से मेरा परिचय है अगले संडे को मैं उन्हें अपने यहां बुलाकर समझाऊंगा कि वे अपने समाज के लोगों को उन योजनाओं के लाभ दिलवाने में सहयोग तथा मार्गदर्शन करे ।'' फिर रुककर प्रकाश बाबू ने दीनानाथ जी को बतलाया कि–''बाबू जी ! स्वयं रोज़गार के लिए हमारे बैंक में ऋण देने की कई योजनाएं हैं । आप अपनी संस्था के द्वारा इच्छुक लोगों का सर्वे करवाएं । पहले उन्हें उनकी रुचि के व्यावसाय का प्रशिक्षण दिलवाएंगे, फिर स्वयं रोज़गार के लिए ऋण दिलवाएंगे ।''

प्रकाश बाबू की ये बातें सुनकर दीनानाथ जी को बड़ा आश्चर्य हुआ । यह वही प्रकाश बाबू हैं, जो कल तक समाज सेवा और संस्थाओं को फालतु की बातें बताया करते थे । आज वे ही प्रकाश बाबू समाज उत्थान की योजनाओं को लेकर उनके यहां उपस्थित हुए हैं । अत: उन्होंने जिज्ञासावश प्रकाश बाबू से पूछ ही लिया–''प्रकाश बेटे ! आपके मन में अचानक समाज सेवा का विचार कैसे आ गया ?''

''बाबू जी ! मैंने अपने दोनों बच्चों को पढ़ाया–लिखाया । पर न लड़की के योग्य लड़का और न लड़के के योग्य लड़की का रिश्ता मिल रहा है । मिलेगा भी कैसे ? समाज में पढ़े-लिखे लड़के–लड़कियां हैं ही कहां ? हम जैसों ने शिक्षा से जो लाभ उठाया, पर हमने शिक्षा के फ़ायदे की जानकारी समाज के किसी भाई या बहन को नहीं दी । शिक्षा से मैंने जो लाभ पाया, वह कुछ ऐसा ही रहा, जैसे गूंगे ने गुड़ खाया और उसके मिठास से स्वयं ही आनंदित होता रहा ।

प्रकाश बाबू के शब्दों में एक तरह से पछतावा था । फिर वे रुक कर बोले–''बाबू जी ! अब मेरी जैसी स्थिति का सामना औरों को न करना पड़े, इसलिए समाज की प्रगति का कार्य हाथ में लेने की सोची है आपके मार्गदर्शन में । मैं और मेरे साथी समाज उत्थान के कार्यों को आगे बढ़ाएंगे ।''

दीनानाथ जी प्रकाश बाबू की बातें सुनकर मन ही मन हर्षित हो उठे । फिर उन्होंने प्रकाश बाबू को कई सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक हित आदि की बातें बतायीं । प्रकाश बाबू जब जाने लगे, तो दीनानाथ जी ने कहा–''प्रकाश बेटे ! तुम मेरे दामाद ही नहीं बल्कि आज से मेरे मानस-पुत्र भी हो ।'' प्रकाश बाबू ने उनके चरण स्पर्श कर अपना स्कूटर स्टार्ट कर लिया ।

अब ग्रामोदय से 'भारत उदय' तक !

• वेदव्यास

आजकल हम भारत के 130 करोड़ देशवासियों के दिल और दिमाग़ में और परिवर्तन को लेकर संघन लोकमंथन चल रहा है । 1947 के बाद 2014 में लोकतंत्र का एक नया स्वरूप खोजने की लालसा बलवती हो उठी है । सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीति के सभी मोर्चों पर अनेक परंपराएं अस्त हो रही हैं तो अनगिनत परिवर्तन उदय हो रहे हैं । ग़रीबी हटाओ से लेकर अच्छे दिन आने वाले सभी आर्कषक चुनावी नारे लोग भूल चुके हैं और भ्रम के आगे यथार्थ की पगडंडी तलाश रहे हैं । कांग्रेस मुक्त भारत के अभियान का दूसरा चरण ग्रामोदय से भारत उदय आगे बढ़ रहा है तो पिछली सभी जनकल्याणकारी योजनाओं ने नये तेवर और नये फ़्लेवर ज़बरदस्त प्रचार के साथ, देश के लाखों गांवों तक पहुंचाई जा रही हैं । कुल मिलाकर लोकतंत्र में शासन-प्रशासन में खेल के सारे नियम बदल गये हैं ।

हम भारत के लोग पिछले दो साल में एक बदलाव स्पष्ट देख रहे हैं कि विश्व अर्थव्यवस्था की बाज़ारवादी आर्थिक नीतियां जो 1990 में कांग्रेस ने शुरू की थी वह नीतियां अब अधिक उदारता और दृढ़ता से लागू की जा रही हैं । तथा जहां पहले सरकार कमज़ोर थी और सामुदायिक विकास योजनाएं मज़बूत थीं वहां अब सरकार और बाज़ार मज़बूत हो गये हैं तो गांव और ग़रीब को बचाने वाली नीतियां बहुत कमज़ोर हो गयी हैं । विकास और परिवर्तन का यह संशोधित मॉडल–जहां भारत को चौतरफ़ा एक खुले बाज़ार की अर्थव्यवस्था में बदल रहा है वहां निजीकरण और उदारीकरण की हवा पानी ने भारत को एक पूंजीवादी महाजनी संस्कृति में धकेल दिया है तो पूंजी निवेश करने वाली बड़ी कंपनियां ग़रीब के लिए महंगाई, मंदी और रोज़गार की माईबाप हो गयी हैं ।

आर्थिक विकास का यह नया चेहरा इस सच को बयान करते हुए भारत माता के 80 प्रतिशत सपूतों को साफ़-साफ़ कह रहा है कि भ्रष्टाचार, कालाधन अपराध और बेरोज़गारी मिटे या नहीं मिटे लेकिन हम 2020 तक भारत को विश्व शक्ति, योग गुरू और राष्ट्रवादी ज़रूर बना देंगे । क्योंकि शिक्षा और टेक्नोलॉजी के अधिकाधिक प्रयोग और विस्तार से गांवों और शहर के बीच में धर्म और जातियों का शक्ति संतुलन बदल जायेगा तो दूसरी तरफ़ किसान हल-बैल और खेत छोड़कर भाग जायेगा तो आज़ादी के बाद उदय होने वाला नौकरीपेशा-मध्य वर्ग की परंपरा और परिवर्तन की चक्की में मुंगेरीलाल के हसीन सपने देखता-देखता विद्रोह, प्रतिरोध और ज़िंदाबाद ! मुर्दाबाद के सभी नारे लगाना भूल जायेगा ।

एक भारत और श्रेष्ठ भारत का यह नया आइडिया कुछ इस तरह फैल रहा है कि सरकार, बाज़ार राष्ट्रवाद का सामाजिक गठबंधन ही आज खुले बाज़ार की अर्थव्यवस्था का नया प्लेटफ़ार्म बन गया है तथा स्मार्टसिटी से लेकर डिजिटल इंडिया, स्वच्छता मिशन और मेक इन इंडिया जैसे सभी अभियान भारत में विकास की अंतरआत्मा बन गये हैं। आगे क्या होगा, यह तो कहना आज संभव नहीं है, लेकिन पूत के पांव पालने में देखकर ये ज़रूर लगता है कि आने वाले समय में भारत की 45 करोड़ से अधिक की युवा आबादी धर्म और जाति के राष्ट्रवाद और बाज़ारवाद से लोकतंत्र और संविधान को बचाने की लड़ाई लड़ेगी । क्योंकि भारत की 5 हज़ार वर्ष पुरानी मानवीय सभ्यता और संस्कृति की ताक़त उसकी सहिष्णुता और बंधुत्व में छिपी है ।

आज दुनिया के सभी 193 देश अपनी प्रकृति को नष्ट करके केवल टेक्नोलॉजी से 'भारत उदय' नहीं कर सकते हैं । इसके लिए हमें पहल ग़ैरबराबरी का भारत बनाना होगा और विकास का भारतीय मॉडल स्वीकारना पड़ेगा । आर्थिक विकास के पश्चिमी मॉडल पूरब के महात्मागांधी, अंबेडकर, विवेकानंद और भगतसिंह का सपना कभी सफल नहीं होगा, क्योंकि लोकतंत्र की भगवत गीता में सर्वोदय से ही वसुधैव कुटुंबकम, जन्म लेता है । अतः भारत में गणतंत्र का आधार ही हिंद स्वराज्य है और सत्य-अहिंसा और समता ही यहां की परंपरा में परिवर्तन की खोज का दूसरा नाम है । हम विकास और परिवर्तन के बीच पहले भी परंपराओं की अनेक लड़ाइयां हार चुके हैं । इसलिए केवल टेक्नोलॉजी का हथियार तेज़ करेंगे तो हम ग्रामोदय से भारत उदय नहीं कर सकते । क्योंकि नये भारत की अढ़ाई लाख ग्राम पंचायतें किसान-मज़दूर की कर्मभूमि है और उनकी प्रकृति जल, जंगल और ज़मीन को बचाने की है ।

(विविधा फीचर्स)

काम की महत्वपूर्ण बातें

यदि हम किसी कार्य का अभ्यास करते रहते हैं, तो उसे सरलतापूर्वक करना सीख जाते हैं । यदि हम सीखे हुए कार्य का अभ्यास नहीं करते हैं, तो उसको भूल जाते हैं । हालांकि कुछ कार्य ऐसे रहते हैं जिन्हें हम कभी भूलते नहीं हैं । तो आओ जानते हैं कि हमें क्या-क्या सीखना चाहिए जो हमारी ज़िन्दगी में बहुत काम आता है और जिसके माध्यम से हम एक सफल व्यक्ति बन सकते हैं या यह कि हम अपने सपने पूरे कर सकते हैं ।

तैरना और कार चलाना

अधिकतर लोग यह जानते ही होंगे, लेकिन हो सकता है कि अधिकतर लोग यह नहीं जानते होंगे । शहर के अधिकतर लोग तैरना नहीं जानते तो गांव के लोग कार चलाना नहीं जानते । हालांकि आजकल गांव में भी विकास की धारा पहुंच गयी है तो निश्चित ही वे भी अब कार चलाना सीख रहे हैं । तैराकी का बहुत महत्व है । तैराकी मांसपेशियों और मस्तिष्क के लिए एक टॉनिक की तरह है ।

गांव के लोग तैरने में उस्ताद है । सिर्फ़ तैरना सीखने भर से काम नहीं चलेगा । तैरना भी एक कला है जिसमें पारंगत होना ज़रूरी है । उसी तरह सिर्फ़ कार चलाना सीखना महत्वपूर्ण नहीं है । उसकी हर महत्वपूर्ण बातों को सीखना भी ज़रूरी है । दोनों ही कार्य जीवन में बहुत काम के होते हैं ।

भाषा और गणित

भाषा और गणित जीवन के हर क्षेत्र में बसा हुआ है । इसके बग़ैर जीवन में कोई काम नहीं चलता । घरेलू कामों में हिसाब-किताब लगाने की बात हो, दुकानों में जोड़-घटाने की बात हो, राष्ट्र की अर्थव्यवस्था, निर्माण कार्य या फिर अंतरिक्ष के अभियानों की बात हो, हर जगह गणित का समावेश है । उसी तरह यदि आप भाषा का अच्छे से इस्तेमाल करना नहीं जानते हैं, तो आप पिछड़े माने जाएंगे । गणित आपके दिमाग़ को शक्तिशाली बनाता है ।

बहुत से लोगों को अपनी ख़ुद की भाषा का भी ज्ञान नहीं होता । बोलना और भाषा का ज्ञान प्राप्त करना दोनों अलग-अलग बातें हैं । बहुत बड़ा भाषाज्ञानी बनने की ज़रूरत नहीं, लेकिन आपकी बोलचाल की भाषा सभ्य और शुद्ध होनी चाहिए । इसके अलावा आपको कम से कम अन्य दो भाषाओं का भी ज्ञान होना चाहिए । कुल मिलाकर आपको तीन भाषाओं का ज्ञान तो होना ही चाहिए ।

भाषा ज्ञान का वर्तमान में बहुत महत्व है । आप देश-विदेश में कहीं घूमने जाते हैं या नौकरी करते हैं तो भाषा आपका बहुत साथ देती है । भाषा के साथ ही अच्छी संवाद प्रक्रिया तभी हो सकती है, जबकि आप अच्छे से विचार करना सीख गये हैं । विचारवान बनने के लिए शब्द ज्ञान बढ़ाना भी ज़रूरी है ।

दूसरा है गणित का ज्ञान । केलकुलेटर और कंप्यूटर के युग में लोगों का गणित अब उंगुलियों से भी फिसल गया है । पहले के लोग दिमाग़ में सोचकर ही तुरंत ही जोड़-घटाव कर लेते थे । उसी दौर के थोड़े कमज़ोर लोग उंगुलियों पर जोड़-घटाव कर लेते थे, लेकिन आज के अधिकतर लोग ऐसा करने में सक्षम नहीं हैं ।

भाषण देना और सुनना

भाषण देने से कहीं ज़्यादा सुनना महत्वपूर्ण होता है । भाषण की जगह आप प्रवचन भी रख सकते हैं । आपके व्यक्तित्व और आपकी सफलता में भाषण कला का बहुत योगदान रहता है । अच्छा वक्ता ही सफल होता है ।

कहते भी हैं कि बोलने वाले का गुड़ बिक जाता है और गूंगे का गुड़ कितना ही अच्छा हो, आख़िरकार ख़राब हो ही जाता है । बोलना सीखना और भाषण देना बहुत कठिन कार्य नहीं है । थोड़े से प्रयास से ही यह हासिल किया जा सकता है । आप सोच रहे होंगे कि बोलना सीखने का क्या मतलब ? तो नीचे पढ़े बोलने के तरीक़े...

बोलने के कई तरीक़े हैं

ऊंचे स्वर में बोलना, तेज़ी से बोलना, गुर्राते कर बोलना, धीरे-धीरे बोलना, गंभीर और संतुलित स्वर में बोलना, अत्यंत ही धीरे स्वर में बोलना, हंसते हुए बोलना, उदास होकर बोलना ।

कुछ लोगों के बीच बोलना या किसी एक व्यक्ति से ही बात करना बहुत महत्वपूर्ण विद्या है । बहुत से लोग होते हैं तो सिर्फ़ हां-हां करना ही जानते हैं और बहुत से लोग होते हैं जो सिर्फ़ न-न करना ही जानते हैं । बहुत से लोग ऐसे हैं जो बोलते ही नहीं हैं और उससे भी कहीं ज़्यादा लोग हमेशा बोलने के लिए आतुर रहते हैं । वे वाचाल क़िस्म के होते हैं । जिस तरह बोलना कठिन प्रक्रिया है उसी तरह किसी की बातों को धैर्यपूर्वक सुनना और समझना भी कठिन प्रक्रिया होती है । कुछ लोग सुनकर भी समझ नहीं पाते, कुछ लोग सुनते वक़्त अपना ध्यान कहीं और रखते हैं और कुछ लोग सुनने से पहले ही बोलने लगते हैं ।

पढ़ना, पढ़ाना और लिखना सीखें

पढ़ेंगे तभी तो पढ़ा पाएंगे और यह दोनों आता है तो लिखना भी सीखें । अपनी एक डायरी बनाएं और उसमें अपने मन के विचार लिखे या प्रतिदिन की गतिविधियां ही लिखें । हर तरह की किताबें पढ़ने का शौक़ होना चाहिए । किताबें ही जीवन की सच्ची साथी होती है जो हमें बहुत कुछ सीखाती है । किताबों से बहुत कुछ सीखने को मिलता है । पढ़ने और पढ़ाने से जीवन में बहुत सीख मिलती है ।

आप भले ही टीचर न बनना चाहते हों, लेकिन आपको आपके बच्चों या अन्य किसी को शिक्षा देने के लिए यह सीखना चाहिए । आपका अनुभव महत्वपूर्ण है उससे दूसरों में बांटेंगे ही समाज में बौद्धिक विकास का स्तर बढ़ेगा । किसी को पढ़ाना भी एक कला है । हो सकता है कि आपके आप अपने पुत्र या पुत्री को पढ़ाने या उनको कुछ सीखाने का समय नहीं हो लेकिन आप अपने पोते या पोती को तो पढ़ाएंगे ज़रूर । इसलिए सोच लें यदि किसी को भी नहीं पढ़ा पाये तो पछताएंगे ।

सीखें नयी तकनीक

बहुत से लोगों को कंप्यूटर, मोबाइल, वॉशिंग मशीन या टी०वी० का रिमोट ही नहीं चलाना आता है । हालांकि कुछ ऐसी चीज़ें होती है जो लोग ख़ुद आगे रहकर नहीं सीखना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं कि यह घर में उपलब्ध ही है तो कभी भी सीख जाएंगे ।

लेकिन कभी-कभी ऐसी वस्तुएं हाथ लग जाती है जिनको चलाने के बारे में आप सोच भी नहीं सकते, यदि आपको छोटी-मोटी चीज़ें संचालित करना नहीं याद है तो । मान लो उदाहरणार्थ कि आपने कभी सामान्य मोबाइल अच्छे से चलाना नहीं सीखा है तो आप स्मार्ट फ़ोन की स्क्रीन ही देखते रहेंगे उसे टच करने की हिम्मत भी नहीं करेंगे ।

सोचना सीखना

आप सोच रहे होंगे कि सोचना या विचार करना सीखने की क्या ज़रूरत ? यह तो आदमी बचपन से ही करता आया है और इसमें सीखने जैसा क्या है ? दरअस्ल सोचना सबसे कठिन प्रक्रिया है । दरअस्ल, आप सोच तो आपकी पांचों इंद्रियों के मस्तिष्क पर पढ़ने वाले प्रभाव से उपजती है ।

सोचने के कई तरीक़े हैं उन पर अमल करना चाहिए । हमारे दो मस्तिष्क होते हैं पहला भाव मस्तिष्क और दूसरा गणितीय मस्तिष्क । बहुत से लोग बग़ैर सोचे समझे भावों में बहकर जो बोल देते हैं, वह भाव मस्तिष्क का ही परिणाम होता है ।

कुछ बनाना सीखें

यदि कुछ बनना है तो कुछ बनाना सीखें । अर्थात ऐसा कोई हुनर हासिल करें जो आपको रोज़गार दे सकता है । आजकल बहुत से लोग साफ्टवेयर या एप बनाते हैं तो कुछ लोग औषधि की खेती करना सीख रहे हैं ।

आप भी अपनी रुचि के अनुसार कोई ऐसा काम सीखें जो बाज़ार में प्रचलित हो और जिससे आप अच्छा कमा सकते हों । सिर्फ़ डिग्री नहीं हुनर या स्किल से ही आप नौकरी भी हासिल कर सकते हैं और अपना ख़ुद का रोज़गार भी पैदा कर सकते हैं ।



इस्लाम मानव-अधिकरों का रक्षक

● मुहम्मद इलियास हुसैन

इस्लाम मानवतापूर्ण और समतामूलक ईश्वरीय धर्म है । इसमें मानव-जीवन के हर क्षेत्र से संबंधित शिक्षा और रहनुमाई मौजूद है । यह मानव-अधिकार का रक्षक और सबसे बड़ा एवं प्रथम अलमबरदार है । इस्लाम के मानवतापूर्ण समतामूलक संदेश ने नस्लों, संप्रदायों और विभिन्न गरोहों में बंटे मानव समाज को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता यानी मानव-एकता का व्यावहारिक आदर्श प्रस्तुत कर दिया था । इससे पूरी दुनिया में एक अभूतपूर्व क्रान्ति पैदा हो गयी थी, मानवता की बहार आ गयी थी, मानवता के सुगंधित और मनोरम पुष्प खिल उठे थे । ईश्वरीय ग्रंथ पवित्र कुरआन मानव-अधिकार और न्याय व इन्साफ़ का घोषणापत्र है । इसने एक हिंसक और असभ्य दुनिया को अहिंसा और सभ्यता का पाठ पढ़ाया । इन्सान को शांति और सलामती की राह पर चलाया और शांति और सलामती का सही मतलब बताया । डॉ॰ मुहम्मद अहमद साहब ने इस्लाम और कुरआन की इन्हीं शिक्षाओं को 'मानवता और इस्लाम' नामक किताब में प्रस्तुत करने का सराहनीय और सफल प्रयास किया है । डॉ॰ मुहम्मद अहमद 'दो शब्द' में लिखते हैं, "मानव और मानवता को उच्चता प्रदान करना धर्म को अभीष्ट है और इसका श्रेय इस्लाम को प्राप्त है । इस्लाम मानव और मानवता के आरंभ से है । यह हज़रत आदम (अलैहि॰, प्रथम मानव) से आरंभ हुआ और पहले पैग़म्बर हज़रत आदम (अलैहि॰) बनाए गए । फिर अंत में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के द्वारा अंतिम रूप से परिष्कृत, समृद्ध एवं पूर्ण हुआ । मानवता पर इस्लाम के उपकार ही उपकार हैं, जिनकी गणना संभव नहीं । फिर भी कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों और तथ्यों पर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है ।" (पृ॰ 6)

इसमें कुल 19 लेख हैं–प्राचीन अरब और भारत (प्रो॰ बी॰ एन॰ पांडे), इस्लाम : स्वस्थ समाज का पक्षधर (जयकृष्ण मेहता), वर्तमान काला का नैतिक संकट और इस्लाम (डॉ॰ फ़ज़लुर्रहमान फ़रीदी), इस्लाम की रहमत (हमूदा अब्दल आती) अच्छे व्यवहार की शिक्षा (मौलनाना सैयद जलालुद्दीन उमरी), ब्याज से त्राण (प्रो॰ डॉ॰ ज़ियाउर्रहमान आज़मी), अहिंसा और इस्लाम (डॉ॰ मुहम्मद अहमद), इस्लाम कमज़ोरों के अधिकरों का रक्षक (डॉ॰ मुहम्मद रज़ीउल इस्लाम नदवी), इस्लाम में अम्न व शान्ति क संदेश (संकलित), जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण : इस्लाम की एक अनुपम देन (गुलज़ार सहराई), महिलाओं के साथ सद्व्यवहार और इस्लामी शिक्षाएं (ज़हीर ललितपुरी), देहज़ प्रथा के अंत का आह्वान (संकलित), अंतराष्ट्रीय संबंध और इस्लाम की शिक्षाएं (मुशर्रफ़ अली), मानव-सेवा का इस्लामी दृष्टिकोण (संकलित), मानवाधिकार का प्रवर्तक : इस्लाम (अहमुल्लह क़ासिमी), अन्य धर्मों के प्रति इस्लाम (अबरार अहमद), न्याय की जीती-जागती मिसालें (संकलित), नशाख़ोरी के विरुद्ध है इस्लामी शिक्षाएं (मौलाना अबूल लैस इस्लाही नदबी) और ख़ूबसूरत विचारों का गुलदस्ता है : इस्लाम (शशिप्रभा शर्मा)।

इन शीर्षकों पर नज़र दौड़ाने से मालूम होता है कि विभिन्न लेखकों ने मानव-जीवन से संबंधित विभिन्न उपयोगी और ज्वलन्त विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है और क्या ख़ूब चलाई है । इन बहुरंगी और बहुआयामी लेखों में इस्लाम की मानवोपयोगी और सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय शिक्षाओं को देखा जा सकता है ।

'प्राचीन अरब और भारत' में प्रो॰ बी॰ एन॰ पांडे ने विश्वप्रसिद्ध इतिहास-लेखक और विचारक आरनॉल्ड का कथन उद्धृत किया है, जिसमें भारतवासियों के इस्लाम धर्म ग्रहण करने के बारे में लिखा गया है । आरनॉल्ड लिखते

पुस्तक : मानवता और इस्लाम
संकलक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद
(संपादक : कान्ति साप्ताहिक और मासिक)
पृष्ठ : 144
मूल्य : ₹ 80.00
प्रकाशक : एम॰ एम॰ आई॰ पब्लिशर्स, नई दिल्ली-25
फ़ोन : 011-26981652, 23987858

हैं, 'इनमें से अधिकांश लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपनी स्वतंत्र इच्छा से इस्लाम स्वीकार किया।' टाउसेंट कहते हैं, "इन तमाम मुसलमानों में से 90 फ़ीसदी में भरतीय रक्त है, वे इस देश के वैसे ही भारतीय नागरिक हैं जैसे हिन्दू।"

प्रो॰ पांडे लिखते हैं, "ज़ैनुल आबिदीन, शेरशाह सूरी, बाबर, अकबर, जहांगीर, औरंगज़ेब ही नहीं, बल्कि अधिकांश मुसलमान शासकों के पचासों फ़रमान और आज्ञाएं इस विषय की नक़ल की जा सकती हैं जिनसे मालूम होता है कि वे अपनी हिन्दू और मुसलमान प्रजा को एक दृष्टि से देखते थे और राज्य-शासन में किसी तरह का धार्मिक दख़ल अपने लिए हितकर न समझते थे।" (पृ॰ 14)

तात्पर्य यह कि इस किताब में 19 लेखकों ने इस्लाम को सर्वरोग-निवारक औषधि के रूप में प्रस्तुत किया है। इस्लाम के पास हर रोग का मानवतापूर्ण और प्रभावकारी इलाज मौजूद है। लेकिन इस्लाम को इस्लाम वाले इसके वास्तविक स्वरूप में पेश नहीं कर पा रहे हैं। इसके ख़िलाफ़ भ्रम और अफ़वाह फैलाने वाले काफ़ी ज़ोरदार ढंग से अपने काम में लगे हैं।

जो हथियारों का सबसे बड़ा सौदागर है, वह सबसे ज़ोरदार आवाज़ में शांति-शांति चिल्ला रहा है, हालांकि दुनिया अच्छी तरह जानती है कि अशान्ति का सबसे बड़ा जनक भी वही है। वर्चस्ववादी शक्तियां अपने पालतू छद्मवेशियों द्वारा आतंकी हमले करवाकर 'हथियार मंडी' का निर्माण करवाती हैं और हथियार का व्यापार चलाती है। ऐसे घुप्प अंधेरे में 'मानवता और इस्लाम' शीर्षक यह किताब प्रकाश का काम करेगी। इससे इस्लाम के ख़िलाफ़ फैले बहुत-से भ्रमों, अफ़वाहों और सन्देहों के बादल छटेंगे। इस प्रकार यह किताब अपने विषय की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण तो है ही, इसका आवरण पृष्ठ, छपाई और काग़ज़ भी अच्छा है।

कविता

शराब-ख़राब

जिसमें तुम्हें मज़ा मिलता है,
बन्धु ! 'सज़ा' सज़ा हो जानो।
शराब-ख़राब लत-परिचायक, सेहत वैरी मानो ॥
इस शराब से तन बर्बादी, धन का करना नाश रे।
इस शराब का साथ छोड़ दो, यह तो खड़ा विनाश रे ॥
घर में झगड़े यह करवाती,
मन में जगे मुटाव रे।
बुद्धि-भ्रष्ट मझधार ज़िन्दगी,
फंसी तुम्हारी नाव रे ॥
गिरो नहीं तुम पतन गर्त में,
अपने को पहचानो।
शराब-ख़राब लत-परिचायक,
सेहत वैरी मानो ॥
अनपढ़ बच्चे, भूखी नारी,
उजड़ा घर-परिवार रे।
सकल कमाई पीकर होते, मोहताज बेज़ार रे ॥
पहले फोकट में यह मिलती,
पीछे लगते दाम रे।
संगी-साथी लत-बिगाड़ते,
पिला-पिला कर जाम रे ॥
माता-पिता बहुत चिंतित हैं,
पीना छोड़ो ठानो।
शराब-ख़राब लत-परिचायक,
सेहत वैरी मानो ॥
गये पढ़ाई करने बच्चे,
सेहत किया बेहाल रे।
बना नशेड़ी बेटा आया,
बनकर घर का काल रे ॥
इज़्ज़त लेती, साख मिटाती,
दुश्मन बना समाज रे।
तुम्हीं देश के रखवाले हो,
तुम भविष्य हो नाज़ रे ॥
अब संकल्प करो मन में
मज़बूत इरादा ठानो।
शराब-ख़राब लत-परिचायक, सेहत वैरी मानो ॥

ओमप्रकाश बजाज

हाशिम अमला और इमरान ताहिर दक्षिण अफ़्रीक़ा की टीम के स्तंभ

■ ए॰ एन॰ शिब्ली

भारत समेत दुनिया की दूसरी टीमों में भी जब भी मुस्लिम खिलाड़ियों को मौक़ा मिला उन्होंने अपने शानदार खेल से न सिर्फ़ अपना नाम रोशन किया बल्कि अपनी टीम को कई ऐतिहासिक सफलताएं दिलायी । पिछले दिनों एक



मैच के दौरान दक्षिण अफ़्रीक़ी टीम में पांच मुस्लिम खिलाड़ी खेले । वैसे तो हर खिलाड़ी अपने-अपने तौर पर बेहतर खेल पेश कर ही रहा है । गत दिनों एक मैच के दौरान हाशिम अमला और इमरान ताहिर दोनों एक साथ कई रिकार्ड बना दिये । ख़ास बात यह है कि यह दोनों ही खिलाड़ी बहुत ही धार्मिक भी हैं । इन दोनों की यह कोशिश रहती है की नमाज़ न छूटे ।

गत दिनों त्रिकोणीय सीरीज़ में खेलते हुए वेस्टइंडीज़ के ख़िलाफ़ एक मैच में इन दोनों ने कमाल का प्रदर्शन किया और अपनी टीम को 139 रन से शानदार जीत दिला दी । इस मैच में जहां अमला ने शतक बनाया वहीं इमरान ताहिर ने 7 विकेट लिए ।

साउथ अफ़्रीक़ा ने अमला के 99 गेंद में 13 चौकों की

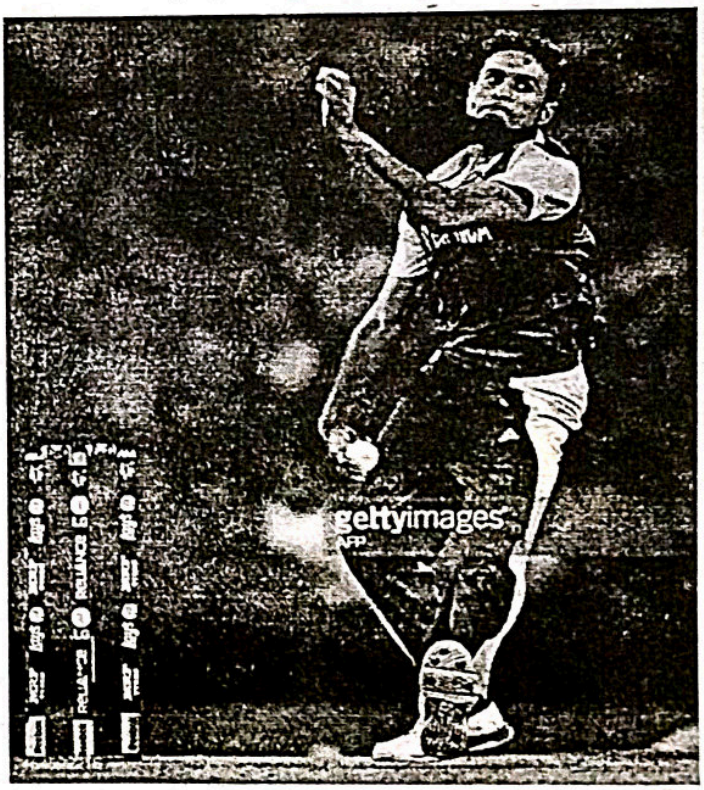

मदद से बनाए 110 रन की बदौलत 4 विकेट पर 343 रन बनाए, जवाब में कैरेबियाई टीम 38 ओवर में 204 रन पर आउट हो गयी । ताहिर ने नौ ओवर में 45 रन देकर सात विकेट लिये जो वनडे क्रिकेट के इतिहास में किसी साउथ अफ़्रीक़ी गेंदबाज़ का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है ।

अमला ने भी अपनी शतकीय पारी में कई बड़े रिकार्ड अपने नाम कर लिए । वनडे क्रिकेट में अमला का ये 23वां शतक था । शतकों के मामले में अब वो सातवें नम्बर पर

पहुंच गये हैं जबकि अपने देश के लिए सबसे अधिक शतक लगाने वाले दूसरे बल्लेबाज़ बन गये । साउथ अफ़्रीक़ा के लिए सबसे अधिक शतक एबी डिविलियर्स (24) ने बनाए हैं ।

अपने 23वें शतक के साथ ही अमला ने विराट कोहली का रिकार्ड तोड़ दिया है । अमला को 23 शतक के लिए 132 पारी खेलनी पड़ी जबकि विश्व के बेहतरीन बल्लेबाज़ विराट कोहली ने 157 पारी खेली थी । सातवें शतक से 23 शतक तक अमला अब सबसे तेज़ बल्लेबाज़ बन गये हैं । अमला ने 14 पारी के बाद वेस्टइंडीज़ के ख़िलाफ़ 1000 रन बना लिए जो किसी भी विरोधी टीम के लिए किसी भी बल्लेबाज़ का सबसे तेज़ 1000 रन है । इससे पहले 15 पारी में विव रिचर्ड्स ने इंग्लैंड के ख़िलाफ़ 1000 रन बनाए थे ।

वेस्टइंडीज़ की धरती पर अमला अब तीन शतक लगा चुके हैं और ऐसा करने वाले वो विश्व के दूसरे बल्लेबाज़ हैं । उनसे पहले आस्ट्रेलिया के मैथ्यू हेडन ने 16 पारी में 3 शतक लगाए थे । वहीं अमला ने 9 पारी में ये कमाल कर दिखाया है ।

इमरान ताहिर की बात करें तो वह दक्षिण अफ़्रीक़ा की ओर से एकदिवसीय मैचों की एक पारी में सात विकेट लेने वाले पहले और एकमात्र गेंदबाज़ हैं । इससे पहले अफ़्रीक़ा की ओर से सबसे अच्छी गेंदबाज़ी का रिकार्ड कैगियो रबाडा के नाम था । उन्होंने बंगलादेश के ख़िलाफ़ यह कमाल किया था । ताहिर विश्व के सिर्फ़ तीसरे ऐसे स्पिन गेंदबाज़ हैं जिन्होंने एक पारी में सात विकेट लेने का कमाल किया है । उनसे पहले ऐसा शाहिद अफ़रीदी और मुथैया मुरलीध रन कर चुके हैं । वैसे अब तक कुल मिलाकर एकदिवसीय क्रिकेट में दस बार ऐसा हुआ है जब किसी गेंदबाज़ ने सात विके हासिल किये हों ।

31 मार्च 1983 को पैदा होने वाले हाशिम अमला की गिनती विश्व के बेहतरीन बल्लेबाज़ों में होती है । वह अब तक टेस्ट और एकदिवसीय मैचों में कई रिकार्ड बना चुके हैं । अमला अफ़्रीक़ा की ओर से क्रिकेट में तेहरा शतक बनाने वाले सबसे पहले और एकमात्र बल्लेबाज़ हैं । उन्होंने 2012 में इंग्लैंड के ख़िलाफ़ 312 रन बनाए थे । एकदिवसीय क्रिकेट में भी उन्होंने कई रिकार्ड बनाए हैं । विश्व में सबसे तेज़ यानी सबसे कम मैचों में 2000, 3000, 4000 और 5000 रन पूरे करने का रिकार्ड अमला के ही नाम है । वह दुनिया के सिर्फ़ चौथे ऐसे बल्लेबाज़ हैं जिन्होंने टेस्ट खेलने वाले सभी देशों के ख़िलाफ़ शतक लगाया है । 2003 में हाशिम अमला को विज़डन क्रिकेटर ऑफ़ द ईयर का पुरस्कार मिला । इस पंक्ति के लिखे जाने तक अमला ने 92 टेस्ट खेले थे जिनमें 25 शतक और 29 अर्धशतकों की सहायता से उन्होंने 7358 रन बनाए थे । एकदिवसीय क्रिकेट की बात करें तो उन्होंने अब तक 135 मैच खेले हैं जिनमें उन्होंने 23 शतक और 30 अर्धशतकों की मदद से 6429 रन बनाए हैं । टी-20 मैचों में अमला ने 37 मैचों में 1008 रन बनाए हैं ।

27 मार्च 1979 को लाहौर में पैदा होने वाले इमरान ताहिर दुनिया की कई क्लब टीमों की तरफ़ से खेल चुके हैं । अब तक उन्होंने 20 टेस्ट खेले हैं जिनमें 57 विकेट हासिल की हैं । वह दो बार एक पारी में 5 या उससे अधिक विकेट ले चुके हैं । एकदिवसीय मैचों की बात करें तो यहां वह अब तक 58 मैचों में 105 विकेट हासिल कर चुके हैं । दक्षिण अफ़्रीक़ा की ओर से उन्होंने सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज़ों का रिकार्ड तो बना ही दिया है आशा है आने वाले दिनों में वह और बेहतर खेल पेश करेंगे और टीम को लाभ पहुंचाएंगे ।

ग़ज़ल

लब पर हंसी नयन में है नीर याद रिखयो
ऐ इश्क़, तू ये अपनी तस्वीर याद रखियो

मेरी हथेलियों पर कुछ खींच कर लकीरें
उसने कहा, ये मेरी तहरीर याद रखियो

सिक्कों की ये खनक जो तुमको नचा रही है
घुंघरू की शक्ल में है ज़ंजीर याद रखियो

ज़ालिम के सामने तू सर तो उठा रहा है
ज़ालिम के हाथ में है शमशीर याद रखियो

घबरा के ऐ 'कुंअर' तू हिम्मत न हार जाना
तदबीर ही बनेगी तक़दीर याद रखियो ।

कुंअर बेचैन
ग़ाज़ियाबाद, उ०प्र०

ख़त्म हो भ्रूण हत्याओं का सिलसिला

■ राखी बंसल
सेक्टर-77, नोएडा (उ०प्र०)

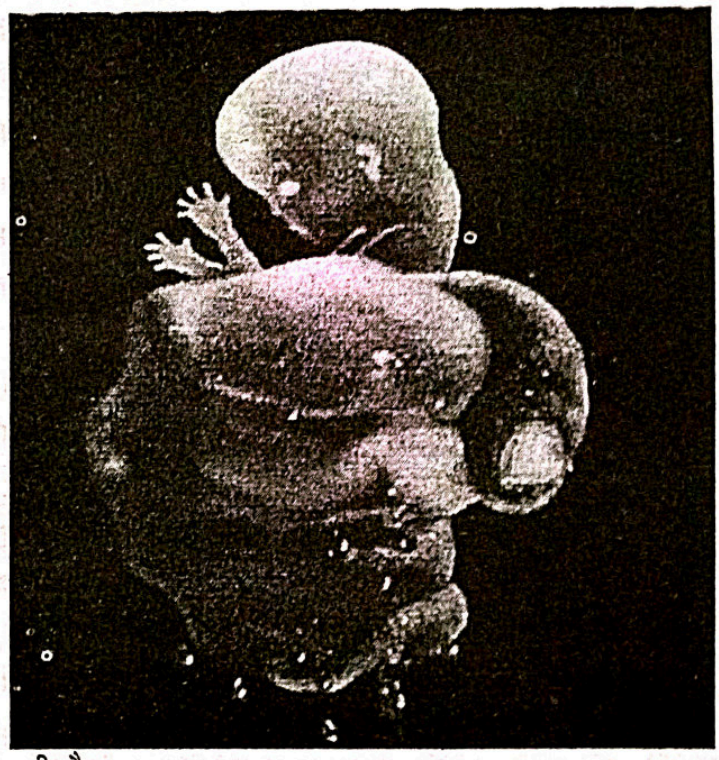

कहते हैं कि आज का युग विज्ञानिक युग है । विज्ञान के क्षेत्र में हुई नये-नये खोजों के आधार पर हम विकास के नये-नये शिखरों पर आरोहण कर रहे हैं । हम सब अपने आपको इस वैज्ञानिक युग के विकासशील नागरिक मानकर गौरव की अनुभूति कर रहे हैं । जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान की अभिन्न सहयोगिता को अस्वीकारा नहीं जा सकता, लेकिन इसका एक और पहलू यह भी है कि वैज्ञानिक विकास के नाम पर आज दुनिया का हर शख़्स भौतिकता की अंतहीन आंधी दौड़ में शामिल है । उसे इस बात का एहसास तक नहीं कि वह जो कर रहा है, वह उचित है अथवा अनुचित या फिर वह अपने आपको विकास की उस पराकाष्ठा पर होने की भ्रांति पाले हुए है जहां पहुंचकर हर व्यक्ति ही सोचता है कि जो वह कर रहा है, वही उचित है, श्रेयस्कर है । तभी तो चारों तरफ़ हिंसा, हत्या और आतंकवाद का बोलबाला नज़र आ रहा है । मनुष्य का जीवन निरंतर ख़ूनी भाव-शून्य होता जा रहा है ।

लेकिन सबसे अधिक आश्चर्य और दुख की बात यह है कि नारी जो सदा स्वभाव से करुणा की प्रतिमूर्ति रही है । स्नेह, सहानुभूति और सहनशीलता, जिसके वास्तविक आभूषण रहे है, वह भी हिंसा और हत्या से परिलिप्त होती दिखायी दे रही है । हत्या भी किसी ग़ैर की नहीं बल्कि स्वयं अपने ही ख़ून की, अपनी ही संतान की, ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक विकास के इस क्रम ने नारी को भी करुणा और कोमलता की प्रतिमूर्ति बनाकर रख दिया है । दिन दुगुनी-रात चौगुनी बढ़ती हुई भ्रूण-हत्याओं की दर इस बात की साक्षी है लिंग परीक्षण के आधार पर भ्रूण हत्या की आज बहुतायत है, जिसे देखकर यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि क्या सचमुच ममता और वात्सल्य के सारे स्रोत नारी आंचल से सूख रहे हैं ? यक़ीनन ऐसा ही हो रहा है, तभी तो वह भ्रूण हत्या जैसे घोर अमानवीय कार्य में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होकर अपनी ही क़ौम पर नृशंस प्रहार किये जा रही है ।

यूं ही लड़की का जन्म भारतीय समाज में आरंभ से ही हेय माना जाता रहा है । पुत्र प्राप्ति पर जहां चारों ओर खुशियों की बहार छा जाती है, वहीं पुत्री होने पर मातम-सा छा जाता है । कुछ बुद्धिजीवी लोगों का कहना है कि आज वैसी पुरानी परंपरा नहीं है, लेकिन मेरा नज़रिया तो कहता है कि आज हालात पहले से भी बदतर हो गये हैं । पहले के लोग भ्रूण परीक्षण जैसी पद्धति से परिचित नहीं थे । अत: अफ़सोस होने पर लड़कियों को जन्म लेने का अधिकार तो कम से कम था ही, लेकिन आज तो भ्रूण परीक्षण कराकर अनचाही संतान का सरेआम क़त्ल कर दिया जाता है । इस धरा पर पांव रखने से पहले उनका अंत कर दिया जाता है । आजकल नारी-पुरुष समानता के नारे तो चारों तरफ़ सुनने को मिलते हैं, लेकिन यथार्थ की ज़िन्दगी में इनकी सच्चाई पर ध्यान दें तो ऐसा प्रतीत होता है कि नारी सिर्फ़ बैनरों की सुशोभित करने के लिए ही होते हैं, क्योंकि वास्तव में अगर स्त्री-पुरुष को समानता का दर्जा हम दे देते हैं तो भ्रूण हत्या जैसे अमानवीय कार्य होने का प्रश्न ही कहां

रह जाता है, क्योंकि भ्रूण परीक्षण के बाद भ्रूण हत्या हमेशा लड़की होने पर ही की जाती है ।

इससे जुड़ी हुई सबसे बड़ी विडंबना यह है कि भ्रूण हत्या के प्रसंग में पुरुष से कहीं अधिक नारी को ही ज़िम्मेदार ठहराया जा रहा है । सच भी यही है, क्योंकि लड़की के जन्म होने पर अधिकांश घरों में औरतों को ही अधिक दुखी और चिंतित देखा जाता है । समझ में नहीं आता कि लड़की अपने जन्म के साथ ही ऐसी कौन-सी क़र्ज़दारी अपने साथ लाती है और लड़का कौन-सा ऐसा ख़ज़ाना अपने साथ लाता है कि भ्रूण परीक्षण के द्वारा भ्रूण हत्या के माध्यम से नारी जाति पर ही क़ातिलाना प्रहार किया जा रहा है ।

एक बात मेरे मस्तिष्क में बार-बार उठती है कि लड़की होने पर हमारे मातृत्व सुख में कमी क्यों आ जाती है ? क्या लड़की संतान नहीं हैं ? क्या वह अपनी किलकारियों से हमारे सूने घर में बहार लाने में असक्षम है ? या फिर उसके तुतले मुंह से निकले हुए 'मां' शब्द में वह मिठास और अपनापन नहीं होता जो एक लड़के की बोली में होता है । जहां तक समझती हूं सब कुछ एक जैसा है । फ़र्क़ है तो सिर्फ़ हमारी नज़रों का, हमारे चिंतन की धारा का ।

कुछ लोगों की दलील है कि परिवार को नियोजित रखने, जनसंख्या को नियंत्रित रखने और मनचाही संतान प्राप्त करने के लिए भ्रूण हत्या की परंपरा वरदान साबित हुई है । कितना ग़लत है, उनके सोचने का नज़रिया क्योंकि जनसंख्या और परिवार संख्या को नियंत्रित रखने के लिए भ्रूण हत्या और नृशंस और क्रूर कार्य की नहीं बल्कि स्वयं अपने आप पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है । यह सच है कि आज की महंगी और व्यस्त दिनचर्या में हर दंपत्ति सीमित परिवार चाहते हैं । आज के महंगाई भरे दौर में अच्छी और उचित परवरिश के लिए दो संतान काफ़ी हैं । भले ही दोनों संतान पुत्रियां ही क्यों न हो । हमें अहमियत इस बात को नहीं देना चाहिए कि हमारी संतान लड़का है या लड़की बल्कि इस मुद्दे पर अपना ध्यान अधिक लगाना चाहिए कि हम अपनी संतान की परवरिश किस रूप में कर अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं ।

हमें अपनी संतान को सुसंस्कार और सुशिक्षा देकर आत्मनिर्भर बनाने का हरसंभव प्रयास करना चाहिए । अगर सही मार्गदर्शन और पोषण मिले, तो निश्चित रूप से हर बच्चे में यह प्रतिभा छिपी रहती है कि वह किसी न किसी क्षेत्र में अपनी एक पहचान बना सके । अत: लड़की होने पर चिंतित होने की जगह अगर हम अपनी बच्ची के गुणों को समझने की, उसे प्रोत्साहित करने की और अधिक ध्यान दें और उन्हें उभारकर निखारने में सहयोगी बनें तो निस्संदेह हमारी संतान हमारे सपनों को साकार आकार देने वाली होगी बशर्ते वह लड़की ही क्यों न हो ।

पाश्चात्स संस्कृति में रंगती हुई भारतीय जीवनशैली में अपनेपन की परिभाषाएं बदली-बदली सी नज़र आती है । तीन-चार पुत्रों वाले माता-पिता भी बूढ़े होने पर वृद्धाश्रमों में देखे जाते हैं । बहुत बार ऐसा अनुभव करने को मिला है कि मां न अकेले विकट परिस्थितियों में भी पांच संतानों की परवरिश की है, लेकिन उसी मां के बुढ़ापे का बोझ उन्हीं पांचों पुत्रों से मिलकर भी उठा पाना दुष्कर हो जाता है । मैं जब-जब ऐसा देखती हूं तो असमंजस्य में पड़ जाती हूं कि क्या यही है ख़ून के रिश्ते की मज़बूती । क्या ऐसे ही अपनेपन के बंधन के लिए हम भ्रूण हत्या कर अपने हाथों को रक्त रंजित करते हैं ?

अत: आवश्यकता अंधानुकरण करने की नहीं, बल्कि अनुकरण करने से पहले उचित और अनुचित का चिंतन करने की है । कम से कम नारी जैसी कोमल हृदय से तो यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह बिना सोचे-समझे अपने हिंसक प्रहार करने का ऐसा कठोर निर्णय लेकर नारी के इतिहास को भी बर्बर होने की उपमा दिलाये । लेख समाप्त करने से पहले मेरी बार-बार अपील है भारतीय नारी से कि कम से कम इस क्षेत्र में तो हमें दूसरों की नक़ल न कर स्वयं अपनी मंज़िल ढूंढ़कर एक मिसाल क़ायम करनी है कि अखिल विश्व के सामने लड़का पाने की चाह में बिना सोचे-समझे कन्या वध का जघन्य पाप अपने सिर पर लेने से कहीं अच्छा है कि जिसके जन्म पर ज़माना कांच का टुकड़ा समझ कर उसे नज़रों से उतार देता है, उसी लड़की को हम तराशकर ऐसा विलक्षण रूप दें कि वक़्त आने पर इसी समाज के सामने वह हीरे से अधिक अमूल्य निधि बनकर उभर सके । यक़ीनन इसी में सच्चा मातृत्व सुख समाहित है और यही नारी समाज के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है । हम जागें अवश्य, इस संदर्भ में अवश्य ठोस क़दम उठाएं ।

शताब्दियों पुराने हैं पद नाम

■ विद्या प्रकाश

समय, परिस्थिति तथा आवश्यकता के अनुसार किसी भी भाषा में नये-नये शब्दों की उत्पत्ति होती रहती है तथा उनके प्रयोग का दायरा बढ़ता जाता है, जबकि कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो रूढ़ हो जाया करते हैं तथा परिस्थितियों एवं आवश्यकता में परिवर्तन हो जाने के बावजूद उन पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ता । हिन्दी भाषा में आज भी तीन दर्जन से अधिक ऐसे पद नाम विभिन्न सरकारी कार्यालयों में प्रचलित हैं, जो शताब्दियों पुराने हैं तथा मुग़ल काल और ब्रिटिश काल से हम उनका अपरिवर्तित रूप में यथानुरूप प्रयोग करते चले आ रहे हैं ।

देश की स्वतंत्रता के बाद हमने इक्कीसवीं सदी में प्रवेश किया । इस दौरान अनेक पुराने परंपरागत पद नामों को बदल दिया गया तथा अनेक नवीन पद नाम सृजित किये गये मगर उक्त मुग़लकालीन तथा ब्रिटिशकालीन पदनामों में परिवर्तन नहीं आया ।

कलेक्ट्रेट के प्रमुख पदों में एक पद 'नाज़िर' है जिसके कंधे पर कलेक्ट्रेट प्रशासन की व्यवस्था का संपूर्ण दायित्व होता है । प्राइवेट कंपनियां इस प्रकार का कार्य करने वालों के लिए 'मैनेजर' पद नाम प्रचलित हैं । इसी प्रकार कलेक्ट्रेट में 'पेशकार' (मुक़दमों में पेशी से संबंधित कार्य), बस्ताबरदार (फाइलों के बंडल को उतारना, रखना, सहेजना तथा अन्य संबंधित कार्य), अहलमद (मुक़दमा संबंधी फाइलों का रख-रखाव), नक़ल नवीस (प्रतिलिपिकार) वग़ैरह पद नाम प्रचलित हैं जो मुग़लकालीन हैं ।

इसी प्रकार ख़ानसामा (भोजन संबंधी कार्य की ज़िम्मेदारी), वसीक़ानवीस, मुहर्रिर, अर्दली (शुद्ध शब्द आर्डरली), नक़्शा नवीस (ड्राफ्टमैन) तथा दरख़्वास्तनवीस जैसे अनेक पुराने शब्द कलेक्ट्रेट तहसील तथा दीवानी न्यायालय में प्रचलन में हैं । इसी प्रकार आर०ए० (रेवन्यू असिस्टेंट), इ०आर०के० (इंग्लिश रिकार्ड कीपर), आर०आर०के० (रेवन्यू रिकार्ड कीपर) तथा जे०आर०के० (ज्यूडिशियल रिकार्ड कीपर) सरीखे अनेकानेक शब्द ऐसे हैं जो ब्रिटिशकालीन हैं तथा उनका देश के अनेक भागों में एक शताब्दी से अधिक समय से सरकारी कार्यालयों में हूबहू प्रचलन है ।

चटनी का इतिहास

भोजन के साथ खायी जाने वाली चटनी का इतिहास अत्यंत प्राचीन है । बारहवीं शताब्दी में भारत आये अरब यात्री इब्ने बतूता के यात्रा वृत्तांत में चटनी का उल्लेख मिलता है । उन्होंने ख़ासतौर से कच्चे आम की चटनी को काफ़ी ज़ायक़ेदार बताया था । बताया जाता है कि मुग़लों के शासनकाल में भी चटनी खान-पान का मुख्य हिस्सा रही है ।

इसके बाद सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में जब फ्रांस के दूत भारतीय राजदरबारों में अपने साथ सांस लाये, तब चटनी नये ढंग से प्रचलन में आयी । पश्चिमी देशों में चीनी, फल तथा सिरके के इस्तेमाल से बनायी जाने वाली सॉस काफ़ी हद तक परंपरागत भारतीय चटनी का आधुनिक रूप थी ।

शताब्दियां व्यतीत हो जाने के बावजूद आज तक चटनी अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग स्वादों तथा रूपों में अपनी लोकप्रियता क़ायम रखे हुए है । उदाहरणस्वरूप राजस्थान में लहसुन की चटनी लोकप्रिय है तो बिहार तथा यू०पी० में कच्चे आम की चटनी । लोग हिमाचल प्रदेश में अमरूद तो असम में हरे पालक की चटनी भोजन के साथ चाव से खाना पसन्द करते हैं । आजकल अमरूद, आंवला, करौंदा, टमाटर, अमचुर, पालक, चना दाल, धनिया तथा पुदीना की चटनी का चलन है जिसे सिल बट्टे या मिक्सी की सहायता से खट्टे, मीठे और तीते के अलग-अलग स्वाद में बनाया तथा तैयार किया जाता है । ग़रीब मज़दूर की झोपड़ी से लेकर धनाढ्य लोगों के डाइनिंग टेबल तथा फाइव स्टार होटलों के बावर्चीख़ाना तक समान रूप से अपनी पैठ बना चुकी चटनी की लोकप्रियता में आज तक किसी प्रकार से गिरावट नहीं आयी है ।

● विद्या प्रकाश

करप्शन

ये चिंता नहीं चिताएं हैं
देश में अनेक समस्याएं हैं
जिसका मुंह काला और कैरेक्टर है ढीला-ढाला,
हर तरफ़ है उस करप्शन का बोल-बाला
जिसने देश का निकाला है दिवाला
सिस्टम को है हिला डाला
छीना जिसने मुंह से निवाला
ग़रीबों को उनके घर से निकाला
हर तरफ़ है उस करप्शन का बोल-बाला
बर्थ या डेथ सर्टिफिकेट हो बनवाना
तो पड़ता है दाम चुकाना
दफ़्तर में चाहिए प्रमोशन या स्कूलों में एडमीशन
तो देनी होगी डोनेशन
अस्पताल हो या शमशान हर जगह है कमीशन
बैंको से चाहिए लोन या लगाना हो टेलीफोन
बचा करप्शन से है कौन
खेलों में है फिक्सिंग
और रेलों में टिकटिंग
हर जगह है सेटिंग
एग्जामिनेशन हो या इलेक्शन
हर तरफ़ है करप्शन
डाला है इसने गले में फंदा
जिससे परेशान है हर बन्दा
जिसने जीवन में ज़हर घोल डाला
निकाला है सब का दिवाला
हर तरफ़ है उस करप्शन का बोल-बाला
जिसने समाज का बेड़ा ग़र्क़ कर डाला
पर हमी ने है उसे पला
हर तरफ़ है उस करप्शन का बोल-बाला

+मुहम्मद जुनैद अहमद

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित। · फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।



Asian Optics
a multibrand showroom
SNP Area, Sakchi, Jsr.
2221184
Main Road, Golmuri, Jsr.
2341175

بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।"

(क़ुरआन)

A Well Wishers

Ripan Street, Tramways Depots,
Near Nona Pukur, Kolkata

Posted on 20-21 July 2016
August 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.07.2016
Total Pages-52 (With Covers)

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

